अव्यक्त वाणी

31 दिसम्बर 1996 से 30 मार्च 1998 तक की
वाणियों का संग्रह

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय,
पाण्डव भवन, माउण्ट आबू, (राजस्थान)

अव्यक्त शिवबाबा और ब्रह्मा बाबा ने ब्रह्माकुमारी हृदयमोहिनी जी के माध्यम से ब्रह्मा-वत्सों के सम्मुख जो कल्याणकारी महावाक्य उच्चारण किये। यह पुस्तक उनका संकलन है।

प्रकाशक :
प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय
माउण्ट आबू (राजस्थान)

मुद्रक :
ओम् शान्ति प्रेस,
शान्तिवन, आबू रोड (राजस्थान)
☎ 22678, 23339

अमृत-सूची

१. नये वर्ष में अनुभवी मूर्त्त बन
सबको अनुभवी बनाओ (३१.१२.९६) ४
२. अपनी सूरत से बाप की सीरत को प्रत्यक्ष करो
तब प्रत्यक्षता का नगाड़ा बजेगा। (१८.१.९७) १६
३. साथी को साथ रख साक्षी और
खुशनुम: के तख्तनशीन बनो (२३.२.९७) २७
४. शिव जयन्ति की गिफ्ट – मेहनत को छोड़
मुहब्बत के झूले में झूलो (६.३.९७)..................... ३७
५. पुराने संस्कारों को खत्म कर
अपने निजी संस्कार धारण करो (३.४.९७)............... ४९
६. संगमयुग के प्राप्तियों की प्रालब्ध का अनुभव करो,
मास्टर दाता, महा सहयोगी बनो (१३.११.९७) ६३
७. बेहद की सेवा का साधन – रूहानी पर्सनैलिटी द्वारा
नज़र से निहाल करना (२८.११.९७)..................... ७०
८. व्यर्थ और निगेटिव को अवाइड कर
अवार्ड लेने के पात्र बनो (१४.१२.९७) ८०
९. इस नये वर्ष को मुक्ति वर्ष मनाओ,
सफल करो सफलता लो (३१.१२.९७) ९०
१०. सकाश देने की सेवा करने के लिए लगाव
मुक्त बन बेहद के वैरागी बनो (१८.१.९८) ९९
११. पास विद् ऑनर बनने के लिए हर खज़ाने का
एकाउण्ट चेक करके जमा करो (३१.१.९८) १०८
१२. बाप से, सेवा से और परिवार से मुहब्बत रखो
तो मेहनत से छूट जायेंगे (२४.२.९८) १२३
१३. होली शब्द के अर्थ स्वरूप में स्थित होना
अर्थात् बाप समान बनना (१३.३.९८).................. १३०
१४. सर्व प्राप्तियों की स्मृति इमर्ज कर अचल स्थिति
का अनुभव करो और जीवनमुक्त बनो। (३०.३.९८) १४१

31-12-96

नये वर्ष में अनुभवी मूर्त बन, सबको अनुभवी बनाओ

(शान्तिवन डायमण्ड जुबली हाल के उद्घाटन अवसर पर)

आज नज़र से निहाल करने वाले बापदादा आप सभी अति स्नेही, सहयोगी, स्नेह में लवलीन बच्चों को देख रहे हैं। हर एक बच्चे के मस्तक में, दिल में स्नेह का सबूत दिखाई दे रहा है। (हाल में पीछे वाले भाई बहिनों से) आप सोचेंगे कि हम पीछे वाले तो दिखाई नहीं देते हैं लेकिन बापदादा के नयनों में ऐसी अनोखी टी.वी. है जिससे दूर की चीज भी सामने दिखाई दे रही है। चाहे कहाँ भी कोने में बैठे हो लेकिन बाप के सामने हो। अभी तो फिर भी आराम से बैठे तो हो ना। (तालियां बजाई) आज बहुत उमंग-उत्साह और खुशी है ना तो तालियों से दिखा रहे हैं। लेकिन बापदादा आपके दिल की खुशी को जानते हैं। बापदादा देख रहे हैं कि हर एक बच्चे को सहयोग का सबूत देने में बहुत खुशी होती है इसलिए हजारों भुजायें दिखाई हैं। तो भुजायें सहयोग की निशानी हैं। बापदादा जानते हैं एक-एक बच्चे ने चारों ओर चाहे देश में, चाहे विदेश में सभी ने चाहे धन से, चाहे मन से, चाहे तन से सहयोग अवश्य दिया है। और आज आप सबके सहयोग का सबूत आप आराम से बैठ देख भी रहे हो, सुन भी रहे हो। अभी ज्यादा ताली नहीं बजाओ। आपके खुशी की, मन की तालियां बापदादा के पास पहुंच गई हैं।

देखो आज दो विशेषतायें हैं। एक इस शान्तिवन को जो सभी ने उमंग-उत्साह से बनाया है उसका बापदादा के साथ-साथ आप बच्चे भी उद्घाटन कर रहे हैं और आज ड्रामानुसार नया वर्ष भी शुरू होने वाला ही है इसलिए बापदादा सभी बच्चों को अपनी दोनों बाहों में समाते हुए दोनों बातों की मुबारक दे रहे हैं। और जैसे अभी इस समय साकार रूप में बाप के साथ उमंग-उत्साह और खुशी में झूम रहे हो ऐसे ही नये वर्ष में सदा अव्यक्त रूप में साथी समझना, अनुभव करना – यह साथ का अनुभव बहुत प्यारा है। बापदादा को भी बच्चों के बिना अच्छा नहीं लगता है। (माइक बंद हो गया) पहला-पहला अनुभव है ना इसलिए यह भी ड्रामा में खेल समझना, कोई भी बात नीचे ऊपर नहीं समझना। अच्छा है और अच्छा ही रहेगा। बहुत अच्छा, बहुत अच्छा करते

आप भी अच्छे बन जायेंगे और ड्रामा की हर सीन भी अच्छी बन जायेगी क्योंकि आपके अच्छे बनने के वायब्रेशन कैसी भी सीन हो निगेटिव को पाजिटिव में बदल देगी, इतनी शक्ति आप बच्चों में है सिर्फ यूज़ करो। शक्तियां बहुत हैं, समय पर यूज़ करके देखो तो बहुत अच्छे-अच्छे अनुभव करेंगे।

यह नया हाल और नया वर्ष तो इसमें क्या करेंगे? नये वर्ष में कुछ नवीनता करेंगे ना। तो यह वर्ष अनुभवी मूर्त बन औरों को भी अनुभव कराने का वर्ष है। समझा – क्या करना है? अनुभव करना है। वाणी द्वारा वर्णन तो करते ही हो लेकिन हर बच्चे को हर शक्ति का, हर गुण का अनुभव करना है। अनुभवी मूर्त हो ना! अनुभवी मूर्त हो या वाणी मूर्त हो? अनुभवी हो भी लेकिन इस वर्ष में कोई भी ऐसा बच्चा नहीं कहे कि मुझे इन बातों का तो अनुभव है, लेकिन इस बात का अनुभव बहुत कम है। ऐसा कोई बच्चा न रहे क्योंकि ज्ञान का अर्थ ही है सिर्फ समझना नहीं लेकिन अनुभव करना और जब तक अनुभव नहीं किया है तो औरों को भी अनुभवी नहीं बना सकते। अगर वाणी तक है, अनुभव तक नहीं है तो जिन आत्माओं की सेवा के निमित्त बनते हो वह भी वाणी द्वारा बहुत अच्छा, बहुत अच्छा, कमाल है–यहाँ तक आते हैं। अनुभवी हो जाएं – वह कोटों में कोई, कोई में भी कोई हैं और प्रत्यक्षता का आधार अनुभव है। अनुभव वाली आत्मायें कभी भी वायुमण्डल वा संग के रंग में नहीं आ सकती हैं। सिर्फ वाणी के प्रभाव वाले कभी नाचेंगे और कभी सोच में पड़ जायेंगे, अनुभव अर्थात् पक्का फाउण्डेशन। आधा अनुभव है तो आधा फाउण्डेशन पक्का है, उसकी निशानी है वह छोटी बड़ी बातों में हिलेगा, अचल नहीं होगा क्योंकि आने वाली बातें वा समस्यायें प्रबल हो जाती हैं, इसलिए अधूरे फाउण्डेशन वाले लड़खड़ाते हैं, गिरते नहीं हैं लेकिन लड़खड़ाते हैं तो पहले इस वर्ष में अपने अनुभवी मूर्त के फाउण्डेशन को पक्का करो। कई बच्चे आज बहुत फास्ट चलते हैं और कल थोड़ा सा चेहरा बदला हुआ होता है, कारण? अनुभव का फाउण्डेशन पक्का नहीं है। अनुभव वाली आत्मायें कितनी भी बड़ी समस्या को ऐसे हल करेंगी जैसे कुछ हुआ ही नहीं। आया और अपना पार्ट बजाया लेकिन साक्षी होकर, न्यारे और प्यारे होकर खेल समान देखेंगे। बात नहीं खेल, मनोरंजन। मनोरंजन अच्छा लगता है ना? तो कोई भी बात हो, आप के

लिए बड़ी बात तब लगती है जब फाउण्डेशन जरा भी कच्चा है। चाहे 75 परसेन्ट पक्का है, चाहे 90 परसेन्ट पक्का है तो भी हिलने का चांस सम्भव है। बापदादा को बच्चों की मेहनत अर्थात् युद्ध करना अच्छा नहीं लगता। मेहनत क्यों? युद्ध क्यों? क्या योगी के बजाए योद्धे बनने वाले हो या योगी आत्मायें हो? युद्ध करने वाले संस्कार चन्द्रवंश में ले जायेंगे और योगी तू आत्मा के संस्कार सूर्यवंश में ले जायेंगे। तो क्या बनना है सूर्यवंशी या चन्द्रवंशी बनना है? सूर्यवंशी बनना है तो युद्ध खत्म। इस वर्ष में युद्ध खत्म हुई? इसमें हाँ नहीं कहते हो? कहने से कहते हो? बापदादा तो न देखते हुए भी बच्चों की रिजल्ट देख लेते हैं, हर समय की रिजल्ट नयनों के सामने नहीं लेकिन दिल में आ ही जाती है। यहाँ साकार वतन में जब आप थोड़ा-थोड़ा या बहुत हिलते हो तो बाप को वहाँ वतन में अनुभव होता है कि कोई हिल रहा है। इसलिए जैसे शान्तिवन की खुशी है, हाल की खुशी है ऐसे बापदादा और इतने बड़े संगठन के बीच यह वायदा करो कि इस वर्ष में हलचल से परे हो अचल-अडोल बनना ही है, बनेंगे नहीं, बनना ही है। ऐसे है? ऐसे जो समझते हैं बनना ही है, सोचेंगे, करेंगे, देखेंगे – यह नहीं, वह हाथ उठाओ। अच्छा–मुबारक हो और जिन्होंने किसी भी कारण से नहीं उठाया, ऐसे नहीं हो सकता कि नहीं बनेंगे लेकिन कोई कारण से नहीं उठाया हो तो वह उठाओ। शर्म आता है उठाने में, तो सोचो जब हाथ उठाने में शर्म आता है तो करने के टाइम भी शर्म करना। सोचना कि यह शर्म करने की बात है, तो नहीं होगी। पक्के हो जायेंगे क्योंकि कई बच्चे बार-बार पूछते हैं, चाहे निमित्त बच्चों से या रूहरिहान में बापदादा से एक ही क्वेश्चन करते हैं, बाबा विनाश की डेट बता दो। सभी का क्वेश्चन है ना? अच्छा बापदादा कहते हैं डेट बता देते हैं – चलो दो हज़ार में पूरा होगा तो क्या करेंगे? यह कोई डेट नहीं दे रहे हैं, मिसअन्डरस्टैण्ड नहीं करना। बापदादा पूछ रहे हैं कि समझो 2 हज़ार तक आपको बताते हैं तो क्या करेंगे? अलबेले बनेगे या तीव्र पुरुषार्थी बनेंगे? तीव्र पुरुषार्थी बनेंगे! और बापदादा कहते हैं कि इस वर्ष में हलचल होगी तो फिर क्या करेंगे? और तीव्र पुरुषार्थ कर लेंगे? या थोड़ा-थोड़ा डेट कानसेस हो जायेंगे, गिनती करते रहेंगे कि इतना समय पूरा हुआ, एक मास पूरा हुआ, एक वर्ष पूरा हुआ, बाकी इतने मास हैं! ..... तो डेट कानसेस बनेंगे या सोल कानसेस बनेंगे? क्या करेंगे? अलबेले नहीं बनेंगे? यह तो नहीं सोचेंगे

कि अभी तो 4 वर्ष पड़े हैं? क्या हुआ, लास्ट वर्ष में कर लेंगे – ऐसे अलबेले नहीं बनेंगे या थोड़ा-थोड़ा बन जायेंगे? आप नहीं भी बनेंगे तो माया सुन रही है, वह ऐसी बातें आपके आगे लायेगी जो अलबेलापन, आलस्य बीच-बीच में आयेगा, फिर क्या करेंगे? इसीलिए बापदादा ने पहले भी सुनाया है कि डेट कानसेस नहीं बनो लेकिन हर समय अन्तिम घड़ी है, इतना हर घड़ी में एवररेडी रहो। अच्छा मानों बापदादा कहते हैं 2 हजार के बाद होगा, चलो आपने मान लिया, रीयल नहीं है लेकिन मान लिया तो आप दो हजार में सम्पूर्ण बनेंगे और दूसरों को कब बनायेंगे? सतयुग में बनायेंगे क्या? बनाने वाले थोड़े हैं और बनने वाले बहुत हैं, उन्हों के लिए भी समय चाहिए या नहीं? अगली सीजन में भी पूछा था कि कम से कम सतयुग आदि के 9 लाख बने हैं? नहीं बने हैं तो विनाश कैसे हो? किस पर राज्य करेंगे? पुरानी आत्माओं के ऊपर राज्य करेंगे? नई आत्मायें तो तैयार हुई नहीं और विनाश हो जाए तो क्या करेंगे? इसलिए बापदादा ने यह काम अपने बच्चे जो ज्योतिषी हैं ना, उन्हों के ऊपर ही रखा है। जो ज्योतिषी कर सकते हैं, वह बाप क्यों करेगा! फिर भी बाप के बच्चे हैं, उन्हों को कमाने दो। उन्हों की कमाई का साधन यही है। अगर किसको बहुत जल्दी हो तो उन बच्चों से पूछो। बाप नहीं बतायेगा।

समझा – इस वर्ष क्या करना है? अनुभवी मूर्त। कई बच्चे रूहरिहान में बहुत ही मीठी-मीठी रूहरिहान करते, कहते हैं – क्या करें बाबा, इतना तो हो गया है, बाकी इतना आप कर लो। राज्य हम करेंगे लेकिन सम्पूर्ण आप बना दो। ऐसे होगा? बाप मददगार जरूर है और अन्त तक रहेंगे, यह गैरन्टी है लेकिन किसके मददगार? जो पहले हिम्मत का पांव आगे करते हैं, फिर बाप मदद का दूसरा पांव उठाने में सम्पूर्ण मदद करते हैं। हिम्मत का पांव उठाओ नहीं और सिर्फ कहो बाबा आप कर लो, बाबा आप कर लो। तो बापदादा भी कहेगा देखेंगे, पहले पांव तो रखो। एक पांव भी नहीं रखेंगे तो कैसे होगा! इसलिए इस वर्ष में हर समय यह चेक करो कि हिम्मत के पांव मजबूत हैं? बाप को कहने के पहले यह चेक करो। हिम्मत का पांव बढ़ाया और मदद नहीं मिले, यह असम्भव है। सिर्फ थोड़ा सा हिम्मत का पांव बढ़ाओ, इसीलिए गाया हुआ है पहला शब्द क्या आता है? हिम्मते बच्चे मददे बाप ,इसको उल्टा नहीं करो – मददे बाप और फिर हिम्मत बच्चों की। बाप तो मुस्कराते रहते हैं, वाह मेरे

लाड़ले बच्चे वाह! निश्चय से हिम्मत का पांव जरा भी आगे करेंगे तो बाप पदमगुणा मदद के लिए हर एक बच्चे के लिए हर समय तैयार है।

अच्छा - नये वर्ष में और क्या करेंगे? अभी तक सेवा की एक बात रही हुई है, कौन सी? गीता का भगवान तो हो जायेगा, लेकिन बापदादा ने अगले वर्ष हर ज़ोन को कहा था कि स्नेही, सहयोगी, सम्पर्क वाले तो बहुत बने हैं और बनेंगे लेकिन अभी वारिस निकालो। वारिस कम निकालते हैं क्योंकि बापदादा हर सेवाकेन्द्र की रोज़ की रिजल्ट देखते हैं। तो चारों ओर की रिजल्ट में वारिस कम हैं। स्नेही, सहयोगी अच्छे हैं लेकिन उन्हों को आगे बढ़ाओ या कोई भी नयों को, लास्ट वालों को फास्ट करके वारिस क्वालिटी बाप के सामने लाओ। कोई-कोई निकलते हैं लेकिन गिनती करने वाले हैं। जब चाहते हो कि 2हजार तक परिवर्तन हो, चाहते तो सभी ऐसे ही हो तो वारिस कितने बनाये हैं? सतयुग की प्रजा भी रॉयल चाहिए। वह कम है। प्रजा बनी है, यह जो अभी अनेक प्रकार की कान्फ्रेन्स की है वा बाहर की स्टेज पर जो भी प्रोग्रामस मिले हैं, इस वर्ष में प्रभाव और प्रजा – यह रिजल्ट अच्छी है। लेकिन बापदादा क्या चाहते हैं? अभी वारिस क्वालिटी तैयार करो। यहाँ वारिस तैयार करेंगे तब एडवान्स पार्टी भी प्रत्यक्ष होगी और बाप के नाम का, प्रत्यक्षता का नगाड़ा चारों ओर बजेगा। अभी तक की रिजल्ट में कहते हैं कि यह भी अच्छा काम कर रहे हैं या कोई-कोई कहते हैं कि यही कर सकते हैं, लेकिन परम आत्मा की तरफ अटेन्शन जाए, परम आत्मा का यह कार्य चल रहा है, वह अभी इनकागनीटो (गुप्त) है। बच्चे अपनी शक्ति से, स्नेह से बाप को प्रत्यक्ष करने का अच्छा पुरुषार्थ कर रहे हैं लेकिन अभी जब तक स्नेही हैं, सहयोगी हैं तब तक बाप की प्रत्यक्षता मैदान पर नहीं आई है। अच्छा है – यहाँ तक हुआ है, लेकिन सबके मुख से यह निकले कि बस अभी समय आ गया, बाप आ गया, तब विनाश भी आयेगा। तो बाप कहते हैं कि बाप से नहीं पूछो कि विनाश कब होगा? बाप आपसे पूछते हैं कि आप कब तैयार होगे? पर्दा खोलें, तैयार हो? कि पर्दा खुलेगा और तैयार होते रहेंगे? कम से कम 16108 पक्के-पक्के रत्न तो प्रत्यक्ष करो, माला तो बनाओ। बाप भी देखे तैयार हैं? इतनी मार्जिन है, ज्यादा नहीं कह रहे हैं। 9 लाख नहीं कह रहे हैं, 16108 की माला बनाओ। तो इस वर्ष बनाना, देखेंगे कि 16108 की निर्विघ्न, अचल माला तैयार है या

अभी थोड़ा-थोड़ा लड़खड़ाते हैं? थोड़ा-थोड़ा खेल दिखाते हैं? पाण्डव क्या समझते हो? बोलो, तैयार हो? दादियां तो बोलती हैं - हाँ। सभी शक्तियों की हाँ है? 16108 तैयार हैं? अच्छा 18 तारीख को माला बनाकर देना। हाथ उठवायेंगे तो आधी सभा कहेगी 16 हज़ार में हैं। जो समझते हैं कि हम 16 हजार में हैं, वो दादियों को अपनी चिटकी लिखकर देना कि मैं 16 हज़ार में हूँ या 108 में? फिर दादियाँ पास करेंगी। ऐसे नहीं समझना कि चिटकी दे दी है, पहले यह पास करेंगी फिर बापदादा पास करेंगे, फिर फाइनल रिजल्ट बतायेंगे। अच्छा।

इस वर्ष में और क्या करेंगे? बापदादा ने एक रिजल्ट सभी बच्चों की देखी। सिर्फ यहाँ वालों की नहीं, चारों ओर के बच्चों की एक बात की रिजल्ट देखी, वह कौन सी बात? जमा का खाता किसने कितना जमा किया है? चाहे मन्सा में, चाहे वाचा से, चाहे कर्मणा से, चाहे सम्बन्ध-सम्पर्क से – आप सभी का चैलेन्ज है, अपने को ही नहीं लेकिन विश्व के आगे बोलते हो कि एक जन्म में 21 जन्म का जमा करना है। यह बोलते हो ना! जानते हो ना? तो एक जन्म में 21 जन्मों का जमा करना है तो कितना करना पड़े?

अभी मन्सा में जो जमा करते हो उससे एक तो आधाकल्प आपको मन्सा से वृत्ति या वायब्रेशन फैलाने की आवश्यकता नहीं है, 21 जन्म यह पुरुषार्थ करने की आवश्यकता नहीं है और दूसरा द्वापर से लेकर जो आपके चित्र भिन्न-भिन्न रूप में पूजे जाते हैं, आपको पता नहीं है कि हम किस रूप में पूजे जाते हैं लेकिन पूज्य तो हो ना! 33 करोड़ देवताओं की मान्यता है तो आधाकल्प माननीय और पूज्यनीय बनते हो। उन जड़ चित्रों द्वारा भी आपकी मन्सा सेवा आटोमेटिक होती रहेगी। कोई भी भगत आपके जड़ चित्र के सामने आयेंगे तो उनको मन्सा वायब्रेशन से शान्ति, खुशी, शक्ति की अनुभूति होगी, यह मन्सा के जमा का प्रभाव होगा। और जो वाणी में जमा करते हैं, खाता अच्छा है, उन्हों का फिर वाणी द्वारा गायन और पूजन ज्यादा होता है। वाणी द्वारा उन्हों की महिमा और पूजा युक्तियुक्त होती है। काम चलाऊ पूजा नहीं, युक्तियुक्त पूजा होती है, क्योंकि वाणी द्वारा आप सभी उन्हों को सुख देते हो, शान्ति देते हो तो आधाकल्प आपका वाणी से बहुत युक्तियुक्त गायन होगा। एक गायन होगा और दूसरा युक्तियुक्त पूज्य बनेंगे। और कर्म द्वारा जो सदा हर कर्म में सेवा

करने वाली आत्मायें हैं, आधा दिन किया, आधा दिन नहीं किया, कभी किया, कभी नहीं किया, नहीं। लेकिन सदा और हर कर्म में अगर आपने जमा किया है, तो आपके हर कर्म की पूजा होगी। बहुत थोड़े देवताओं की हर कर्म की पूजा होती है। कभी-कभी वालों की सारे दिन में कभी-कभी होगी। और स्नेह, सहयोग वाली जो आत्मायें हैं, स्नेह से सहयोग से जो जमा करते हैं उन्हों की चाहे छोटी सी मूर्ति भी हो, मन्दिर भले छोटा हो लेकिन उस मूर्ति से स्नेह और सहयोग का वरदान प्रैक्टिकल में अनुभव होगा। समझा। अभी अपने को चेक करना कि चारों बातों में मेरा जमा का खाता कितना है? तीन में ज़्यादा है, एक में कम है, या एक में ज़्यादा है, तीन में कम है?

बापदादा ने जो रिजल्ट देखी तो बापदादा को पसन्द नहीं आई। अभी बैठकर क्या बतायें, इसलिए शार्ट में ही कहते हैं कि विनाश को जल्दी लाना है तो इस वर्ष से इन चारों ही बातों में जमा का खाता बढ़ाओ। कम खर्च बालानशीन बनो। वाणी से भी ज्यादा व्यर्थ जाता है, जो जरूरत भी नहीं होगी उसमें भी टाइम लगा देते हैं। मन्सा में जो सोचने की बात नहीं है, वह भी सोचने लग जाते हैं तो जमा का खाता कम हो जाता है। वेस्ट जाता है, जमा नहीं होता। तो विनाश के पहले जमा का खाता बढ़ाओ। तो बापदादा को विनाश का आर्डर देने में क्या देरी लगेगी, ताली बजाई और हुआ। यह ताली तो बजा ली ना। अभी तैयारी की ताली बजाओ। (सभी बार-बार तालियां बजा रहे हैं) आज तालियों की महफिल ज्यादा है। बापदादा बच्चों को देख करके खुश हैं। समझा इस वर्ष में क्या करना है?

बापदादा के पास हर एक बच्चे की टी.वी. है और बापदादा कभी-कभी अचानक हर बच्चे की टी.वी. का स्विच आन करते हैं तो बहुत रमणीक दृश्य होता है। अचानक करते हैं, प्रोग्राम से करेंगे तो ठीक बैठेंगे, ठीक करेंगे लेकिन अचानक का खेल देखते हैं तो अभी भी मैजारिटी का वेस्ट खाता बहुत है। बापदादा ने पहले एक स्लोगन दिया था –कम बोलो, मीठा बोलो। याद है? सभी ने यह स्लोगन चारों ओर लिखकर भी लगाया था, लेकिन दीवारों में तो लग गया, अभी दिल में लगाओ। एडवान्स पार्टी का सब पूछते हैं, कहाँ हैं, क्या करते हैं? क्यों नहीं प्रत्यक्ष होते हैं? तो वह आत्मायें कहती हैं हम प्रत्यक्ष होंगे तो क्या हम अकेले प्रत्यक्ष होंगे कि साथ-साथ होंगे? अगर मानों एडवान्स

पार्टी का पार्ट प्रत्यक्ष होता है तो कौन हैं, यह क्या है, उसमें आप नहीं होंगे? क्या सिर्फ एडवान्स पार्टी प्रत्यक्ष होगी? वह भी आपका इन्तजार कर रहे हैं कि एक साथ ताली बजायें। दूसरे तरफ विनाश का समय आपका इन्तजार कर रहा है, आप इन्तजार नहीं करो वह कर रहा है। समय तो आपकी रचना है, आप आर्डर करो तो वह तो सदा तैयार है। तो अभी अपने को अचल-अडोल बनाने की, बनने की तैयारी करो। जो भी आपके सम्पर्क-सम्बन्ध में आते हैं, मानों टीचर्स हैं या निमित्त बड़े भाई या बहनें हैं, उन्हों को अपने सम्बन्ध-सम्पर्क वाले ग्रुप को इस वर्ष में ऐसा तैयार करना है जो हर एक के मुख से निकले कि हम अनुभवी मूर्त हैं। चाहे सेन्टर पर साथी हैं, चाहे प्रवृत्ति में रहने वाले हैं, लेकिन हर एक के सहयोग से, वृत्ति से ऐसा ग्रुप तैयार करो जो कोई के भी मुख से, कोई की भी वृत्ति से ऐसा अनुभव नहीं हो कि यह अनुभवी मूर्त बनने वाली है, बनी नहीं है। समझा? ऐसे नहीं समझना कि जो सेन्टर्स के बड़े हैं, वह बने, हम तो बने नहीं। सबकी अंगुली चाहिए। चाहे भण्डारे का कार्य करने वाले भी हैं लेकिन सभी ज़िम्मेवार हैं।

अभी इस वर्ष की एन्ड में यह रिजल्ट पूछेंगे क्योंकि डायमण्ड जुबली हो गई, अभी समाप्ति के नज़दीक हैं। डायमण्ड जुबली में भी डायमण्ड नहीं बनेंगे तो कौन सी जुबली और मनायेंगे? और मनानी है कि समाप्ति करनी है? 100 वर्ष की मनानी है? मनानी हो तो फिर भले ढीले-ढाले चलो। अगर जल्दी करना है तो इस वर्ष में पहले आप तो बनो। जो रोज़ आने वाले हैं या कभी-कभी की लिस्ट में हैं, ब्राह्मण की लिस्ट में हैं वह सब तो तैयार हो जाओ, जब आप तैयार हो जायेंगे तब ताली बजायेंगे। अगर कल तैयार हो जाओ तो कल बजायेंगे। तो सभी तैयार हैं या होने ही हैं? सेन्टर पर रहने वाले वा सेन्टर पर आने वाले हर बच्चे की रिजल्ट देखेंगे कि नम्बर कौन लेता है, ठीक है? पाण्डव ठीक है? पाण्डव चुप हैं, सोच में हैं क्या?

देखो, बापदादा ने तो अपना वायदा पूरा किया, डेट पर आ गये ना। अभी आप भी डेट पर पूरा तैयार हो जाना। यह बड़ा हाल पसन्द है कि छोटा हाल ठीक है? अभी तो और वृद्धि होनी ही है। इस हाल में भी पीछे खड़ा होना पड़ेगा, आप भाग्यवान हो जो आराम से बैठे हो। जितना बड़ा बनायेंगे ना उतना छोटा होता जायेगा। अच्छा–जो इस स्थान की सेवा के निमित्त बने हैं, बापदादा

उन सबको बहुत-बहुत मुबारक देते हैं। कुछ भी थोड़ा बहुत रह गया है तो सोचना नहीं, तैयार ही है। फिर भी देखो बापदादा देख रहे थे कि थोड़े समय में जितना फास्ट काम किया है, उसी प्रमाण समय को देखते हुए बहुत अच्छा प्रोग्रेस किया है और बाकी थोड़ा सा है, वह हो जायेगा। बापदादा को पसन्द है। दादी ने आप लोगों को उल्हना दिया लेकिन बापदादा मुबारक दे रहे हैं। दादी निमित्त है बनाने के, अगर नहीं कहती तो आप आज बना नहीं पाते। तो उनका काम है कहना और बापदादा का काम है मुबारक देना। नाम तो नहीं ले सकते, बहुत हैं लेकिन जो मुख्य कन्स्ट्रक्शन के निमित्त हैं, वह खड़े हो जाओ।

(निर्वैर भाई) यह आपका बैकबोन है ना।
सभी दिल से बोलो मुबारक हो, मुबारक हो।

इस बारी की रिजल्ट में बापदादा को सबूत मिला कि हर बच्चे का बाप से कितना स्नेह है। बाप ने कहा और बच्चों ने जी हजूर, जी हाजिर किया। (कान्ट्रैक्टर्स प्रति) इन्हों को समय कम मिला है, समय के अनुसार काम बहुत किया, अच्छा किया और आप सबने भी सहयोग दिया इसीलिए बापदादा एक एक का दिल में नाम ले रहा है, मुख से नहीं दिल से। देश-विदेश के सभी बच्चों को स्नेह के सबूत की मुबारक दे रहे हैं। हर बच्चे ने अपने दिल से अंगुली दी है, चाहे किस भी रूप में, लेकिन सर्व के सहयोग से यह शान्तिवन समय पर तैयार हो गया। बैठने के योग्य तो है ना। अच्छा है। बेहद का हाल है लेकिन आगे क्या करेंगे? बस इतना ही ठीक है? कई बच्चों ने बापदादा को मीठा-मीठा उल्हना भी दिया कि हमने समझा था कि अभी संख्या नहीं मिलेगी, जो आना चाहे वो आये। लेकिन संख्या तो और कम हो गई, बहुत थोड़ी संख्या मिली है। तो अभी क्या करना पड़े, सोचना। अच्छा।

टीचर्स समझती हैं ना कि और संख्या मिलनी चाहिए। टीचर्स हाथ उठाओ। टीचर्स को तो चांस अच्छा मिल जाता है एक ग्रुप में आते तो दूसरे में भी आ जाते। अभी सभी टीचर्स क्या करेंगी? रिजल्ट देंगी ना? सेन्टर को तैयार करेंगी? जो समझती हैं हो सकता है, वह हाथ उठाओ। सभी निमित्त हैं, चाहे छोटी सी कुमारी रहती है, कुमार रहते हैं, भाई रहते हैं, सब ज़िम्मेवार हैं। एक साल दिया है, एक मास नहीं दिया है, एक साल दिया है। मधुबन भी तैयार होगा ना।

मधुबन वाले हाथ उठाओ। तो पहला एक्जैम्पल कौन बनेगा? मधुबन या सभी साथ बनेंगे? बापदादा ने देखा है कि मधुबन को कापी करना सबको आता है। चाहे अच्छी बात हो, चाहे कोई भी बात हो लेकिन मधुबन को कापी करना बहुत सहज आता है। और एक स्लोगन बन गया है – मधुबन में भी तो होता है! अभी इस वर्ष में यह स्लोगन नहीं कहना, इस वर्ष का स्लोगन है, मुझे करना है। यह भी होता है, यह भी होता है, नहीं। करना ही है। मुझे करना है। अर्जुन मैं हूँ। दूसरा अर्जुन नहीं है, जिसको देखना है। मैं अर्जुन हूँ, मैं निमित्त हूँ।

अच्छा–इस मेले में जो प्रबन्ध मिला है उसमें सब सन्तुष्ट हो? सन्तुष्ट अभी भी हैं और आगे भी हो जायेंगे। तो इस वर्ष का अन्त और दूसरे वर्ष का आदि तो संगम हो गया ना। तो संगम का बापदादा सभी को टाइटल देते हैं – सन्तुष्ट आत्मायें, सन्तुष्ट मणियां। चाहे भाई हैं, चाहे बहिनें हैं लेकिन आत्मा मणी है इसलिए सभी सन्तुष्ट मणियां हैं, और सदा रहेंगी। देखना सन्तुष्टता को छोड़ना नहीं। कितना भी कोई आपके आगे कोशिश करे, आपकी सन्तुष्टता हिलाने के लिए आये लेकिन आप हिलना नहीं, सदा सन्तुष्ट। सदा मुखड़ा मुस्कराता रहे। कभी कैसा, कभी कैसा नहीं। सदा मुस्कराता हुआ चेहरा, अगर चेहरे में कभी थोड़ा फर्क आये तो अपने पूजने वाले चित्र को सामने रखो तो मेरा चित्र तो मुस्करा रहा है और मैं सोच रही हूँ। तो मुस्कराना सन्तुष्टता की निशानी है। तो क्या बनेंगे? क्या करेंगे? सन्तुष्टमणि। चेहरे पर कभी भी और रेखायें नहीं हों, सिवाए मुस्कराने के। उदासी को अपनी दासी बना दो। अपने चेहरे पर उसको लाने नहीं देना। आर्डर से चलाओ, नहीं आ सकती। अच्छा।

इस ग्रुप में तो सब जोन आये हैं ना। सबसे बड़ी संख्या किसकी है? (गुजरात) गुजरात वालों ने हिम्मत अच्छी की है। **(महाराष्ट्र, कनार्टक, ईस्टर्न, पंजाब, दिल्ली, नेपाल, यू.पी. आदि सभी ज़ोन से बापदादा हाथ उठवाकर मिल रहे हैं) तामिलनाडु कहाँ है?** तामिलनाडु में भी बहुत अच्छी वृद्धि है।

डबल फारेनर्स को भी डबल मुबारक हो। कन्स्ट्रक्शन वालों ने जिस भी डिपार्टमेंट में काम किया है, वह उठकर खड़े हो जाओ। कन्स्ट्रक्शन वालों को बापदादा वतन में मसाज करता है।

जिन्होंने भी काम किया है वह सभी वतन में आना, वतन में मसाज होता है। अच्छा। बहुत अच्छा किया है। (इसके पीछे दादी जी और दादी जानकी जी

की विशेष प्रेरणा रही है, सभी ने दादियों को मुबारक दी) सभी ने तालियां तो बजाई और बापदादा उनके लिए ताली बजा रहे हैं जो आप सारी सभा सहयोगी बनी। अच्छा।

चारों ओर के सर्व उमंग-उत्साह से आगे बढ़ने वाले, सदा इकॉनामी के अवतार बन समय, संकल्प, वाणी और कर्म को बचत के खाते में जमा करने वाले, साकार वा आकार रूप में नया वर्ष मनाने वाले सिकीलधे बच्चे, बापदादा देख रहे हैं कि चारों ओर के बच्चे, साकार में नहीं तो आकार रूप में मधुबन में ही हैं और आकार रूप में मना रहे हैं। तो सभी को बापदादा नये वर्ष की, शान्तिवन के स्थापना की मुबारक और यादप्यार दे रहे हैं। सभी सन्तुष्ट मणियों को नमस्ते।

(दादी जी तथा दादी जानकी जी ने सिन्धी सम्मेलन का समाचार बापदादा को सुनाया)

इस समय जो सभी ने मिलकर सेवा की और लास्ट में सिन्धी सम्मेलन भी किया तो भारत या विदेश दोनों में जिन्होंने भी सेवा की, निमित्त बनें, उन्हों को सच्ची ज्योत जगाने की विशेष मुबारक है। (सिन्धी सम्मेलन में आये हुए भाई-बहिनों से) जो अभी यहाँ हैं, वह खड़े हो जाओ। बीज बहुत अच्छा डाला है, फल देखते जाना। अच्छी सेवा की है। मुबारक हो।

(बापदादा ने अपने हस्तों से झण्डा फहराया, मोमबत्तियां जलाई, केक काटी और १२ बजे सभी बच्चों को नये वर्ष की बधाई के साथ याद-प्यार दी)

पुराने वर्ष को विदाई दी और नये वर्ष का आह्वान किया, आरम्भ किया। जैसे पुराने वर्ष को विदाई दी वैसे वर्ष के साथ जो इस वर्ष में कोई भी कमी रह गई हो, कमजोरी रह गई हो उसको भी सदा के लिए विदाई और सर्व गुणों का आह्वान करके नई दुनिया के स्मृति से, तीव्र गति से आगे बढ़ते चलो, पुरानी बातों को छोड़ो। पुराने को विदाई दी या कभी-कभी बुलायेंगे? नहीं ना? सदा के लिए विदाई दी? जैसे यह 96 का वर्ष अभी नहीं आयेगा। विदाई दे दी ना! अब आगे 97 आयेगा, 96 नहीं। इसलिए पुरानी कमजोरियों को स्वाहा करो। स्वाहा किया? यह डायमण्ड जुबली हाल है ना तो डायमण्ड जुबली हाल अर्थात् यज्ञ, तो यज्ञ में स्वाहा की हुई चीज फिर वापिस नहीं ली जाती। तो

आपने स्वाहा किया? हाँ या ना? सभी ने कर लिया? थोड़ा छिपाकर तो नहीं रखा? जेबखर्च की आदत होती है ना। तो यह कमजोरियां जेबखर्च की रीति से भी नहीं रखना। क्या करें, बात ही ऐसी थी, थोड़ा सा करना पड़ा, आइवेल के लिए रखना ही पड़ता है, ऐसे नहीं। जेबखर्च भी नहीं रखना। स्वाहा तो पूरा स्वाहा। तो बीती सो बीती। और अभी से नई बातें आरम्भ हो गई। अभी से किया ना? तो सच्चा डायमण्ड बन गये। बनना पड़ेगा, देखेंगे, पक्का नहीं – यह पुरानी भाषा खत्म। अभी पुरानी बातें नहीं बोलना। पता नहीं, पता नहीं, नहीं कहना। करना ही पड़ता है, नहीं। हम जो करेंगे वो और करेंगे –यह पाठ पक्का करो। ठीक है ना! तो मुबारक हो, बधाई हो। पदमगुणा बधाई हो। अच्छा। ओम् शान्ति।

अपनी सूरत से बाप की सीरत को प्रत्यक्ष करो तब प्रत्यक्षता का नगाड़ा बजेगा

आज बापदादा दो विशाल सभायें देख रहे हैं। एक तो साकार रूप में आप सभी सम्मुख हो और दूसरी अव्यक्त रूप की विशाल सभा देख रहे हैं। चारों ओर के अनेक बच्चे इस समय अव्यक्त रूप में बाप को सम्मुख देख रहे हैं, सुन रहे हैं। दोनों ही सभा एक दो से प्रिय हैं। आज विशेष सभी के दिल में ब्रह्मा बाप की याद इमर्ज है क्योंकि ब्रह्मा बाप का इस ड्रामा में विशेष पार्ट है। सभी का ब्रह्मा बाप से दिल का स्नेह है क्योंकि ब्रह्मा बाप का भी एक-एक बच्चे से अति प्यार है। जैसे आप बच्चे यहाँ साकार में ब्रह्मा बाप के गुण और कर्तव्य याद करते हो वैसे ब्रह्मा बाप भी आप बच्चों की विशेषताओं का, सेवा का गुणगान करते हैं। तो ब्रह्मा का अव्यक्त आवाज आप सबको पहुंचता है? आप सब विशेष अमृतवेले से लेकर जो मीठी-मीठी बातें करते हो वा मीठे-मीठे उल्हनें भी देते हो, वह ब्रह्मा बाप सुनकर मुस्कराते रहते हैं और क्या गुण गाते हैं? वाह मेरे सिकीलधे, लाडले बाप को प्रत्यक्ष करने वाले बच्चे वाह! ब्रह्मा बाप अब बच्चों से क्या शुभ आशायें रखते हैं, वह जानते हो?

बाप यही चाहते हैं कि मेरा हर एक बच्चा अपनी मूर्त से बाप की सीरत दिखायें। सूरत भिन्न-भिन्न हो लेकिन सबकी सूरत से बाप की सीरत दिखाई दे। जो भी देखे, जो भी संबंध में आये – वह आपको देखकर आपको भूल जाये, लेकिन आप में बाप दिखाई दे तब ही समय की समाप्ति होगी। सबके दिल से यह आवाज निकले हमारा बाप आ गया है, मेरा बाप है। ब्रह्माकुमारियों का बाप नहीं, मेरा बाप है। जब सभी के दिलों से आवाज निकले कि मेरा बाप है, तब ही यह आवाज चारों ओर नगाड़े के माफिक गूँजेगा। जो भी सांइस के साधन हैं, उन साधनों में यह नगाड़ा बजता रहेगा – मेरा बाप आ गया। अभी जो भी कर रहे हो, बहुत अच्छा किया है और कर रहे हो। लेकिन अभी सबका इकट्ठा नगाड़ा बजना है। जहाँ भी सुनेंगे, एक ही आवाज सुनेंगे। आने वाले आ गये – इसको कहा जाता है बाप की स्पष्ट प्रत्यक्षता। अभी नाम प्रसिद्ध हुआ है। पहला

कदम नाम प्रत्यक्ष हुआ है कि ब्रह्माकुमारियां - ब्रह्माकुमार अच्छा काम कर रहे हैं। विद्यालय वा कार्य की, नॉलेज की अभी महिमा करते हैं, खुश होते हैं। यह भी समझते हैं कि ऐसा कार्य और कोई कर नहीं सकता, इतने तक पहुँचे हैं। यह बात स्पष्ट हुई है, चारों ओर इस बात की महिमा है। लेकिन इस बात का अभी स्पष्टीकरण नहीं हुआ है कि बापदादा आ गये हैं। अभी थोड़ा-थोड़ा पर्दा खुलने लगा है लेकिन स्पष्ट नहीं है। जानते भी हैं कि इन्हों का बैकबोन कोई अथॉरिटी है लेकिन वही बापदादा है और हमें भी बाप से वर्सा लेना है, यह दीवार अभी उमंग-उत्साह में आगे आ रही है, वो अभी होना है। एक कदम उठाते हैं, वो एक कदम है – सहयोग का। एक कदम उठने लगा है, सहयोग देने की प्रेरणा अन्दर आने लगी है, अभी दूसरा कदम है – स्वयं वर्सा लेने की उमंग में आये। जब दोनों ही कदम मिल जायेंगे तो चारों ओर बाजे बजेंगे। कौन से बाजे? – मेरा बाबा। तेरा बाबा नहीं, मेरा बाबा। जैसे कार्य की महिमा करते हैं, ऐसे करन-करावनहार बाप की महिमा झूम-झूम कर गायें। होने वाला ही है। आपको भी यह नज़ारा आंखों के समाने दिल में, दिमाग में आ रहा है ना! क्योंकि बाप और दादा आये हैं – सब बच्चों को वर्सा देने के लिए। चाहे मुक्ति का, चाहे जीवनमुक्ति का, लेकिन वर्सा मिलना जरूर है। कोई भी वंचित नहीं रहेगा क्योंकि बाप बेहद का मालिक है, बेहद का बाप है। तो बेहद को वर्सा लेना ही है। भल योगबल से अपने जन्म-जन्म के पाप नहीं भी काट सकें लेकिन सिर्फ इतना भी जान लिया कि बाप आये हैं, तो कुछ न कुछ पहचान से वर्से के अधिकारी बन ही जायेंगे। तो जैसे बाप को बेहद का वर्सा देने का संकल्प है और निश्चित होना ही है। ऐसे आप सबके दिल में ये शुभ भावना, शुभ कामना उत्पन्न होती है कि हमारे सब भाई-बहन बेहद के वर्से के अधिकारी बन जायें? तो ये शुभ भावना और शुभ कामना कब तक प्रत्यक्ष रूप में करेंगे? उसकी डेट पहले से अपने दिल में फिक्स करो, संगठन से पहले दिल में करो फिर संगठन में करो तो विनाश की डेट आपेही स्पष्ट हो जायेगी, उसकी चिन्ता नहीं करो। रहम आता है या इसी मौज में रहते हो कि हम तो अधिकारी बन गये? मौज में रहो, यह तो बहुत अच्छा है लेकिन रहमदिल बाप के बच्चे अभी बेहद पर रहम करो। जब दूसरे पर रहम आयेगा तो अपने ऊपर रहम पहले आयेगा, फिर जो एक ही छोटी सी बात पर आपको पुरूषार्थ करना पड़ता है,

वह करने की आवश्यकता नहीं होगी। मास्टर रहमदिल, मास्टर दयालू, मर्सीफुल बन जाओ। इस गुण को इमर्ज करो। तो औरों के ऊपर रहम करने से स्वयं पर रहम आपेही आयेगा।

बापदादा ने पहले भी सुनाया है कि बाप-दादा को बच्चों की कौन सी बात अच्छी नहीं लगती है, जानते हो? बापदादा को बच्चों का मेहनत करना वा बार-बार युद्ध करना, यह अच्छा नहीं लगता है। बाप कहते भी हैं – हे मेरे योगी बच्चे, योद्धे बच्चे नहीं कहते हैं, योगी बच्चे। तो योगी बच्चों का क्या काम है? युद्ध करना। युद्ध करना अच्छा लगता है? परेशान भी होते हो और फिर युद्ध भी करते हो। आज प्रतिज्ञा करते हो कि युद्ध नहीं करेंगे और कुछ समय के बाद फिर योगी के बजाए योद्धे बन जाते हो। यह क्यों? बापदादा समझते हैं कि बच्चों को योग से प्यार कम है, युद्ध से प्यार ज्यादा है। तो आज से क्या करेंगे? योद्धे बनेंगे वा निरन्तर योगी बनेंगे?

बापदादा ने देखा – कितनी 18 जनवरी भी बीत गई! और विशेष ब्रह्मा बाप आप बच्चों का आह्वान कर रहा है कि मेरे बच्चे समान बन वतन में आ जाओ। वतन अच्छा नहीं लगता? क्या युद्ध करना ही अच्छा लगता है? युद्ध नहीं करो। आज से युद्ध करना बन्द करो। कर सकते हो? बोलो हाँ जी। फिर वहाँ जाकर पत्र नहीं लिखना कि माया आ गई, युद्ध करके भगा दिया। किसी को अपनी माया आती है और कोई-कोई दूसरों की माया को देख खुद माया के असर में आ जाते हैं। यह क्यों, यह क्या..... यह दूसरों की माया अपने अन्दर ले आते हैं। यह भी नहीं करना। माया से छुड़ाना बाप का काम है, आप स्व पुरूषार्थ में तीव्र बनो, तो आपके वायब्रेशन से, वृत्ति से, शुभ भावना से दूसरे की माया सहज भाग जायेगी। अगर क्यों, क्या में जायेंगे, तो न आपकी माया जायेगी न दूसरे की जायेगी। इसलिए जैसे नये वर्ष में पुराने वर्ष को विदाई दी। अभी 96 नहीं कहेंगे, 97 के कहेंगे ना! अगर कोई गलती से कह दे तो आप कहेंगे 96 नहीं है, 97 है। ऐसे आज क्यों-क्या, ऐसे-वैसे, इन शब्दों को विदाई दे दो। क्वेश्चन मार्क नहीं करो। बिन्दी लगाओ, नहीं तो क्वेश्चन मार्क हुआ और व्यर्थ का खाता आरम्भ हुआ। और जब व्यर्थ का खाता आरम्भ हो जाता है तो समर्थी समाप्त हो जाती है। और जहाँ समर्थी समाप्त हुई, वहाँ माया भिन्न-भिन्न रूप से, भिन्न-भिन्न सरकमस्टांश से अपना ग्राहक बना देती है। फिर

क्या बन जाते? योगी या योद्धे? योद्धे नहीं बनना। पक्का प्रामिस किया? या बापदादा कहता है तो हाँ किया? पक्का किया? बाहर जब अपने देश में जायेंगे तो थोड़ा कच्चा होगा? शक्तियां क्या कहती हैं? होगा या नहीं? सब हाँ नहीं करते, माना थोड़ा अपने में शक्य है। (सबने हाँ जी कहा) देखना टी.वी. में फोटो निकल रहा है! फिर बापदादा टी.वी. की कैसेट भेजेंगे क्योंकि बाप का हर बच्चे के साथ – चाहे नये हैं, चाहे पुराने हैं लेकिन जिसने दिल से कहा मेरा बाबा, सिर्फ कहा नहीं लेकिन माना और मानकर चल रहे हैं, उस एक-एक के साथ बाप का दिल का प्यार है, कहने वाला प्यार नहीं।

बापदादा बहुत बच्चों की रंगत देखते हैं – आज कहेंगे बाबा, ओ मेरे बाबा, ओ मीठा बाबा, क्या कहूं, क्या नहीं कहूं ...... आप ही मेरा संसार हो, बहुत मीठी-मीठी बातें करते हैं और दो चार घण्टे के बाद अगर कोई बात आ गई तो भूत आ जाता है। बात नहीं आती, भूत आता है। बापदादा के पास सभी का भूत वाला फोटो भी है। देखो, एक यादगार भी भूतनाथ का है। तो भूतों को भी बापदादा देखते हैं – कहाँ से आया, कैसे आया और कैसे भगा रहे हैं। यह खेल भी देखते रहते हैं। कोई तो घबराकर, दिलशिकस्त भी हो जाते हैं। फिर बापदादा को यही शुभ संकल्प आता है कि इनको कोई द्वारा संजीवनी बूटी खिलाकर सुरजीत करें लेकिन वे मूर्छा में इतने मस्त होते हैं जो संजीवनी बूटी को देखते ही नहीं हैं। ऐसे नहीं करना। सारा होश नहीं गंवाना, थोड़ा रखना। थोड़ा भी होश होगा ना तो बच जायेंगे।

तो आज विशेष ब्रह्मा बाप हर बच्चे की रिजल्ट को देख रहे थे क्योंकि आज के दिन को आप सभी स्मृति दिवस सो समर्थ दिवस कहते हैं। तो ब्रह्मा बाप देख रहे थे कि कितने समर्थी दिवस मना चुके हैं, लेकिन समर्थी सदाकाल की कहाँ तक आई है? तो क्या देखा होगा? अभी की रिजल्ट अनुसार बाप की नालेज से नालेजफुल और माया के भी नालेजफुल, ऐसे नालेजफुल कितने निकले होंगे! माया की नालेज से भी नालेजफुल बनना पड़े, जो माया को दूर से ही पहचान लें, कैच कर लें कि आज कुछ पेपर होने वाला है और पहले से ही समर्थ हो जाएं। समाचार में क्या लिखते हैं? माया आई, मैंने भगाया फिर भाग गई। लेकिन आई क्यों? माया को आने की छुट्टी दे दी है क्या कि भले कभी-कभी आया करो? यदि बिना छुट्टी कोई आता है, तो उसको आने दिया

जाता है क्या? माया पर रहम तो नहीं करते हो कि बिचारी आधाकल्प की साथी है! माया पर रहम नहीं करना। इतनी सारी आत्माओं पर तो रहम कर लो। तो रिजल्ट में फर्स्ट और सेकण्ड नम्बर में 50-50 देखा। सिर्फ फर्स्ट नहीं, फर्स्ट और सेकण्ड दोनों मिलाकर 50, लेकिन बापदादा को एक बात की बहुत खुशी है कि बच्चों को बाप के स्नेह से विजयी बन ही जाना है। अभी सभी के मस्तक पर विजय का तिलक ऐसा स्पष्ट दिखाई दे जो दूसरे भी अनुभव करें कि सचमुच यही विजयी रत्न हैं।

बापदादा ने पहले भी सुनाया है कि इस फाइनल पढ़ाई में हर एक बच्चे को तीन सर्टीफिकेट लेने हैं – एक स्वयं, स्वयं से सन्तुष्ट - यह सर्टीफिकेट और दूसरा बापदादा द्वारा सर्टीफिकेट और तीसरा परिवार के संबंध-सम्पर्क में आने वालों द्वारा सर्टीफिकेट। यह तीन सर्टीफिकेट जब मिलें तब समझो पढ़ाई पूरी हुई। ऐसे नहीं समझना कि बापदादा तो हमारे से सन्तुष्ट हैं। लेकिन तीनों ही सर्टीफिकेट चाहिए, एक नहीं चलेगा। तो चेक करो तीन सर्टीफिकेट से कितने सर्टीफिकेट मिले हैं? बाप के बिना भी कुछ नहीं मिलता। लेकिन परिवार की सन्तुष्टता का सर्टीफिकेट इससे भी बहुत कुछ मिलता है। परिवार की जितनी आत्माओं से सर्टीफिकेट जिसको मिलता है, जितने ब्राह्मण सन्तुष्ट हैं उतने ही भगत भी आपकी पूजा सन्तुष्टता से करेंगे, काम चलाऊ नहीं, दिल से करेंगे। तो यहाँ ब्राह्मण जीवन में जितने ब्राह्मणों का आपके प्रति स्नेह, सम्मान अर्थात् रिगार्ड होगा, दिल से सन्तुष्ट होंगे, उतना ही पूज्य बनेंगे। पूज्य के लिए स्नेह और सम्मान होता है। तो जब जब जड़ चित्रों की पूजा होगी, तब इतना ही स्नेह और रिगार्ड मिलेगा। सारे कल्प की प्रारब्ध अभी बनानी है। सिर्फ आधाकल्प राज्य की प्रारब्ध नहीं, पूज्य की प्रारब्ध भी अभी बनती है। ऐसे नहीं समझो–हमारा तो बाप से ही काम चल जायेगा। नहीं। बाप का परिवार से कितना प्यार है। तो फालो फादर करो। ब्रह्मा बाप को देखा, कैसा भी बच्चा हो, शिक्षादाता बन शिक्षा भी देते लेकिन शिक्षा के साथ प्यार भी दिल में रखते। और प्यार कोई बाहों का नहीं, लेकिन प्यार की निशानी है – अपनी शुभ भावना से, शुभ कामना से कैसी भी माया के वश आत्मा को परिवर्तन करना। कोई भी है, कैसी भी है, घृणा भाव नहीं आवे, यह तो बदलने वाले ही नहीं हैं, यह तो हैं ही ऐसे। नहीं। अभी आवश्यकता है रहमदिल बनने की क्योंकि कई बच्चे कमजोर होने

के कारण अपनी शक्ति से कोई बड़ी समस्या से पार नहीं हो सकते, तो आप सहयोगी बनो। किससे? सिर्फ शिक्षा से नहीं, आजकल शिक्षा, सिवाए प्यार या शुभ भावना के कोई नहीं सुन सकता। यह तो फाइनल रिजल्ट है, शिक्षा काम नहीं करती लेकिन शिक्षा के साथ शुभ भावना, रहमदिल यह सहज काम करता है। जैसे ब्रह्मा बाप को देखा, मालूम भी होता कि आज इस बच्चे ने भूल की है, तो भी उस बच्चे को शिक्षा भी तरीके से, युक्ति से देता और फिर उसको बहुत प्यार भी करता, जिससे वह समझ जाते कि बाबा का प्यार है और प्यार में गलती के महसूसता की शक्ति उसमें आ जाती। तो ब्रह्मा बाप को आज बहुत याद किया ना! तो फालो फादर। बाप समान बनने की हिम्मत है? मुबारक हो हिम्मत की। बापदादा आपके दिल की तालियां पहले ही सुन लेता है आप खुशी से तालियां बजाते हो लेकिन बाप को दिल की तालियां पहले पहुंचती हैं।

बापदादा भी हंसी की बात सुनाते हैं। ब्रह्मा बाबा की रूहरिहान चली! तो ब्रह्मा बाप कहते हैं कि मेरे को एक बात के लिए डेट कान्सेस-नेस है। बच्चों को तो कहते हैं डेडकानसेस नहीं बनो लेकिन ब्रह्मा बाप एक बात में डेट कान्सेस हैं, कौन सी डेट? कि कब मेरा एक-एक बच्चा जीवन मुक्त बन जाए! ऐसे नहीं समझना कि अन्त में जीवनमुक्त बनेंगे, नहीं। बहुतकाल से जीवनमुक्त स्थिति का अभ्यास, बहुतकाल जीवनमुक्त राज्य भाग्य का अधिकारी बनायेगा। उसके पहले जब आप अभी जीवनमुक्त बनो तो आप जीवनमुक्त स्थिति वालों का प्रभाव जीवनबंध वाली आत्माओं का बंधन समाप्त करेगा। तो यह सेवा नहीं करनी है क्या? करनी है ना! तो आप ब्रह्मा बाप को डेटकान्सेस का जवाब दो। वह डेट कब होगी जब सब जीवनमुक्त हों? कोई बंधन नहीं। बंधनों की लम्बी लिस्ट वर्णन करते हो, क्लासेज कराते हो तो बंधनों की बड़ी लम्बी लिस्ट निकालते हो लेकिन बाप कहते हैं सब बन्धनों में पहला एक बंधन है–देह भान का बंधन। उससे मुक्त बनो। देह नहीं तो दूसरे बंधन स्वत: ही खत्म हो जायेंगे। अपने को वर्तमान समय मैं टीचर हूँ, मैं स्टूडेंट हूँ, मैं सेवाधारी हूँ, इस समझने के बजाए अमृतवेले से यह अभ्यास करो कि मैं श्रेष्ठ आत्मा ऊपर से आई हूँ – इस पुरानी दुनिया में, पुराने शरीर में सेवा के लिए। मैं आत्मा हूँ–यह पाठ अभी और पक्का करो। आप आत्मा का भान धारण करो तो यह आत्मिक भान, माया के भान को सदा के लिए समाप्त कर देगा। लेकिन आत्मा का भान – यह

अभी चलते फिरते स्मृति में रहे, वह अभी और होना चाहिए। ब्रह्मा बाप ने आत्मा का पाठ आदि से कितना पक्का किया! दीवारों पर भी मैं आत्मा हूँ, परिवार वाले आत्मा हैं, एक-एक के नाम से दीवारों में भी यह पाठ पक्का किया। डायरियां भर दी–मैं आत्मा हूँ, यह भी आत्मा है, यह भी आत्मा है। आपने आत्मा का पाठ इतना पक्का किया है? मैं सेवाधारी हूँ, यह पाठ कुछ पक्का लगता है लेकिन आत्मा सेवाधारी हूँ, तो जीवनमुक्त बन जायेंगे। रोज़ शरीर में ऊपर से अवतरित हो, मैं अवतार हूँ, इस शरीर में अवतरित आत्मा हूँ, फिर युद्ध नहीं करनी पड़ेगी। आत्मा बिन्दू है ना? तो सब बातों को बिन्दू लग जायेगा। कौन सी आत्मा हूँ? रोज एक नया-नया टाइटल स्मृति में रखो। आपके पास बहुत से टाइटल की लिस्ट तो है ना। रोज़ नया टाइटल स्मृति में रखो कि मैं ऐसी श्रेष्ठ आत्मा हूँ। सहज है या मुश्किल है? आत्मा बिन्दू रूप में रहेगी, तो ड्रामा बिन्दू भी काम में आयेगा और समस्याओं को भी सेकण्ड में बिन्दू लगा सकेंगे और बिन्दू बन परमधाम में बिन्दू जायेगी। जाना है या सीधा स्वर्ग में जायेंगे? कहाँ जायेंगे? पहले घर जायेगे या राज्य में जायेंगे? बाप के साथ घर तक तो चलना है ना कि सीधा राज्य में चले जायेंगे, बाप को पूछेंगे नहीं! तो बिन्दू बाप के साथ बिन्दू बन पहले घर जाना है। वैसे राज्य का पासपोर्ट नहीं मिलेगा। परमधाम से राजधानी में जाने का पासपोर्ट आटोमेटिक मिल जायेगा, किसको देने की आवश्यकता नहीं। जितना नजदीक होंगे, उतना नम्बरवार परमधाम से राज्य में आयेंगे, परमधाम से पहली आत्मा कौन सी जायेगी? किसके साथ जायेंगे? ब्रह्मा बाप के साथ जायेंगे! सभी राज्य में भी साथ में जायेंगे या दूसरे तीसरे जन्म में आयेंगे? जाना है ना? प्यार है ना? ब्रह्मा बाप को छोड़ेंगे तो नहीं, साथ जायेंगे? तो बापदादा को डेट बतायेंगे या नहीं? (बापदादा बतायें) बापदादा तो कहते हैं अभी बनो। तो बाप भी डेट कानसेस से बदल जायेगा। देखो, ब्रह्मा बाप ने कल को देखा? तुरत दान महादान किया। तीव्र पुरूषार्थ, पहला पुरूषार्थ किया। कल को नहीं देखा। कल क्या होगा! परिवार कैसे चलेगा! सोचा? जो आज हो रहा है वह अच्छा और जो कल होगा वह भी अच्छा। तभी तो तुरत दान महापुण्य और पहला नम्बर का महान बना। अभी बच्चों को तुरत दानी बनना चाहिए। संकल्प किया और तुरत दान महाबलि बनें। जब हाथ उठवाते हैं कि पहले डिवीजन में कौन आयेगा? तो सभी हाथ

उठाते हैं। अभी भी उठवायेगे तो सब उठायेगे। बापदादा जानते हैं कि कोई भी हाथ नीचे नहीं करेंगे। जब पहले डिवीजन में आना है तो पहले नम्बर को फालो तो करो। फालो करना सहज है – बस ब्रह्मा बाप के कदम पर कदम रखो। कापी करो। कापी करना आता है कि नहीं आता है! फालो करना आता है? तो फालो करो और क्या करना है!

विशाल सभा को देख खुशी हो रही है ना! (सभी ने जोर से तालियां बजाई) सभी को एक हाथ की ताली सिखाओ (सभी ने एक हाथ हिलाया) यह अच्छी है। अच्छा।

इस बारी सभी ज़ोन के आये हैं ना! मैजॉरिटी सभी तरफ से आये हैं।

महाराष्ट्र और बाम्बे :- हाथ उठाओ। महाराष्ट्र सेवा के निमित्त हैं ना। अच्छी सेवा का सबूत दे रहे हैं। सभी खुशी से सेवा कर रहे हैं। नींद आती है कि रात भी सेवा में गुज़र जाती है? रात दिन सेवा यह महा पुण्य बन रहा है। रात भी हो तो सेवाधारी सेवा के लिए हाजिर हैं। ऐसे है ना महाराष्ट्र? अच्छी रिजल्ट है। पहले गुजरात ने किया, अभी महाराष्ट्र कर रहा है। हर सेवाधारी ग्रुप की अपनी-अपनी विशेषता है। गुजरात को भी टर्न मिला ना। अच्छा है। देखो सेवा के कारण आपको डबल चांस मिला है। अपने टर्न में भी आ सकते हो और सेवाधारी बनकर भी आये तो सेवाधारियों को डबल चांस है। अच्छा।

दिल्ली– दिल्ली वाले डायमण्ड जुबली की समाप्ति का समारोह मना रहे हैं, अच्छा है। देहली से आवाज चारों ओर सहज फैलता है। इसलिए अच्छी हिम्मत से कार्य कर रहे हैं और डायमण्ड जुबली की सम्पन्न समाप्ति धूमधाम से होनी ही है। अच्छा।

गुजरात – गुजरात तो पड़ोसी है ताली बजाओ तो हाजिर हो जाए।

(कनार्टक, आन्ध्रा, पंजाब, इस्टर्न, नेपाल, आसाम, उड़ीसा, इन्दौर, यू.पी., बनारस, भोपाल, तामिलनाडु, राजस्थान, आगरा, मधुबन, डबल विदेशी आदि सभी ज़ोन से बापदादा हाथ उठवाकर मिल रहे हैं)

डबल विदेशी तो मधुबन की सभा का श्रृंगार हैं। डबल विदेशी यादप्यार देने और लेने में बहुत होशियार हैं। भारत, भारत है लेकिन विदेश भी कम नहीं है। हर समय अपनी भिन्न-भिन्न रूप में याद भेजते रहते हैं। अभी भी नये वर्ष की याद बहुत ही बच्चों ने भेजी है और विशेष इस दिन बहुत बच्चे विधिपूर्वक

याद करते हैं। दिल से भी याद भेजते तो कार्ड और पत्रों द्वारा भी भेजते हैं। बापदादा के पास विशेष डबल विदेशियों के यादप्यार के पत्र और कार्ड भी मिले हैं। बापदादा सभी को पदमगुणा यादप्यार और मुबारक दे रहे हैं। अभी भी कई स्थानों से फरिश्ते रूप में मधुबन सभा में पहुंचें हुए हैं। बापदादा सामने देख रहे हैं और रिजल्ट में याद और सेवा के उंमग-उत्साह की विशेष मुबारक दे रहे हैं। अभी डबल विदेशी मैजारटी याद और सेवा में अनुभवी हो गये हैं और आगे भी होते रहेंगे। अभी पहला नटखट का बचपन मैजारिटी का समाप्त हुआ है और आगे भी हो रहा है। इसलिए डबल विदेशियों को तीव्र पुरूषार्थ की बापदादा मुबारक के साथ यह स्लोगन भी सुना रहे हैं –कि माया की नज़र से सदा बचे रहने वाले अपने नज़रों में सदा बाप को समाने वाले, जब बाप नज़रों में है तो माया की नज़र लग नहीं सकती है। इसलिए सदा बच्चे बचे रहें, रहना ही है। अच्छा।

अभी-अभी सभी जो भी बैठे हैं एक सेकण्ड में अशरीरी आत्मिक स्थिति में स्थित हो जाओ। शरीर भान में नहीं आओ। आत्मा, परम आत्मा से मिलन मना रही है। (बापदादा ने ड्रिल कराई)

ऐसा अभ्यास बार-बार कर्म करते, करते रहो। स्विच आन किया और सेकण्ड में अशरीरी बनें। यह अभ्यास कर्मातीत स्थिति का अनुभव करायेगा।

चारों ओर के सदा समर्थ आत्माओं को, सदा बापदादा को फालो करने वाले सहज पुरूषार्थी बच्चों को, सदा एक बाप, एकाग्र बुद्धि, एकरस स्थिति में स्थित रहने वाले, बिन्दू बन बिन्दू बाप के साथ चलने वाले ऐसे सर्व बाप के स्नेही, सहयोगी, सेवाधारी बच्चों को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

दादियों से - निर्विघ्न मेले की समाप्ति हुई ना!

(सायं 7.30 बजे, ग्लोबल हस्पताल में लण्डन की शैली बहन ने अपना पुराना शरीर छोड़ बापदादा की गोद ली, यह समाचार बापदादा को सुनाया गया) कोई न कोई का यादगार रहता है। जिसका जो पार्ट है वह कहाँ भी कैसे भी हो, उसको निभाना ही है। डबल फारेनर्स भी तो एडवांस पार्टी में चाहिए ना। एडवांस पार्टी के गुलदस्ते में भिन्न-भिन्न फूल जमा हो रहे हैं। (पूरी सरेन्डर थी, दो मास से यहाँ थी, लास्ट के तीन-चार दिन साइलेन्स में थी, अचानक तबियत

खराब हुई और 2-3 दिन हास्पिटल में ट्रीटमेंट चली) ऐसे अच्छे-अच्छे ही चाहिए ना, जो वायब्रेशन से कार्य कर सकें। तो यह जाना नहीं कहेंगे, सेवा में आना कहेंगे। यह भी कई आत्माओं को बेहद का वैराग्य दिलाने के लिए निमित्त बनी है। इतने बड़े विशाल मेले से जाना यह भी बेहद मेले में बेहद का पार्ट बजाना है। तो आप कहेंगे क्या चली गई? नहीं, चली नहीं गई लेकिन भिन्न-भिन्न ड्रेस से भिन्न पार्ट बजाने आई। (लण्डन में खास सभी ने उसके प्रति योग किया) इन सभी को भी सुनाओ, सभी उसे याद का सहयोग देवें, वायब्रेशन देवें। (निर्वैर भाई ने उसी समय सभी को समाचार सुनाया तथा एक मिनट के लिए सभी ने उस आत्मा को योगदान दिया)

विदाई के समय – सभी को यह शान्तिवन का विशाल हाल पसन्द है? (हाँ जी) तो किसने बनाया? आप सभी के सहयोग के अंगुली से यह विशाल हाल तैयार हुआ है। बाप तो है लेकिन बच्चों के सहयोग की अंगुली भी जरूरी है। तो पसन्द है ना? अच्छा इससे बड़ा बनायें? अच्छा है, सभी बच्चों के सहयोग से बना है और आगे भी जो कार्य रहा हुआ है, वह होना ही है। तो आप सभी को यह मेला, पट में सोना, खाना पसन्द है? तकलीफ नहीं है! तकलीफ हुई? देखो भक्ति के मेले तो बहुत किये हैं, उसमें तो खाने के साथ मिट्टी भी खाते हैं, मिट्टी में सोते हैं, मिट्टी में खाते हैं। आपको तो ब्रह्माभोजन अच्छा मिला ना। ब्रह्माभोजन ठीक मिला? कोई को ब्रह्मा भोजन में तकलीफ हुई? तबियत खराब तो नहीं हुई! अच्छा बीमार भी ठीक हो गये? तो यह शान्तिवन का मेला विशेष ब्राह्मणों के लिए हुआ और होता रहेगा लेकिन इस शान्तिवन को सेवा में भी लगाओ। ब्राह्मण माना सेवाधारी। तो जो आपके सम्बन्ध, सम्पर्क में हैं और चाहते हैं कि हमें भी कोई चांस मिले, लेकिन स्थान के कारण आप उन्हों की सेवा नहीं कर सके हैं, अभी बड़ी दिल से इतने ही हजारों में सेवा कर सकते हो क्योंकि ऊपर आपको हद मिलती है, यहाँ एक ही हाल में दो तीन ग्रुप बनाकर योगशिविर करा सकते हो, कोर्स करा सकते हो और साथ में वारिस बना सकते हो। यहाँ की पालना से वारिस बनना बहुत सहज होगा क्योंकि यहाँ का वायुमण्डल और अनुभवी दादियों की दृष्टि, पालना सहज परिवर्तन कर सकती है। एक प्रोग्राम ब्राह्मणों के रिफ्रेशमेंट का और एक प्रोग्राम सेवा का भिन्न-भिन्न रूप से एक ही समय पर ग्रुप-ग्रुप बनाकर एक ही हाल में और जो

रहने के अच्छे बड़े हाल हैं, उसमें भी रख सकते हो। तो आप जैसे खुद आये हैं ना, वैसे फिर अपने सम्पर्क वालों का प्रोग्राम बनाते रहना। ऐसे नहीं है कि यह बड़ा हाल कैसे काम में आयेगा, यह बड़े से छोटा भी हो सकता है, छोटे से बड़ा भी हो सकता है। तो इतनी संख्या तैयार करेंगे? इस हाल द्वारा 9 लाख तैयार करो। कर सकते हो? (इच वन टीच वन करें) यह अच्छी आइडिया है, जितने आप बैठे हो एक, एक को लायेगा तो कितने हो जायेंगे? अभी समय के प्रमाण सेवा भी बेहद बड़ी करो, छोटे-छोटे ग्रुप तो ऊपर भी होते हैं लेकिन यहाँ ज्यादा संख्या में प्रजा बना सकते हो, रॉयल प्रजा बना सकते हो, वारिस बना सकते हो। पसन्द है? तो दूसरी बारी क्या करेंगे? जितने बैठे हो ना–उतने लाना। ज्यादा भले लाना, कम नहीं लाना।

आप लोगों को रिफ्रेशमेंट चाहिए! आपकी भट्ठियां रखें? लेकिन यहाँ भट्ठी करो और वहाँ बैठ जाओ, ऐसे नहीं करना। भट्ठी माना सदा का परिवर्तन। तो ऐसा प्लैन बनाओ जो सब खुश हो जाएं। मिनिस्टर जो हैं, प्राइममिनिस्टर, प्रेजीडेंट सब आपके अनुभव से प्रभावित हों। कम से कम गवनर्मेन्ट भी यह तो कहे कि अगर भारत का कल्याण होना है तो यहाँ से ही होना है। तो अभी फास्ट सेवा करो। समझा। अभी बाकी जो भी रहा हुआ है उसको ठीक कराते रहो, करने वाले सभी मिलकर पहाड़ उठाने चाहें तो यह क्या है! बापदादा को भी विशाल मेला अच्छा लगता है। हिम्मत बच्चों की मदद बाप की। अच्छा।

ओम् शान्ति।

23-2-97

साथी को साथ रख साक्षी और खुशनुमः के तख्तनशीन बनो

आज विश्व कल्याणकारी बाप विश्व के चारों तरफ के बच्चों को देख हर्षित हो रहे हैं। सभी बच्चों के स्नेह और सहयोग की रेखायें बच्चों के चेहरे से दिखाई दे रही हैं। हर एक के दिल से ''मेरा बाबा'', यह गीत बापदादा सुन रहे हैं। बापदादा भी रेसपान्ड में कहते हैं ''ओ मेरे अति प्रिय, अति स्नेही लाडले बच्चे''। हर एक बच्चा प्रिय भी है, लाडले भी हैं, क्यों? कोटों में कोई और कोई में भी कोई हो। तो लाडले हुए ना! तो बापदादा भी लाडले बच्चों को देख खुश होते हैं। बच्चों को भी सदा खुशी में डांस करते हुए देखते हैं और सदा देखने चाहते हैं। खुशी में रहते तो हैं लेकिन बाप सदा चाहते हैं। सदा खुश रहते हो या खुशी में फर्क पड़ता है? कभी बहुत खुशी, कभी थोड़ी कम और कभी बहुत कम!

बाप ने पहले भी सुनाया है कि वर्तमान समय आप बच्चों की विश्व को इस सेवा की आवश्यकता है जो चेहरे से, नयनों से, दो शब्द से हर आत्मा के दुःख को दूर कर खुशी दे दो। आपको देखते ही खुश हो जाएं। इसलिए खुशनुमा चेहरा या खुशनुमा मूर्त सदा रहे क्योंकि मन की खुशी सूरत से स्पष्ट दिखाई देती है। कितना भी कोई भटकता हुआ, परेशान, दुःख की लहर में आये, खुशी में रहना असम्भव भी समझते हों लेकिन आपके सामने आते ही आपकी मूर्त, आपकी वृत्ति, आपकी दृष्टि आत्मा को परिवर्तन कर ले। आज मन की खुशी के लिए कितना खर्चा करते हैं, कितने मनोरंजन के नये-नये साधन बनाते हैं। वह हैं अल्पकाल के साधन और आपकी है सदाकाल की सच्ची साधना। तो साधना उन आत्माओं को परिवर्तन कर ले। हाय-हाय ले आवें और वाह-वाह लेकर जाये। वाह कमाल है – परमात्म आत्माओं की! तो यह सेवा करो। समय प्रति समय जितना अल्पकाल के साधनों से परेशान होते जायेंगे, ऐसे समय पर आपकी खुशी उन्हों को सहारा बन जायेगी क्योंकि आप हैं ही खुशनसीब। खुशनसीब हैं या नहीं? अधूरे तो नहीं? हैं ही खुशनसीब। आप जैसा खुशनसीब सारे कल्प में कोई आत्मायें नहीं। इतना नशा चेहरे और चलन से अनुभव कराओ। करा सकते हो या कराते भी हो?

ब्राह्मण जीवन में अगर खुशी नहीं तो ब्राह्मण बनकर क्या किया! ब्राह्मण जीवन अर्थात् खुशी की जीवन। कभी-कभी बापदादा देखते हैं, कोई-कोई के चेहरे जो होते हैं ना वह थोड़ा सा.... क्या होता है? अच्छी तरह से जानते हैं, तभी हंसते हैं। तो बापदादा को ऐसा चेहरा देख रहम भी आता और थोड़ा सा आश्चर्य भी लगता। मेरे बच्चे और उदास! हो सकता है क्या? नहीं ना! उदास अर्थात् माया के दास। लेकिन आप तो मास्टर मायापति हो। माया आपके आगे क्या है? चींटी भी नहीं है, मरी हुई चींटी। दूर से लगता है जिंदा है लेकिन होती मरी हुई है। सिर्फ दूर से परखने की शक्ति चाहिए। जैसे बाप की नालेज विस्तार से जानते हो ना, ऐसे माया के भी बहुरूपी रूप की पहचान, नालेज अच्छी तरह से धारण कर लो। वह सिर्फ डराती है, जैसे छोटे बच्चे होते हैं ना तो उनको माँ बाप निर्भय बनाने के लिए डराते हैं। कुछ करेंगे नहीं, जानबूझकर डराने के लिए करते हैं। ऐसे माया भी अपना बनाने के लिए बहुरूप धारण करती है। जब बहुरूप धारण करती है तो आप भी बहुरूपी बन उसको परख लो। परख नहीं सकते हैं ना, तो क्या खेल करते हो? युद्ध करने शुरू कर देते हो हाय, माया आ गई! और युद्ध करने से बुद्धि, मन थक जाता है। फिर थकावट से क्या कहते हो? माया बड़ी प्रबल है, माया बड़ी तेज है। कुछ भी नहीं है। आपकी कमजोरी भिन्न-भिन्न माया के रूप बन जाती है। तो बापदादा सदा हर एक बच्चे को खुशनसीब के नशे में, खुशनुमा चेहरे में और खुशी की खुराक से तन्दरूस्त और सदा खुशी के खजानों से सम्पन्न देखने चाहते हैं। जीवन में चाहिए क्या? खुराक और खजाना। और क्या चाहिए? तो आपके पास खुशी की खुराक है या स्टॉक कभी खत्म हो जाता है? खुशी का खजाना अखुट है। अखुट है ना? और जितना खर्चो उतना बढ़े। अगर और कोई भी पुरूषार्थ नहीं करो सिर्फ एक लक्ष्य रखो - कुछ भी हो जाए, चाहे अपने मन के स्थिति द्वारा, चाहे कोई अन्य आत्माओं द्वारा, चाहे प्रकृति द्वारा, चाहे वायुमण्डल द्वारा कुछ भी हो जाए, मुझे खुशी नहीं छोड़नी है। यह तो सहज पुरूषार्थ है ना या खुशी खिसक जाती है? सहज है या कभी-कभी मुश्किल है? दृढ़ संकल्प रखो और बातों को भूल जाओ। एक ही बात पक्की रखो - मुझे खुश रहना है। तो बातें क्या लगेंगी? खेल। और अपनी खेल देखने की साक्षीपन की सीट पर सदा स्थित रहो। चाहे कोई अपमान करने वाला हो, आपको परेशान कर अपने साक्षीपन की शान से

नीचे उतारने वाले हों, लेकिन आप साक्षीपन की सीट से नीचे नहीं आओ। नीचे आ जाते हो तभी खुशी कम हो जाती है।

बापदादा ने पहले भी दो शब्द सुनाये हैं - साथी और साक्षी। जब बापदादा साथ है तो साक्षीपन की सीट सदा मजबूत रहती है। कहते सभी हो बापदादा साथ है, बापदादा साथ है लेकिन माया का प्रभाव भी पड़ता रहता और कहते भी रहते हो बापदादा साथ है, बापदादा साथ है। साथ है, लेकिन साथ को ऐसे समय पर यूज़ नहीं करते हो, किनारे कर देते हो। जैसे कोई साथ में होता है ना, कोई बहुत ऐसा काम पड़ जाता है या कोई ऐसी बात होती है तो साथ कभी ख्याल नहीं होता, बातों में पड़ जाते हैं। ऐसे साथ है यह मानते भी हो, अनुभव भी करते हो। कोई है जो कहेगा साथ नहीं है? कोई नहीं कहता। सब कहते हैं मेरे साथ है, यह भी नहीं कहते कि तेरे साथ है। हर एक कहता है मेरे साथ है। मेरा साथी है। मन से कहते हो या मुख से? मन से कहते हो?

बापदादा तो खेल देखते हैं, बाप साथ बैठे हैं और अपनी परिस्थिति में, उसको सामना करने में इतना मस्त हो जाते हैं जो देखते नहीं हैं कि साथ में कौन हैं। तो बाप भी क्या करते? बाप भी साथी से साक्षी बनकर खेल देखते हैं। ऐसे तो नहीं करो ना। जब साथी कहते हो तो साथ तो निभाओ, किनारा क्यों करते हो? बाप को अच्छा नहीं लगता। बाप यही शुभ आशा रखते हैं और है भी कि एक-एक बच्चा स्वराज्य अधिकारी सो विश्व अधिकारी है। आप लोग प्रजा हैं क्या! प्रजा तो नहीं बनना है ना? राज़े, महाराजे, विश्व राजे हो ना! प्रजा बनाने वाले हो, प्रजा बनने वाले नहीं हो। राजा बनने वाले, प्रजा बनाने वाले हो। तो राजा कहाँ बैठता है? तख्त पर बैठता है ना! जब प्रैक्टिकल में राजा के नशे में होता है तो तख्त पर बैठता है ना! तो साक्षीपन का तख्त छोड़ो नहीं। जो अलग-अलग पुरूषार्थ करते हो उसमें थक जाते हो। आज मन्सा का किया, कल वाचा का किया, सम्बन्ध-सम्पर्क का किया तो थक जाते हो। एक ही पुरुषार्थ करो कि साक्षी और खुशनुमः तख्तनशीन रहना है। यह तख्त कभी नहीं छोड़ना है। कोई राजा ऐसे सीरियस होकर तख्त पर बैठे, बैठा तख्त पर हो लेकिन बहुत क्रोधी हो, आफीशियल हो तो अच्छा लगेगा? कहेंगे यह तो राजा नहीं है। तो आप सदा तख्तनशीन है ना! वह राज़े तो कभी तख्त पर बैठते, कभी नहीं बैठते लेकिन साक्षीपन का तख्त ऐसा है जिसमें हर कार्य करते भी तख्तनशीन, उतरना

नहीं पड़ता है। सोते भी तख्तनशीन, उठते-चलते, सम्बन्ध-सम्पर्क में आते तख्तनशीन। तख्त पर बैठना आता है कि बैठना नहीं आता है, खिसक जाते हो? साक्षीपन के तख्तनशीन आत्मा कभी भी कोई समस्या में परेशान नहीं हो सकती। समस्या तख्त के नीचे रह जायेगी और आप ऊपर तख्तनशीन होंगे। समस्या आपके लिए सिर नहीं उठा सकेगी, नीचे दबी रहेगी। आपको परेशान नहीं करेगी और कोई को भी दबा दो तो अन्दर ही अन्दर खत्म हो जायेगा ना। तो बापदादा को ऐसे समय पर आश्चर्य लगता है, आप नहीं आश्चर्य करना। अपने पर भले करना, दूसरे पर नहीं करना। तो आश्चर्य लगता है कि यह मेरे बच्चे क्या कर रहे हैं! तख्त से उतर रहे हैं। जब तख्तनशीन रहने के संस्कार अब से ही डालेंगे तब विश्व के तख्त पर भी बैठेंगे। यहाँ सदाकाल तख्तनशीन नहीं होंगे तो वहाँ भी सदा अर्थात् जितना समय फुल है, उतना समय नहीं बैठ सकेंगे। संस्कार सब अभी भरने हैं। फिर वही भरे हुए संस्कार सतयुग में कार्य करेंगे। रॉयल्टी के संस्कार अभी से भरने हैं। ऐसे नहीं सोचना कि अभी कुछ समय तो पड़ा है, इतने में विनाश तो होना नहीं है, यह नहीं सोचना। विनाश होना है अचानक। पूछकर नहीं आयेगा कि हाँ तैयार हो! सब अचानक होना है। आप लोग भी ब्राह्मण कैसे बनें? अचानक ही सन्देश मिला, प्रदर्शनी देखी, सम्पर्क-सम्बन्ध हुआ बदल गये। क्या सोचा था कि इस तारीख को ब्राह्मण बनेंगे? अचानक हो गया ना! तो परिवर्तन भी अचानक होना है। आपको पहले माया और ही अलबेला बनायेगी, सोचेंगे हमने तो दो हजार सोचा था – वह भी पूरा हो गया, अभी तो थोड़ा रेस्ट कर लो। पहले माया अपना जादू फैलायेगी, अलबेला बनायेगी। किसी भी बात में, चाहे सेवा में, चाहे योग में, चाहे धारणा में, चाहे सम्बन्ध-सम्पर्क में यह तो चलता ही है, यह तो होता ही है ...., ऐसे पहले माया अलबेला बनाने की कोशिश करेगी। फिर अचानक विनाश होगा, फिर नहीं कहना कि बापदादा ने सुनाया ही नहीं, ऐसा भी होना है क्या! इसलिए पहले ही सुना देते हैं - अलबेले कभी भी किसी भी बात में नहीं बनना। चार ही सबजेक्ट में अलर्ट, अभी भी कुछ हो जाए तो अलर्ट। उस समय नहीं कहना बापदादा अभी आओ, अभी साथ निभाओ, अभी थोड़ी शक्ति दे दो, उस समय नहीं देंगे। अभी जितनी शक्ति चाहिए, जैसी चाहिए उतनी जमा कर लो। सबको खुली छुट्टी है, खुले भण्डार हैं, जितनी शक्ति चाहिए, जो शक्ति

चाहिए ले लो। पेपर के समय टीचर वा प्रिन्सीपाल मदद नहीं करता।

डबल विदेशी बच्चों को देख बाप को भी डबल खुशी होती है। क्यों होती है? क्योंकि डबल विदेशियों को स्वयं को परिवर्तन करने में डबल मेहनत करनी पड़ी। इसीलिए जब बापदादा डबल विदेशी बच्चों को देखते हैं तो डबल खुशी होती है, वाह मेरे डबल विदेशी बच्चे वाह! डबल विदेशी हाथ उठाओ। (विश्व के अनेक देशों के करीब 1 हजार भाई बहिनें सभा में उपस्थित हैं) वाह बहुत अच्छा। डबल ताली बजाओ। बापदादा विदेश की सेवा के समाचार सुनते रहते हैं, देखते भी रहते हैं, रिजल्ट में सेवा का उमंग-उत्साह बहुत अच्छा है। सिर्फ कभी-कभी अपने ऊपर सेवा का थोड़ा सा बोझ उठा लेते हो। बोझ नहीं उठाओ। बोझ बाप को दे दो। बाप के लिए वह बोझ कुछ भी नहीं है लेकिन आप सेवा का बोझ उठा लेते हो तो थक जाते हो। सेवा बहुत अच्छी करते हो, सेवा के समय नहीं थकते हो। उस समय बहुत अच्छे चेहरों का फोटो निकालने वाला होता है लेकिन कोई-कोई (सभी नहीं) सेवा के बाद थोड़ा सा थकावट के चेहरे में दिखाई देते हैं। बाप कहते हैं बोझ उठाते क्यों हो? क्या बोझ उठाना अच्छा लगता है या आदत पड़ी हुई है? बोझ नहीं उठाओ। बोझ तब लगता है जब बाप साथ नहीं है। मैंने किया, मैं करती हूँ, मैं करता हूँ तो बोझ हो जाता है। बाप साथ है, बाप का कार्य है, बाप करा रहा है तो बोझ नहीं होगा। हल्के हो नाचते रहेंगे। जैसे डांस बहुत अच्छी करते हो ना। डबल विदेशियों की डांस देखो तो बहुत अच्छी होती है। अपने को थकाते नहीं हैं, फरिश्ते माफिक करते हो। इन्डियन जो करेंगे वह पांव थकायेंगे, हाथ भी थकायेंगे। लेकिन विदेशी डांस भी लाइट करते हो, तो ऐसे सेवा भी एक डांस समझो, खेल समझो। थको नहीं। बापदादा को वह फोटो अच्छा नहीं लगता है। सेवा का उमंग-उत्साह अच्छा है और यह भी रिजल्ट बाप के पास है कि अभी थोड़ी सी बात में हलचल में आने की परसेन्टेज बहुत कम है। मैजॉरिटी ठीक हैं, बाकी थोड़ी संख्या कभी-कभी थोड़ा सा हलचल में दिखाई देती है। लेकिन आदि की रिजल्ट और अब की रिजल्ट में बहुत अच्छा अन्तर है। ऐसा दिखाई देता है ना? अभी नाज़ुकपन छोड़ते जा रहे हैं। बापदादा को रिजल्ट देख करके खुशी है।

अभी छोटे-छोटे माइक भी तैयार कर रहे हैं। अभी छोटे माइक हैं, लेकिन छोटे से बड़े तक भी आ जायेंगे। बापदादा को याद है–आदि में यह विदेशी

टीचर्स कहती थी कि वी.आई.पीज को मिलना ही मुश्किल है, आना तो छोड़ो, मिलना ही मुश्किल है। और अभी सहज हो गया है क्योंकि आप भी वी.वी.वी.आई.पी. हो गये तो आपके आगे वी. आई. पी. क्या हैं! टोटल विदेश की रिजल्ट अच्छी है। सेन्टर्स भी अच्छे हैं, वृद्धि को प्राप्त करते जा रहे हैं। भारत में हैण्डस नहीं हैं, नहीं तो भारत में भी सेवाकेन्द्र तो बहुत खुल जायें। एक-एक ज़ोन वाला कहता है – हैण्डस नहीं हैं। तो अभी इस वर्ष हैण्डस निकालने की सेवा करो। हैण्डस मांगो नहीं, निकालो; और ही दान-पुण्य करो।

विदेश में यह बहुत अच्छा तरीका है – जहाँ भी सेन्टर खुलता है, वहाँ के ही लौकिक कार्य भी करते हैं सेन्टर भी चलाते हैं। कैसे चलेगा, कौन चलायेगा, यह प्राब्लम कम है। आप लोग यह नहीं सोचना कि हम लौकिक काम क्यों करें! यह तो आपकी सेवा का साधन है। लौकिक कार्य नहीं करते हो लेकिन अलौकिक कार्य के निमित्त बनने के लिए लौकिक कार्य करते हो। जहाँ भी जाते हो वहाँ सेन्टर खोलने का उमंग रहता है ना। तो लौकिक कार्य कब तक करेंगे–यह नहीं सोचो। लौकिक कार्य अलौकिक कार्य निमित्त करते हो तो आप सरेन्डर हो। लौकिकपन नहीं हो, अलौकिकपन है तो लौकिक कार्य में भी समर्पण हो। लौकिक कार्य को छोड़कर समर्पण समारोह मनाना है – यह बात नहीं है। ऐसा करने से वृद्धि कैसे होगी! इसीलिए लौकिक कार्य करते अलौकिक कार्य के निमित्त बनते हो, तो जो निमित्त लौकिक समझते हैं और रहते अलौकिकता में हैं, ऐसी आत्माओं को डबल क्या, पदम मुबारक है। समझा। इसीलिए यह नहीं कहना–दादी हमको छुड़ाओ, हमको छुड़ाओ। नहीं, और ही डबल प्रालब्ध बना रहे हो। हाँ आवश्यकता अगर समझेंगे तो आपेही छुड़ायेंगे, आपको क्या है! जिम्मेवार दादियां हैं, आप अपने लौकिकता में अलौकिकता लाओ। थको नहीं। लौकिक काम करके थक कर आते हैं तो कहते हैं क्या करें! नहीं खुशी-खुशी में दोनों निभाओ क्योंकि देखा गया है कि डबल विदेशी आत्माओं में दोनों तरफ कार्य करने की शक्ति है। तो अपनी शक्ति को कार्य में लगाओ। कब छोड़ेंगे, क्या होगा .... यह बाप और जो दादियां निमित्त हैं उनके ऊपर छोड़ दो, आप नहीं सोचो। कौन-कौन हैं जो लौकिक कार्य भी करते हैं और सेन्टर भी सम्भालते हैं, वह हाथ उठाओ। बहुत अच्छा। आप निश्चिंत रहो। नम्बर आप लोगों को वैसे ही मिलेंगे, जो सारा दिन करते हैं उन्हों जितना

ही मिलेगा। सिर्फ ट्रस्टी होकर करना, मैं-पन में नहीं आना। मैं इतना काम करती हूँ, मैं-पन नहीं। करावनहार करा रहा है। मैं इन्स्ट्रुमेंट हूँ। पावर के आधार पर चल रही हूँ।

आज डबल विदेशियों का टर्न है ना। आप लोगों को भी डबल विदेशियों को देख खुशी होती है ना! तो सभी डबल विदेशी खुशनुमः हो? हाथ की ताली बजाओ। अभी मधुबन में तो माया नहीं आती है ना?

भारत की टीचर्स और डबल विदेशी दोनों का मेल देखो कितना अच्छा है। आप टीचर्स ने डबल विदेशियों की सीजन कम ही देखी होगी और डबल विदेशियों ने सभी टीचर्स का संगठन पहले बारी देखा होगा। दोनों के मेले में अच्छा लग रहा है ना। टीचर्स को अच्छा लगता है? डबल विदेशियों को अच्छा लगता है? अच्छा है। टीचर्स भी निमन्त्रण पर पहुंच गई हैं। ऐसा कभी सोचा था कि ऐसा निमन्त्रण आयेगा? यह भी देखो अचानक हुआ तो अच्छा लगा ना! अच्छा–सभी टीचर्स हाथ उठाओ जो निमन्त्रण पर आई हैं।

दिल्ली वालों ने भी अच्छा सन्देश दिया। बापदादा को विशेष यह खुशी है कि संगठित रूप में निर्विघ्न होकर कार्य किया, इसकी मुबारक हो। निमित्त तो कोई बनता ही है। बापदादा ने रिजल्ट देखी कि निमित्त बच्चों ने चाहे रात हो, चाहे दिन हो, चाहे खड़े हों, चाहे बैठे हों, लेकिन अथक बन लक्ष्य रखा, उस लक्ष्य की सफलता हुई। प्राइममिनिस्टर आना, प्रेजीडेंट आना या कोई का भी आना–यह लक्ष्य की सफलता है। जब लक्ष्य एक होता है कि हम सबको अंगुली देनी है और खुशी-खुशी से करना है, अथक बनना है–यह लक्ष्य प्रत्यक्ष रूप में आया, इसीलिए यह दृढ़ता सफलता की चाबी बन गई। कहाँ भी कार्य करो लेकिन यह लक्ष्य पक्का करके संगठित रूप में करो। एक भी यह नहीं कहे कि हमने कार्य नहीं किया। कोई भी कार्य करे लेकिन सबका संगठित रूप में सहयोग होना चाहिए और सबको खुशी होनी चाहिए कि हम प्रोग्राम कर रहे हैं। ऐसे नहीं कि फलाने कर रहे हैं, हम तो देख रहे हैं, नहीं। हम देखने वाले नहीं हैं, करने वाले हैं। चाहे मन्सा, चाहे वाचा, चाहे कर्मणा। छोटे बड़े जो भी हैं, चाहे स्टेज पर कार्य करें, चाहे घर बैठे मन्सा सेवा करें, वाचा सेवा करें, लेकिन सबको सेवा में सहयोग की अंगुली देनी ही है।

दिल्ली को वरदान है और उसमें भी आदि रत्न जगदीश को वरदान

है–स्थापना के कार्य में। इस बारी बापदादा ने देखा एक भी दिल्ली का सेन्टर ऐसे नहीं रहा जिसका कोई न कोई सहयोग नहीं हो। 100 से ही ज्यादा होंगे, दूर वाले स्थान की बात छोड़ो, लेकिन जो दिल्ली में थे उनमें से हर एक ने अपने खुशी से सेवा ली और प्रैक्टिकल किया तो यही सफलता का साधन है। ऐसे था ना? जगदीश से पूछते हैं। तो कहाँ भी करो, पहले सबको मिलाओ। चाहे मीटिंग करो, चाहे फोन में बात करो, समय नहीं हो तो फोन में ही मीटिंग हो सकती है। इन्होंने भी मीटिंग की, एक ही दिल्ली है ना तो दिल्ली में मीटिंग होना सहज है। लेकिन एक बात यह समझ लो कि जहाँ संगठन की शक्ति है वहाँ विजय है। बाकी विघ्न तो आने ही हैं। नहीं तो विघ्न-विनाशक नाम क्यों रखा है! विघ्न विनाशक का अर्थ क्या है? विघ्न आवे और विनाश करो। यह तो होना ही है। विघ्नों का काम है आना और आपका काम है विनाशक बनना। इसकी परवाह नहीं करो। यह खेल है। खेल में खेल और खेल देखने में तो मजा है ना।

दूसरी बात सभी यह ध्यान रखें कि जहाँ भी जो भी सहयोगी आत्मायें हैं, मानों लण्डन में कोई प्रोग्राम करते हैं और अमेरिका में कोई नजदीक वाला सहयोगी विशेष आत्मा है, तो ऐसे टाइम पर जो जहाँ सहयोगी हो सकते हैं, जैसा कार्य है उस अनुसार सहयोगी आत्माओं को निमित्त बनाओ। जिसको बापदादा कहते हैं छोटे माइक। उसका भी प्रभाव पड़ता है, और जो सम्पर्क में आते हैं उन्हों को समय प्रति समय सहयोगी बनाते रहो। सिर्फ कान्फ्रेन्स होवे तो आप जाओ, आओ और फिर अपनी सेवा में लग जाओ। नहीं। नई-नई सेवा करते रहते हो और जो पुरानी आत्मायें, सम्पर्क में आने वाली हैं उनके लिए फुर्सत कम निकालते हो। अब ऐसा सहयोगियों का ग्रुप तैयार करो। कहाँ भी हो, चाहे विदेश में हो तो इन्डिया में उसका लाभ ले सकते हो या विदेश का विदेश में, इन्डिया का इन्डिया में, लेकिन सहयोगियों से लाभ लो।

दिल्ली वाले हाथ उठाओ। बहुत अच्छा। साथ भी एक दो को अच्छा दिया है। बृजमोहन कहाँ है। देखो निमित्त बनने वालों के हाँ जी, हाँ जी करने से, एक दो के सहयोग से सफलता समीप आई। इसलिए इस पाठ को सदा याद रखना। स्वभाव-संस्कारों को सेवा के समय देखो ही नहीं। देखते हैं ना–इसने यह किया, इसने यह कहा –तो सफलता दूर हो जाती है। देखो ही नहीं। बहुत

अच्छा, बहुत अच्छा। हाँ जी और बहुत अच्छा, यह दो शब्द हर कार्य में यूज़ करो। स्वभाव वैरायटी हैं और रहने भी हैं। स्वभाव को देखा तो सेवा खत्म। बाबा करा रहा है, बाबा को देखो, बाबा का काम है। इसकी ड्यूटी नहीं है, बाबा की है। तो बाप में तो स्वभाव नहीं है ना। तो स्वभाव देखने नहीं आयेगा। बाकी दिल्ली ने एक अच्छा नक्शा तैयार कर दिया। तो बापदादा भी दिल्ली वालों को मुबारक देते हैं।

फारेन का जो स्नेह मिलन (आबू फोरम वा रिट्रीट) का प्रोग्राम चला, वह भी हर वर्ष सफलता मिल रही है। फाउण्डेशन तैयार हो रहा है। बापदादा के घर में धरनी तैयार होती है। बाकी बीज को बढ़ाना, यह आप लोगों का अपने-अपने स्थान का काम है। बापदादा ने यहाँ मधुबन में धरनी भी तैयार की, बीज भी डाला अभी पानी देना, फल निकालना आपका काम है। निकलेंगे फल। सिर्फ एक ग्रुप बनाओ जो लिस्ट को देख करके सम्पर्क करता रहे। नई-नई सेवाओं में बिजी हो जाते हो ना तो यह थोड़ा ढीला हो जाता है। बाकी डबल विदेशियों की वृद्धि भी है और विधि भी बहुत अच्छी बनाते जाते हो इसलिए निमित्त जनक को और आप सब राइट हैण्डस को, सभी ब्राह्मण परिवार की तरफ से मुबारक हो। अच्छा।

सब खुश हैं और खुश सदा रहने वाले हैं। ऐसे है ना! बापदादा ठीक कहता है या कोई पेपर आयेगा तो चेहरा बदल जायेगा? नहीं, बदले नहीं। उस समय पता है क्या होता है? बापदादा को क्या दिखाई देता है? जैसे आजकल का फैशन है – स्वांग बनाते हैं तो और शक्ल (मास्क) लगा देते हैं ना। उस समय जैसे आप लोगों का चेहरा ओरीज्नल नहीं होता, मास्क लगा देते हो। कोई लोभ का कोई मोह का, कोई अभिमान का, कोई मैं पन का, कोई मेरे पन का, चेहरे ही बदल जाते हैं। फिर परेशान होते हैं ना। दूसरा फेस अगर लगा लो तो परेशान होते हैं ना। गर्मी लगती है ना, यह क्या पहना है तो और फेस नहीं लगाओ। अपना ओरीज्नल स्वरूप का चेहरा सदा रखो। बापदादा के पास हर एक के बहुत फोटो हैं। यहाँ साकार दुनिया में तो जगह ही नहीं है जो आपके फोटो रखें।

अच्छा–एक सेकण्ड में बिल्कुल बाप समान अशरीरी बन सकते हो? तो एक सेकण्ड में फुल स्टॉप लगाओ और अशरीरी स्थिति में स्थित हो जाओ।

(बापदादा ने 3 मिनट ड्रिल कराई) अच्छा–यह सारे दिन में बार-बार अभ्यास करते रहो।

चारों ओर के सर्व मायाजीत, प्रकृतिजीत, साक्षीपन के तख्तनशीन, साथी के साथ का सदा अनुभव करने वाले, सदा दृढ़ता से सफलता को गले का हार बनाने वाले, सदा बाप समान लाइट रहने वाले, सदा अपने माइट द्वारा विश्व को दु:ख-अशान्ति की कमजोरी से छुड़ाने वाले ऐसे मास्टर सुख के सागर, खुशी के सागर, प्रेम के सागर, ज्ञान के सागर बाप समान बच्चों को यादप्यार और नमस्ते।

6-3-97

शिव जयन्ती की गिफ्ट – मेहनत को छोड़ मुहब्बत के झूले में झूलो

आज स्वयं शिव पिता अपने चारों ओर के आये हुए बच्चों से अपनी जयन्ति मनाने आये हैं। कितना बच्चों का भाग्य है जो स्वयं बाप मिलने और मनाने आये हैं। दुनिया वाले तो पुकारते रहते हैं – आओ, कब आयेंगे, किस रूप में आयेंगे, आह्वान करते रहते हैं और आप बच्चों से स्वयं बाप मनाने के लिए आये हैं। ऐसा विचित्र दृश्य कभी स्वप्न में भी नहीं सोचा होगा, लेकिन आज साकार रूप में मनाने के लिए भाग-भाग कर पहुंच गये हो। बाप भी चारों ओर के बच्चों को देख हर्षित होते हैं – वाह सालिग्राम बच्चे वाह! वाह साकार स्वरूपधारी होवनहार फरिश्ता सो देवता बच्चे वाह! भक्त बच्चों और आप ज्ञानी तू आत्मा बच्चों में कितना अन्तर है। भगत भावना का, अल्पकाल का फल पाकर खुश हो जाते हैं। वाह-वाह के गीत गाते रहते हैं और आप ज्ञानी तू आत्मायें बच्चे थोड़ा सा अल्पकाल का फल नहीं पाते लेकिन बाप से पूरा वर्सा ले, वर्से के अधिकारी बन जाते हो। तो भक्त आत्मायें और ज्ञानी तू आत्मा बच्चों में कितना अन्तर है! मनाते भक्त भी हैं और मनाने आप भी आये हैं लेकिन मनाने में कितना अन्तर है! शिव जयन्ती मनाने आये हो ना! भाग-भाग कर आये हैं कोई अमेरिका से, कोई लण्डन से, कोई आस्ट्रेलिया से, कोई एशिया से, कितना स्नेह से आकर पहुंचे हैं। तो बापदादा, बाप की जयन्ती साथ में बच्चों की भी जयन्ती है, तो बाप के साथ बच्चों के भी जयन्ती की मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो। क्योंकि अकेला बाप इस साकार दुनिया में सिवाए बच्चों के कोई भी कार्य कर नहीं सकता। इतना बच्चों से प्यार है। अकेला कर ही नहीं सकता। पहले बच्चों को निमित्त बनाते फिर बैकबोन होकर वा कम्बाइन्ड होकर, करावनहार होकर निमित्त बच्चों से कार्य कराते हैं। साकार दुनिया में अकेला, बच्चों के बिना नहीं पसन्द करता। निराकारी दुनिया में तो आप बच्चे बाप को अकेला छोड़कर चले जाते हो। बाप की आज्ञा से ही जाते हो लेकिन साकार दुनिया में बाप बच्चों के बिना रह नहीं सकते। बच्चे जरूर साथ चाहिए। बच्चों का भी वायदा है साथ रहेंगे, साथ चलेंगे – सिर्फ निराकारी दुनिया तक।

बापदादा देख रहे थे कि सभी बच्चों को बाप की जयन्ती मनाने का कितना

उमंग-उत्साह है। तो बाप भी देखो बच्चों के स्नेह में आपके साथ साकार शरीर का लोन लेकर पहुंच गये हैं। इसको कहते हैं अलौकिक प्यार। बच्चे बाप के बिना नहीं रह सकते और बाप बच्चों के बिना नहीं रह सकते। प्यार भी अति है और फिर न्यारे भी अति हैं, इसीलिए बाप की महिमा ही है न्यारा और प्यारा। बच्चे बाप के लिए बहुत प्रकार की गिफ्ट चाहे कार्ड, चाहे कोई चीज़ें, चाहे दिल के उमंग के पत्र, जो भी लाये हैं बाप के पास आज के दिन वतन में सब गिफ्ट का म्युजियम लगा हुआ है। आपका म्युजियम है सेवा का और बाप का म्युजियम है स्नेह का। तो जो भी सभी लाये हैं वा भेजे हैं सबका स्नेह सम्पन्न गिफ्ट बाप के पास अभी भी म्युजियम लगा हुआ है। जिन्हों को देख-देख बाप हर्षाते रहते हैं। चीज़ बड़ी नहीं है लेकिन जब चीज़ में स्नेह भर जाता है तो वह छोटी चीज़ भी बहुत महान बन जाती है। तो बापदादा चीज को नहीं देखते हैं, कागज के कार्ड को या पत्र को नहीं देखते हैं लेकिन उसमें समाये हुए दिल के स्नेह को देखते हैं। इसीलिए कहा कि बाप के पास स्नेह का म्युजियम है। ऐसा म्युजियम आपके वर्ल्ड में नहीं है। है ऐसा म्युजियम? नहीं है। जब बाप एक-एक प्यार की गिफ्ट को देखते हैं तो देखते ही बच्चे की सूरत उसमें दिखाई देती है। ऐसा कैमरा है आपके पास? नहीं है। गिफ्ट को देखते हुए बापदादा को एक शुभ संकल्प उठा, बतायें? करना पड़ेगा। करेंगे, तैयार हैं? सोचना नहीं।

बापदादा को संकल्प उठा यह गिफ्ट तो बाप के पास पहुंच गई लेकिन साथ में बापदादा को एक और भी गिफ्ट चाहिए। आप लोगों की गिफ्ट बहुत अच्छी है लेकिन बापदादा को और भी चाहिए। तो देंगे गिफ्ट? वैसे भी यह जो यादगार मनाते हैं, शिव जयन्ती अर्थात् कुछ न कुछ अर्पण करते हैं। बलिहार जाते हैं। तो बापदादा ने सोचा, बलिहार तो सब बच्चे गये हैं। बलिहार हो गये हैं या अभी थोड़ा-थोड़ा अपने पास सम्भालकर रखा है? आज के दिन व्रत भी लेते हैं। तो बापदादा को संकल्प आया कि बच्चे जो कभी-कभी थोड़ा सा चलते-चलते थक जाते हैं, मेहनत बहुत महसूस करते हैं या निरन्तर योग लगाना मुश्किल अनुभव करते हैं, सोचते हैं हो तो जायेगा.... बाप को दिलासे देते हैं – आप फिकर नहीं करो, हो जायेगा। लेकिन बापदादा को बच्चों की थकावट वा अकेलापन या कभी-कभी, कोई-कोई थोड़ा सा दिलशिकस्त भी हो जाते हैं, पता नहीं हमारा भाग्य है या नहीं है .... कभी-कभी ऐसा सोचते हैं तो यह बाप

को अच्छा नहीं लगता। सबसे ज्यादा बाप को बच्चों की मेहनत अच्छी नहीं लगती। मालिक और मेहनत! बाप के भी बालक सो मालिक हैं। भगवान के भी मालिक और फिर मेहनत करें! तो अच्छा लगेगा? सुनना भी अच्छा नहीं लगता। तो बाप को संकल्प आया कि बच्चे बर्थ डे की गिफ्ट तो जरूर देते ही हैं तो क्यों नहीं आज के दिन सभी बच्चे यह गिफ्ट के रूप में दें। वह स्थूल गिफ्ट जो दी वह तो वतन में इमर्ज हो गई, लेकिन निराकारी दुनिया में तो यह गिफ्ट इमर्ज नहीं होगी। वहाँ तो संकल्प की गिफ्ट पहुंचती है। तो बाप को संकल्प आया कि आज के दिन सब बच्चों से गिफ्ट लेनी है। तो गिफ्ट देंगे या देकर फिर वहाँ जाकर वापस ले लेंगे? कहेंगे, मधुबन का मधुबन में रहा और अपने देश में अपना देश है, ऐसे तो नहीं करेंगे? बच्चे बड़े चतुर हो गये हैं। बाप को कहते हैं कि हम चाहते तो नहीं हैं वापस आये, लेकिन आ जाती है। आ जाती है तो आप स्वीकार क्यों करते हो? आ जाती है यह राइट है, लेकिन कोई चीज़ आपको पसन्द नहीं है और कोई जबरदस्ती भी दे तो आप लेंगे या वापस दे देंगे? वापस देंगे ना? तो स्वीकार क्यों करते हो? माया तो वापस लायेगी लेकिन आप स्वीकार नहीं करो। ऐसी हिम्मत है? सोचकर कहो। फिर वहाँ जाकर नहीं कहना - बाबा क्या करूं, चाहते नहीं हैं लेकिन हो गया। ऐसे पत्र तो नहीं लिखेंगे? आपकी हिम्मत और बाप की मदद। हिम्मत कम नहीं करना फिर देखो बाप की मदद मिलती है या नहीं। सभी को अनुभव भी है कि हिम्मत रखने से बाप की मदद समय पर मिलती है और मिलनी ही है, गैरन्टी है। हिम्मत आपकी मदद बाप की। तो संकल्प क्या हुआ? चेहरे देख रहे हैं – हिम्मत है या नहीं है! हिम्मत वाले तो हो, क्योंकि अगर हिम्मत नहीं होती तो बाप के बनते नहीं। बन गये – इससे सिद्ध होता है कि हिम्मत है। सिर्फ छोटी सी बात करते हो कि समय पर हिम्मत को थोड़ा सा भूल जाते हो। जब कुछ हो जाता है ना तो पीछे हिम्मत वा मदद याद आती है। समय पर सब शक्तियां, समय प्रमाण यूज करना इसको कहा जाता है ज्ञानी तू आत्मा, योगी तू आत्मा।

बापदादा को एक बात की बहुत खुशी है, पता है किस बात की? बोलो। (बहुतों ने सुनाया) सब ठीक बोल रहे हो लेकिन बाप का संकल्प और है। आप बहुत गुह्य सुना रहे हो, नालेजफुल हो गये हो ना।

बापदादा खुश हो रहे थे कि कई बच्चों ने पत्र और चिटकी लिखी है कि

हम 108 में आयेंगे, बहुत चिटकियां आई हैं। बापदादा ने सोचा जब इतने 108 में आयेंगे, तो 108 की माला पांच लड़ियों की बनानी पड़ेगी। तो 5-6-7-8 लड़ियों की माला बनायें ना? जिन्होंने संकल्प किया है, लक्ष्य रखा है बहुत अच्छा है। लेकिन सिर्फ इस संकल्प को बीच-बीच में दृढ़ करते रहना। ढीला नहीं करना। ऐसे तो नहीं कहेंगे माया आ गई – अब पता नहीं आयेंगे या नहीं! पता नहीं, पता नहीं...नहीं करना। पता कर लिया, आना ही है। दृढ़ता का ठप्पा लगाते रहना। हाँ मुझे आना ही है, कुछ भी हो जाए, मेरा निश्चय अटल है, अखण्ड है। ऐसा अटल-अखण्ड निश्चय है? तो माया को हिलाने के लिए भेजें? नहीं? डरते हो? माया आपसे डरती है और आप माया से डरते हो? माया अपने दरवाजे देखती है, यहाँ खुला हुआ है, यहाँ खुला हुआ है। ढूंढती रहती है। आप घबराते क्यों हो? माया कुछ नहीं है। कुछ नहीं कहो तो कुछ नहीं हो जायेगी। आ नहीं सकती, आ नहीं सकती, तो आ नहीं सकती। क्या करें....? तो माया का दरवाजा खोला, आह्वान किया। तो अच्छी बात है कि बहुत बच्चों ने 108 में आने की प्रामिस किया है। किया है ना? जिन्होंने कहा है कि हम 108 में आयेंगे - वह लम्बा हाथ उठाओ। अच्छी तरह से ड्रिल करो। बहुत अच्छा, मुबारक हो। यह नहीं सोचो कि 108 में कितने आयेंगे, हम कहाँ आयेंगे – यह नहीं सोचो। पहले गिनती करने लग जाते हैं – दादी आयेंगी, दीदी आयेंगी, फिर दादे भी आयेंगे, एडवांस पार्टी वाले भी आयेंगे। हमारा नम्बर आयेगा या नहीं, पता नहीं! बापदादा ने कहा कि बापदादा 8-10 लड़ों की माला बना देंगे, इसलिए आप यह चिंता नहीं करो। औरों को नहीं देखो, आपको नम्बर मिल ही जाना है, यह बाप की गैरन्टी है। आप किनारा नहीं करना। माला के बीच में धागा खाली नहीं करना। एक दाना बीच से टूट जाए, निकल जाए तो माला अच्छी नहीं लगेगी। सिर्फ यह नहीं करना, बाकी बाबा की गैरन्टी है आप जरूर आयेंगे।

आज तो मनाने आये हैं, मुरली चलाने थोड़ेही आये हैं। तो और जो भी हो वह माला में आ जाओ, 108 की माला में सबको वेलकम है। यह तो भक्ति मार्ग वालों ने 108 की माला बना ली। बापदादा तो कितनी भी बढ़ा सकता है। सिर्फ इसमें गिफ्ट तो बाप जरूर लेगा, गिफ्ट को नहीं छोड़ेगा। छोटी सी गिफ्ट है कोई बड़ी नहीं है, क्योंकि बाप ने सभी बच्चों का 6 मास का चार्ट देखा। तो

क्या देखा? अगर कोई भी बच्चे थोड़ा भी नीचे-ऊपर होते हैं, अचल से हलचल में आते हैं तो उसका कारण सिर्फ 3 बातें मुख्य हैं, वही तीन बातें भिन्न-भिन्न समस्या या परिस्थिति बनकर आती हैं। वह तीन बातें क्या हैं?

अशुभ वा व्यर्थ सोचना। अशुभ वा व्यर्थ बोलना और अशुभ वा व्यर्थ करना। सोचना, बोलना और करना – इसमें टाइम वेस्ट बहुत होता है। अभी विकर्म कम होते हैं, व्यर्थ ज्यादा होते हैं। व्यर्थ का तूफान हिला देता है और पहले सोच में आता है, फिर बोल में आता है, फिर कर्म में आता है और रिजल्ट में देखा तो किसी का बोल और कर्म में नहीं आता है लेकिन सोचने में बहुत आता है। जो समय बनाने का है, वह सोचने में बीत जाता है। तो बापदादा आज यह तीन बातें सोचना, बोलना और करना – इनकी गिफ्ट सभी से लेने चाहते हैं। तैयार हैं? जिन्होंने दे दी वह हाथ उठाओ। हाथ का वीडियो अच्छी तरह से एक-एक साइड का निकालो। बड़ा हाथ उठाओ। ड्रिल नहीं करते हो इसीलिए मोटे हो जाते हो। अच्छा–सभी ने यह दे दिया। वापस नहीं लेना। यह नहीं कहना कि मुख से निकल गया, क्या करें? मुख पर दृढ़ संकल्प का बटन लगा दो। दृढ़ संकल्प का बटन तो है ना? क्योंकि बापदादा को बच्चों से प्यार है ना। तो प्यार की निशानी है, प्यार वाले की मेहनत देख नहीं सकते। बापदादा तो उस समय यही सोचते कि बापदादा साकार में जाकर इनको कुछ बोले, लेकिन अब तो आकारी, निराकारी है। बिल्कुल सभी मेहनत से दूर मुहब्बत के झूले में झूलते रहो। जब मुहब्बत के झूले में झूलते रहेंगे तो मेहनत समाप्त हो जायेगी। मेहनत को खत्म करें, खत्म करें नहीं सोचो। सिर्फ मुहब्बत के झूले में बैठ जाओ, मेहनत आपेही छूट जायेगी। छोड़ने की कोशिश नहीं करो, बैठने की, झूलने की कोशिश करो।

शिव जयन्ती अर्थात् बच्चों के मेहनत समाप्त की जयन्ती। ठीक है ना? बाप को भी बच्चों पर फेथ है। पता नहीं कैसे कोई-कोई किनारा कर लेते हैं जो बाप को भी पता नहीं पड़ता। छत्रछाया के अन्दर बैठे रहो। ब्राह्मण जीवन का अर्थ ही है झूलना, माया में नहीं। माया भी झुलाती है। अमृतवेले देखो माया ऐसे झुलाती है जो सूक्ष्मवतन में आने के बजाए, निराकारी दुनिया में आने के बजाए निद्रालोक में चले जाते हैं। कहते हैं योग डबल लाइट बनाता है लेकिन माथा भारी हो जाता है। तो माया भी झूला झुलाती है लेकिन माया के झूले में नहीं

झूलना। आधाकल्प तो माया के झूले में खूब झूलकर देखा है ना। क्या मिला? मिला कुछ? थक गये ना! अभी अतीन्द्रिय सुख के झूले में झूलो, खुशी के झूले में झूलो। शक्तियों की अनुभूतियों के झूले में झूलो। इतने झूले आपको मिले हैं जो यहाँ के प्रिन्स-प्रिन्सेज को भी नहीं होंगे। चाहे जिस झूले में झूलो। अभी प्रेम के झूले में झूलो, अभी आनंद के झूले में झूलो। अभी ज्ञान के झूले में झूलो। कितने झूले हैं! अनगिनत। तो झूले से उतरो नहीं। जो लाडले होते हैं ना तो मां-बाप यही चाहते हैं कि बच्चे का पांव मिट्ठी में नहीं पड़े या गोदी में हो या झूले में हो या गलीचों में हो। मिट्टी में पांव नहीं जाये। ऐसे होता है ना? तो आप कितने लाडले हो! आप जैसा लाडला कोई है? परमात्म लाडले बच्चे अगर देहभान में आते हैं तो देह क्या है? मिट्टी है ना! देह को क्या कहते हैं? मिट्टी, मिट्टी में मिल जायेगी। तो यह मिट्टी है ना। मिट्टी में पांव क्यों रखते हो? मिट्टी अच्छी लगती है? कई बच्चों को मिट्टी अच्छी लगती है, कई मिट्टी खाते भी हैं। लेकिन आप नहीं खाना, पांव भी नहीं रखो। संकल्प आना अर्थात् पांव रखना। संकल्प में भी देह-भान नहीं आवे। सोचो, याद रखो कि हम कितने लाडले हैं, किसके लाडले हैं! सतयुग में भी परमात्म लाडले नहीं होंगे। दिव्य आत्माओं के लाडले होंगे। लेकिन इस समय परमात्म बाप के लाडले हो। तो बच्चों ने हिम्मत के हाथ से गिफ्ट दी इसलिए बापदादा उसकी थैंक्स करते हैं, शुक्रिया, धन्यवाद।

अच्छा – आज डबल विदेशियों का विशेष दिन है। आये भी बहुत हैं। जो डबल विदेशी बैठे हैं वह हाथ उठाओ। हाल में पौना हिस्सा डबल विदेशी हैं। बाप भी स्वागत करते हैं भले आये, सदा आओ। देखो, बच्चे बढ़ते जाते हैं और पृथ्वी छोटी होती जाती है। जब यह हाल बना था तो सोचते थे इतना हाल भरेगा? अभी हाल तो क्या लेकिन कितनी नीचे गीता पाठशालायें बन गई हैं। बहुत बच्चे नीचे बैठे हैं। (मधुबन में मुरली सुन रहे हैं) अभी देखो नीचे (शान्तिवन) का हाल बनाया तो भी कहते हैं कि संख्या देनी पड़ेगी। इतना बड़ा हाल क्यों बनाया? संख्या देने के लिए या फ्रीडम देने के लिए? इससे क्या सिद्ध होता है? आप सभी को विश्व का मालिक बनना है। तो विश्व का मालिक बनने वाले इतने बड़े, उनके लिए सब छोटा हो जाता है। हाल तो कुछ भी नहीं है, सारी विश्व आपको मिलनी ही है।

(बापदादा ने ड्रिल कराई) मन के मालिक हो ना! तो सेकण्ड में स्टॉप, तो स्टॉप हो जाए। ऐसा नहीं आप कहो स्टॉप और मन चलता रहे, इससे सिद्ध है कि मालिकपन की शक्ति कम है। अगर मालिक शक्तिशाली है तो मालिक के डायरेक्शन बिना मन एक संकल्प भी नहीं कर सकता। स्टॉप, तो स्टॉप। चलो, तो चले। जहाँ चलाने चाहो वहाँ चले। ऐसे नहीं कि मन को बहुत समय की व्यर्थ तरफ चलने की आदत है, तो आप चलाओ शुद्ध संकल्प की तरफ और मन जाये व्यर्थ की तरफ। तो यह मालिक को मालिकपन में चलाना नहीं आता। यह अभ्यास करो। चेक करो स्टॉप कहने से, स्टॉप होता है? या कुछ चलकर फिर स्टॉप होता है? अगर गाड़ी में ब्रेक लगानी हो लेकिन कुछ समय चलकर फिर ब्रेक लगे, तो वह गाड़ी काम की है? ड्राइव करने वाला योग्य है कि एक्सीडेंट करने वाला है? ब्रेक, तो फौरन सेकण्ड में ब्रेक लगनी चाहिए। यही अभ्यास कर्मातीत अवस्था के समीप लायेगा। संकल्प करने के कर्म में भी फुल पास। कर्मातीत का अर्थ ही है हर सबजेक्ट में फुल पास। 75 परसेन्ट, 90 परसेन्ट भी नहीं, फुल पास। यह अवस्था तब आयेगी जब अपने अनुभव में सर्व शक्तियों का स्टॉक प्रैक्टिकल यूज़ में आवे। पहले भी सुनाया – सर्वशक्तियां बाप ने दी, आपने ली लेकिन समय पर यूज़ होती हैं या नहीं, सिर्फ स्टॉक ही है! सिर्फ स्टॉक है लेकिन समय पर यूज नहीं हुआ तो होना या न होना एक ही बात है। यह अनुभव करो परिस्थिति बहुत नाजुक है लेकिन आर्डर दिया मन बुद्धि को कि न्यारे होकर खेल देखो तो परिस्थिति आपके इस अचल स्थिति के आसन के नीचे दब जायेगी। सामना नहीं करेगी। आसन नहीं छोड़ो, आसन में बैठने का अभ्यास ही सिंहासन प्राप्त करायेगा। अगर आसन पर बैठना नहीं आता है, कभी-कभी बैठना आता है तो सिंहासन में भी कभी-कभी बैठेंगे। आसन ही सिंहासन प्राप्त कराता है। अब आसन है फिर सिंहासन है। हलचल वाला आसन पर एकाग्र होकर बैठ नहीं सकता। इसीलिए कहा व्यर्थ समाप्त, अशुभ समाप्त – तो अचल हो जायेंगे और अचल स्थिति के आसन पर सहज और सदा स्थित हो सकेंगे। देखो आप सबका यादगार यहाँ अचलघर है। अचलघर देखा है ना? यह किसका यादगार है? आप सबके स्थिति का यादगार यह अचलघर है। अनुभव करो, ट्रायल करते जाओ, यूज करते जाओ। ऐसे नहीं समझ लेना, हाँ सब शक्तियां तो हैं ही। समय पर यूज़ हों। यूज़ नहीं करेंगे तो

समय पर धोखा मिल सकता है। इसलिए छोटी-मोटी परिस्थिति में यूज करके देखो। परिस्थितियां तो आनी ही हैं, आती भी हैं। पहले भी बापदादा ने कहा है कि वर्तमान समय अनुभव करते हुए चलो। हर शक्ति का अनुभव करो, हर गुण का अनुभव करो। ऐसे अनुभवी मूर्त बनो जो कोई भी आवे तो आपके अनुभव की मदद से उस आत्मा को प्राप्ति हो जाए। दिन-प्रतिदिन आत्मायें शक्तिहीन हो रही हैं, होती रहेंगी। ऐसी आत्माओं को आप अपनी शक्तियों की अनुभू-तियों से सहारा बन अनुभव करायेंगे। अच्छा। मालिक हैं ना! तो मालेकम सलाम, बाप कहते हैं – मालिकों को सलाम। अच्छा।

(66 देशों से बाबा के बच्चे आये हैं) 66 देशों के बच्चों को पदमगुणा मुबारक हो। आखिर तो विश्व में आप ही चारों ओर फैल जायेंगे। जहाँ देखेंगे वहाँ सफेद वस्त्रधारी फरिश्ते दिखाई देंगे। अच्छा।

अमेरिका:- अमेरिका के कितने देशों से आये हैं? (19) 19 देशों के हाथ उठाओ। अमेरिका क्या जलवा दिखायेंगे? देखो नाम बहुत अच्छा है- अमेरिका माना आ मेरे आ। तो अमेरिका सभी खोये हुए बच्चों को आ मेरे, आ मेरे कहके बाप का बना देंगे। ऐसे है ना? बढ़ रहे हैं ना वहाँ? बढ़ते रहेंगे।

अफ्रीका:- (अफ्रीका के 13 देश वाले आये हैं) सब हाथ उठाओ। इसमे साउथ अफ्रीका, मौरीशियस भी है? अफ्रीका क्या करेंगे? अफ्रीका आफरीन के लायक बनेंगे। सेवा का ऐसा नगाड़ा बजायेंगे जो चारों ओर से यही निकले आफरीन है, आफरीन है।

एशिया:- (एशिया के 13 देशों से आयें हैं) एशिया क्या करेगा? सर्व आत्माओं की आशायें पूरी करे। जब सब आत्माओं की आशायें पूरी होंगी तो सब कहेंगे वाह एशिया वाह!

यूरोप:- (यूरोप के 17 देशों से आये हैं) उसमें लण्डन भी है? यूरोप तो विदेश का फाउण्डेशन है। तो फाउण्डेशन सदा ही सबकी नज़रों में आता है कि फाउण्डेशन कितना पक्का है! यूरोप से ही फाउण्डेशन फैला है और भिन्न-भिन्न शाखायें फैली हैं। पहले नम्बर में दो पत्ते निकलते हैं, जब बीज डालते हैं तो दो पत्ते निकलते हैं। तो पहले सेन्टर कौन से निकले? लण्डन और साथ में हांगकांग। तो दो पत्तों की ही कमाल हुई ना। दो पत्तों से तना निकला, तना से डालियां निकली, डालियों से शाखायें निकली और डबल विदेश का वृक्ष हरा

भरा हो गया। तो यूरोप के दो पत्ते लण्डन और हांगकांग को बहुत-बहुत पदमगुणा मुबारक हो। (यूरोप वाले हाथ उठाओ) पहले पत्ते हैं तो विस्तार तो होगा ना।

मिडिल ईस्टः- (3 देशों से आये हैं) यह अच्छे हैं, अभी-अभी आगे बढ़ रहे हैं। अभी थोड़े हैं, अभी मिडिल को मॉडल लेना चाहिए। इतनी सेवा बढ़ाओ जो सब देश वाले आपको मिडिल नहीं, मॉडल लेने वाले कहें। बढ़ायेंगे ना? विश्व का कल्याण होना है तो मिडिल वालों का कल्याण तो करना ही है। नहीं तो विश्व का एक कोना छूटा रह जायेगा तो अच्छा नहीं है। इसीलिए जब भी कोई आपको कहे ना मिडिल ईस्ट है तो कहो नहीं मॉडल इस्ट है।

रशियाः- रशिया के टोटल हाथ उठाओ। अच्छे हैं। रशिया वाले क्या करेंगे? रशिया में ज्यादा समय कम्युनिस्ट का राज्य रहा है और अभी रशिया में देवताओं का राज्य होगा क्योंकि भारत के नजदीक है ना। तो भारत के आस-पास आ जायेगा, स्वर्ग बन जायेगा। जो दूर दूर देश हैं, वह दूर होंगे। रशिया नजदीक है, तो देवताओं का राज्य अभी तो नहीं है लेकिन बहुत समय कम्युनिस्ट का रहा है ना, अभी स्वतन्त्र है। अभी फिर राजा-रानी का राज्य होगा। राजा-रानी का राज्य पसन्द है? बहुत अच्छा। वृद्धि बहुत जल्दी-जल्दी हो रही है। बापदादा सेवा से खुश हैं। रशिया वालों ने कहा था ना कि हम बापदादा को फूलों की पंखुडियां डालेंगे, तो ऐसे हाथ कर लो, डल गई और ही खुशबू आ गई। दिल के स्नेह के पुष्प बाप के पास पहुंच गये। अच्छा।

आस्ट्रेलिया- आस्ट्रेलिया हाथ उठाओ। आस्ट्रेलिया के कम आये हैं। आस्ट्रेलिया को अभी फर्स्ट जाना है। आस्ट्रेलिया में बापदादा के बहुत अच्छे आदि रत्न हैं लेकिन अभी थोड़े गुप्त हो गये हैं। भट्ठी में चले गये हैं। अभी रिट्रीट हाउस मिला है ना तो अभी बाहर आयेंगे। फिर आस्ट्रेलिया का झुण्ड दिखाई देगा। आस्ट्रेलिया नक्शे में बहुत बड़ा है तो ब्राह्मण परिवार में भी बड़ा होगा। थोड़ा भट्ठी में पक रहे हैं। आस्ट्रेलिया से बापदादा का बहुत प्यार है क्योंकि लण्डन और आस्ट्रेलिया की रेस थी, लण्डन से भी ज्यादा संख्या आस्ट्रेलिया की थी, अभी गुप्त हो गये हैं। प्रत्यक्ष होंगे। अभी अननोन हैं, वेलनोन हो जायेंगे। अच्छा। डबल विदेशी रिफ्रेश हो गये? आपके लिए खास बापदादा आये हैं। डबल विदेशियों से डबल प्यार है।

फ़र्स्ट टाइम वालों से:- फर्स्ट टाइम वाले हाथ उठाओ। बहुत हैं। आज बाप की जयन्ती है तो आप जो पहली बारी आये हैं, तो बाप उन्हों का भी विशेष आज के दिन नया बर्थ डे मना रहे हैं। बर्थ डे का गीत गाओ। अच्छा है। अलौकिक बर्थ डे की पदमगुणा मुबारक हो, बधाई हो। अच्छा।

(आज शिवबाबा के बर्थ डे पर ब्रह्मा बाबा ने कौन सी गिफ्ट बाप को दी?) ब्रह्मा बाप ने सब पहले ही दे दी है, कुछ रखा ही नहीं। जब सम्पूर्ण बनें तब सब दे दी। उसके पास कुछ है ही नहीं। बच्चों के पास छिपा हुआ है तब तो देंगे। अभी सिर्फ ब्रह्मा बाप आप बच्चों का इन्तजार कर रहा है। रोज़ बांहे पसार कर आओ बच्चे, आओ बच्चे कहते हैं। तो बाप समान बनो और चलो वतन में। परमधाम का दरवाजा ही नहीं खोलते हैं। आपके लिए रुका हुआ है। ब्रह्मा बाबा तो बीच-बीच में कहते हैं, दरवाजा खोलो, दरवाजा खोलो। लेकिन बाप कहते हैं अभी थोड़ा रुको, थोड़ा रुको।

अच्छा–डबल विदेशी सब अच्छी तरह से मिले ना! बड़ा परिवार तो बड़े परिवार में सब बांटना पड़ता है। छोटे परिवार में तो छोटे में बांटा जाता है। बड़ा हो गया तो बड़े के अनुसार ही बांटा जाता है। आप सोचो बड़ा नहीं हो तो राज्य किस पर करेंगे! 5-10 पर करेंगे क्या? इतने 108 माला के दाने तैयार हो गये हैं, तो लोग तो चाहिए जिस पर राज्य करो। इसीलिए बड़ा परिवार होना ही है। अच्छा।

चारों ओर के अति-अति भाग्यवान बच्चे जो स्वयं शिव बाप से शिवजयन्ती मना रहे हैं, ऐसे पदमगुणा तो क्या लेकिन जितना भी ज्यादा में ज्यादा कहो वह भी थोड़ा है। ऐसे महान भाग्यवान आत्मायें, सदा बाप की आज्ञा पर हर कदम रखने वाले बाप के स्नेही और समीप आत्मायें, सदा मालिकपन के अचल आसन निवासी सो भविष्य सिंहासन निवासी श्रेष्ठ आत्माओं को, सदा बाप के साथ-साथ मौज से मुहब्बत के झूले में झूलते हुए साथ चलने वाले ऐसे बापदादा के साथी बच्चों को बापदादा का बर्थ डे की मुबारक और यादप्यार स्वीकार हो, बाप का सभी मालिकों को नमस्ते।

दादियों से:- अपने-अपने आसन पर बैठ जाओ, छोटी सी राज दरबार है ना। स्वराज्य अधिकारी राजायें अपनी दरबार में बैठ जाओ। (सभा से) आप सभी को भी राज दरबार अच्छी लगती है ना? यह संगम की दरबार है। आप

सभी भी नीचे नहीं बैठे हो, ऊपर बैठे हो। देखो यह सिंहासन पर हैं और आप सभी दिल के सिंहासन पर हैं। यह सिंहासन तो छोटा है, दिल का सिंहासन तो बहुत बड़ा है।

(निर्वैर भाई ने बापदादा को गुलदस्ता दिया और मुबारक दी) आपको भी मुबारक। सभी पाण्डवों की तरफ से यह आपकी याद ले आये इसीलिए पाण्डवों को खास मुबारक हो। शक्तियों की तरफ से तो बहुत शक्तियां आई ही हैं इसलिए बहुत-बहुत मुबारक।

आप लोगों को नशा रहता है ना कि हम सिंहासन के अधिकारी हैं? आज फरिश्ते और कल तख्तनशीन। एक एक बच्चा तख्तनशीन बनना ही है। ऐसे नहीं समझना हम शायद प्रजा में जायेंगे, नहीं। रॉयल फैमिली में आना ही है। जब बाप के बने हो तो संगमयुग के वर्से के साथ चाहे राजा बनो, चाहे रॉयल फैमिली के बनों। बनना ही है। राज्य परिवार में आना ही है। समझा।

डबल विदेशियों के बीच में भारतवासी छिप गये हैं। भारतवासी हाथ उठाओ। भारतवासी तो हर एक के मुख पर हैं ही। भारत महान है, भारत स्वर्ग है, भारत ऊंचा है। तो भारतवासी तो ऊंचे हैं ही लेकिन भारतवासी महादानी हैं, डबल विदेशियों को चांस देते हैं इसलिए **महादानी भवः।**

(बाबा भी भारत का है) बाबा विश्व का है, सिर्फ भारत का नहीं है। विश्व कल्याणकारी है, भारत का कल्याणकारी तो छोटा हो जायेगा। विश्व कल्याणकारी अर्थात् विश्व का बाप है। भारत तो हद हो जायेगी। इसलिए बाप स्वर्ग में नहीं आता, हद हो जायेगी ना। बेहद का बाप बेहद में ही रहता है। डबल विदेशी सदा सर्व वरदानों से भरपूर भव:। बापदादा जानते हैं कितनी मेहनत से एक-एक डालर कहो या जो भी मनी है, वह जमा करके आते हैं। मेहनत और मुश्किलात भारतवासियों को है, विदेशियों को तो प्लेन में बैठे और आ गये। भारतवासियों को तो ट्रेन और बसों में आना पड़ता है लेकिन एक-एक डालर जमा करने की जो टैक्ट (युक्ति) है, वह डबल विदेशियों में ज्यादा है।

शान्तिवन के लिए भी अपने पेट की रोटी बचाकरके भी कर रहे हैं। बापदादा जानते हैं खुद दाल रोटी खायेंगे, शान्तिवन में भेजेंगे। चाहे भारतवासी भी, चाहे विदेशी - सबकी ज्ञान सरोवर चाहे शान्तिवन में जान लगी हुई है। दिल से प्यार है। (आगे क्या होना है?) आगे भी हो जायेगा। शान्तिवन भी अभी पूरा बना नहीं है इसीलिए नेक्स्ट नहीं कहते हैं।

(विनाश के पहले एक-एक कान्टीनेंट में एक-एक बार बाबा आये) देखो, ड्रामा। बाप लण्डन में भी आये, लेकिन मधुबन की महिमा तो मधुबन की है। आगे चलकर क्या होता है, वह बताने से मजा खत्म हो जायेगा। इसीलिए देखो आगे क्या होता है! अच्छा, सौगात को पार्शल कर दिया! वापस नहीं लेना। अच्छा-डबल विदेशी खुश हैं? डबल विदेशी सब आराम से रहे हुए हैं? (सभी भवन फुल हैं) कोई पटरानी नहीं बने हैं? अभी पटरानी बनायेंगे। आपकी जो अटैची है ना, उसको बिस्तरा बनाना, कम से कम तकिया तो बन सकता है। यह भी दृश्य अच्छा होगा ना, अटैची का तकिया होगा, सब आराम से विष्णु के माफिक लेटे हुए होंगे। कितना अच्छा होगा। डबल विदेशियों को पटरानी जरूर बनायेंगे। देखो शुरू-शुरू में स्थापना में पहले यह सभी विशेष आत्मायें तीन फुट की जगह पर सोई हैं। चार फुट भी नहीं, तीन फुट, पट में। विशेष महारथी पट में सोते थे तो जो आदि में हुआ वह आप अन्त में करेंगे ना! कारण तो नहीं बतायेंगे कि कमर में दर्द हो गया? जब कोई भी दर्द होता है ना तो डाक्टर्स भी कहते हैं – सीधा-सीधा पट जैसा सोओ। बेड पर नहीं सोओ, संदल पर सीधा सोओ तो हेल्थ भी ठीक हो जायेगी। यह तो सब एवररेडी हैं। डबल विदेशी अर्थात् डबल एवररेडी। अच्छा। खूब मनाओ।

(बापदादा ने अपने हस्तों से झण्डा लहराया तथा सबको शिवजयन्ती की बधाईयां दी)

सभी बच्चों ने शिव पिता का झण्डा लहराया। ऐसे ही जैसे इस हाल में झण्डा लहराया है, ऐसे सारे विश्व के हाल में यह न्यारा और प्यारा झण्डा जल्दी से जल्दी लहरायेंगे। सबके मुख से, दिल से यही गीत बजेगा, आ गया, आ गया, हमारा बाप आ गया। सबकी दिल से खुशी की तालियां बजेंगी। इसलिए यह झण्डा तो निमित्त-मात्र है लेकिन बहुत ऊंचे ते ऊंचा बाप आ गया, आ गया, जो आना था वो आ गया। हम सबको ले जाने वाला आ गया, यही मन से झण्डा विश्व में लहरेगा। आप सब देखेंगे और आप सबको सफेद-सफेद फरिश्तों के रूप में देखेंगे। बाप के साथ आप सभी के भी गीत गायेंगे। हमारे पूज्य देवी-देवतायें आ गये, आ गये। सिर्फ आप थोड़ा जल्दी तैयार हो जाओ फिर बहुत जल्दी झण्डा लहरायेंगे। फिर सभी पेरशानी से छूट जायेंगे। अच्छा–सभी को प्यारे और न्यारे झण्डे की मुबारक हो।

3-4-97

पुराने संस्कारों को खत्म कर अपने निजी संस्कार धारण करने वाले एवररेडी बनो

आज बापदादा अपने चारों ओर से विश्व के बाप के लव में लवलीन और लक्की बच्चों को देख रहे हैं। हर एक बच्चे के भाग्य पर बाप को भी नाज़ है कि मेरे बच्चे वर्तमान समय इतने महान हैं जो सारे कल्प में चाहे देवता स्वरूप में, चाहे धर्म नेताओं के रूप में, चाहे महात्माओं के रूप में, चाहे पदमपति आत्माओं के रूप में किसी का भी इतना भाग्य नहीं है जितना आप ब्राह्मणों का भाग्य है। तो अपने ऐसे श्रेष्ठ भाग्य को सदा स्मृति में रखते हो? सदा यह अनहद गीत मन में गाते रहते हो कि वाह भाग्य विधाता बाप और वाह मुझ श्रेष्ठ आत्मा का भाग्य! यह भाग्य का गीत सदा आटोमेटिक बजता रहता है? बाप बच्चों को देख-देख सदा हर्षित होते हैं। बच्चे भी हर्षित होते हैं लेकिन कभी-कभी बीच में अपने भाग्य को इमर्ज करने के बजाए मर्ज कर देते हैं। जब बाप देखते हैं कि बच्चों के अन्दर अपने सौभाग्य का नशा, निश्चय मर्ज हो जाता है तो क्या कहेंगे? ड्रामा। लेकिन बापदादा सभी बच्चों को सदा ही भाग्य के स्मृति स्वरूप देखने चाहते हैं। आप भी सभी चाहते यही हैं 'लेकिन'.. बीच में आ जाता है। किसी से भी पूछो तो सब बच्चे यही लक्ष्य रख करके चल रहे हैं कि मुझे बाप समान बनना ही है। लक्ष्य बहुत अच्छा है। जब लक्ष्य श्रेष्ठ है, बहुत अच्छा है फिर कभी इमर्ज रूप, कभी मर्ज रूप क्यों? कारण क्या? बापदादा से इतने अच्छे-अच्छे वायदे भी करते हैं, रूहरिहान भी करते हैं फिर भी लक्ष्य और लक्षण में अन्तर क्यों? तो बापदादा ने रिजल्ट में देखा कि कारण क्या है? वैसे तो आप सब जानते हैं, नई बात नहीं है फिर भी बापदादा रिवाइज कराते हैं।

बापदादा ने देखा तीन बातें हैं – एक है सोचना, संकल्प करना। दूसरा है बोलना, वर्णन करना और तीसरा है कर्म में प्रैक्टिकल अनुभव में और चलन में लाना, कर्म में लाना। तो तीनों का समान बैलेन्स कम है। जब बैलेन्स होता है तो निश्चय और नशा इमर्ज होता है और जब बैलेन्स कम है तो निश्चय और नशा

मर्ज हो जाता है। रिजल्ट में देखा गया कि सोचने की गति बहुत अच्छी भी है और फास्ट भी है। बोलने में रफ्तार और नशा वह भी 75 परसेन्ट ठीक है। बोलने में मैजारिटी होशियार भी हैं लेकिन प्रैक्टिकल चलन में लाने में टोटल मार्क्स कम हैं। तो दो बातों में ठीक हैं लेकिन तीसरी बात में बहुत कम हैं। कारण? जब संकल्प भी अच्छा है, बोल भी बहुत सुन्दर रूप में हैं फिर प्रैक्टिकल में कम क्यों होता है? कारण क्या, जानते हो? हाँ या ना बोलो। जानते बहुत अच्छा हैं। अगर किसी को भी कहेंगे इस टापिक पर भाषण करो या क्लास कराओ तो कितना अच्छा क्लास करायेंगे! और बड़े निश्चय, नशे, फलक से भाषण भी करेंगे, क्लास भी करायेंगे। कराते हैं। बापदादा सबके क्लासेज़ सुनते हैं क्या-क्या बोलते हैं। मुस्कराते रहते हैं, वाह! वाह बच्चे वाह!

मूल बात है – बापदादा ने पहले भी सुनाया है यह रिवाइज कोर्स चल रहा है। तो बाप कहते हैं कि कारण एक ही है, ज्यादा भी नहीं है, एक ही कारण है और बापदादा समझते हैं कि कारण को निवारण करना मुश्किल भी नहीं है, बहुत सहज है। लेकिन सहज को मुश्किल बना देते हैं। मुश्किल है नहीं, बना देते हैं, क्यों? नशा मर्ज हो जाता है। एक ही कारण है जो भी धारणा की बातें सुनते हो, करते भी हो, चाहे शक्तियों के रूप में, चाहे गुणों के रूप में, धारणा की बातें बहुत अच्छी-अच्छी करते हो, इतनी अच्छी करते हो जो सुनने वाले चाहे अज्ञानी, चाहे ज्ञानी सुनकर बहुत अच्छा, बहुत अच्छा कहकर खूब तालियां बजाते हैं, बहुत अच्छा कहा। लेकिन, कितने बार 'लेकिन' आया? यह 'लेकिन' ही विघ्न डाल देता है। 'लेकिन' शब्द समाप्त होना अर्थात् बाप समान समीप आना और बाप के समीप आना अर्थात् समय को समीप लाना। लेकिन अभी तक 'लेकिन' शब्द कहना पड़ता है। बाप को अच्छा नहीं लगता, लेकिन कहना ही पड़ता है। तो कारण क्या? जो भी कहते हो, धारण भी करते हो, धारणा के रूप से धारण करते हो और वह धारणा किसकी थोड़ा समय, किसकी ज्यादा समय भी चलती है लेकिन धारणा प्रैक्टिकल में सदा बढ़ती चले उसके लिए यही मुख्य बात है कि जैसे द्वापर से लेकर अन्तिम जन्म तक जो भी अवगुण वा कमजोरियां हैं उसकी धारणा संस्कार रूप में बन गई हैं और संस्कार बनने के कारण मेहनत नहीं करना पड़ता। छोड़ना भी चाहते हैं, अच्छा नहीं लगता है फिर भी कहते हैं क्या करें, मेरा संस्कार ऐसा है। आप बुरा नहीं

मानना, मेरा संस्कार ऐसा है। संस्कार बना कैसे? बनाया तभी तो बना ना! तो जब द्वापर से यह उल्टे संस्कार बन गये, जिससे आप समय पर मजबूर भी होते हो फिर भी कहते हो क्या करें, संस्कार हैं। तो संस्कार सहज, न चाहते हुए भी प्रैक्टिकल में आ जाते हैं ना! किसी को क्रोध आ जाता है, थोड़े समय के बाद कहते हैं आप बुरा नहीं मानना, मेरा संस्कार है। क्रोध को संस्कार बनाया, अवगुण को संस्कार बनाया और गुणों को संस्कार क्यों नहीं बनाया है? जैसे क्रोध अज्ञान की शक्ति है और ज्ञान की शक्ति शान्ति है। सहन शक्ति है। तो अज्ञान की शक्ति क्रोध को बहुत अच्छी तरह से संस्कार बना लिया है और यूज़ भी करते रहते हो फिर माफी भी लेते रहते हो। माफ कर देना, आगे से नहीं होगा। और आगे और ज्यादा होता है। कारण? क्योंकि संस्कार बना दिया है। तो बापदादा एक ही बात बच्चों को बार-बार सुनाते हैं कि अभी हर गुण को, हर ज्ञान की बात को संस्कार रूप में बनाओ।

ब्राह्मण आत्माओं के निजी संस्कार कौन से हैं? क्रोध या सहनशक्ति? कौन सा है? सहनशक्ति, शान्ति की शक्ति यह है ना! तो अवगुणों को तो सहज ही संस्कार बना दिया, कूट-कूट कर अन्दर डाल दिया है जो न चाहते भी निकलता रहता है। ऐसे हर गुण को अन्दर कूट-कूट कर संस्कार बनाओ। मेरा निज़ी संस्कार कौन सा है? यह सदा याद रखो। वह तो रावण की जायदाद संस्कार बना दिया। पराये माल को अपना बना लिया। अब बाप के खजाने को अपना बनाओ। रावण की चीज़ को सम्भाल कर रखा है और बाप की चीज़ को गुम कर देते हो, क्यों? रावण से प्यार है! रावण अच्छा लगता है या बाप अच्छा लगता है? कहेंगे तो सभी बाप अच्छा लगता है, यही मन से कह रहे हैं ना? लेकिन जो अच्छा लगता है उसकी बात निश्चय की स्याही से दिल में समा जाती है। जब कोई रावण के संस्कार के वश होते हैं और फिर भी कहते रहते हैं – बाबा आपसे मेरा बहुत प्यार है, बहुत प्यार है। बाप पूछते हैं कितना प्यार है? तो कहते हैं आकाश से भी ज्यादा। बाप सुनकरके खुश भी होते हैं कि कितने भोले बच्चे हैं। फिर भी बाप कहते हैं कि बाप का सभी बच्चों से वायदा है – कि दिल से अगर एक बार भी ''मेरा बाबा'' बोल दिया, फिर भले बीच-बीच में भूल जाते हो लेकिन एक बार भी दिल से बोला ''मेरा बाबा'', तो बाप भी कहते हैं जो भी हो, जैसे भी हो मेरे ही हो। ले तो जाना ही है। सिर्फ बाप चाहते

हैं कि बराती बनकर नहीं चलना, सज़नी बनकर चलना। सुनकर के तो सभी बहुत खुश हो रहे हैं। अपने ऊपर हंसी भी आ रही है।

अभी सुनने के समय अपने ऊपर हंसते हो ना! अपने ऊपर हंसी आती है और जब जोश करते हो तब लाल, पीले हो जाते हो। लेकिन बाप ने रिजल्ट में देखा कि बच्चों में एक विशेषता बहुत अच्छी है, कौन सी? पवित्रता में रहना, इसके लिए कितना भी सहन करना पड़ा है, कितना भी आपोजीशन करने वाले सामने आये हैं लेकिन इस बात में 75 परसेन्ट अच्छे हैं। कोई-कोई गसिया (गपोड़ा) भी लगाते हैं लेकिन फिर भी 75 परसेन्ट ने इस बात में पास होकर दिखलाया है। अब उसके बाद दूसरा सबजेक्ट कौन सा आता है? क्रोध। देह-भान तो टोटल है ही। लेकिन देखा गया है कि क्रोध की सबजेक्ट में बहुत कम पास हैं। ऐसे समझते हैं कि शायद क्रोध कोई विकार नहीं है, यह शस्त्र है, विकार नहीं है। लेकिन क्रोध ज्ञानी तू आत्मा के लिए महाशत्रु है। क्योंकि क्रोध अनेक आत्माओं के संबंध, सम्पर्क में आने से प्रसिद्ध हो जाता है और क्रोध को देख करके बाप के नाम की बहुत ग्लानी होती है। कहने वाले यही कहते हैं, देख लिया ज्ञानी तू आत्मा बच्चों को। क्रोध के बहुत रूप हैं। एक तो महान रूप आप अच्छी तरह से जानते हो, दिखाई देता है – यह क्रोध कर रहा है। दूसरा - क्रोध का सूक्ष्म स्वरूप अन्दर में ईर्ष्या, द्वेष, घृणा होती है। इस स्वरूप में जोर से बोलना या बाहर से कोई रूप नहीं दिखाई देता है, लेकिन जैसे बाहर क्रोध होता है तो क्रोध अग्नि रूप है ना, वह अन्दर खुद भी जलता रहता है और दूसरे को भी जलाता है। ऐसे ईर्ष्या, द्वेष, घृणा – यह जिसमें है, वह इस अग्नि में अन्दर ही अन्दर जलता रहता है। बाहर से लाल, पीला नहीं होता, लाल पीला फिर भी ठीक है लेकिन वह काला होता है। तीसरा क्रोध की चतुराई का रूप भी है। वह क्या है? कहने में समझने में ऐसे समझते हैं वा कहते हैं कि कहाँ-कहाँ सीरियस होना ही पड़ता है। कहाँ-कहाँ ला उठाना ही पड़ता है – कल्याण के लिए। अभी कल्याण है या नहीं वह अपने से पूछो। बापदादा ने किसी को भी अपने हाथ में ला (Law) उठाने की छुट्टी नहीं दी है। क्या कोई मुरली में कहा है कि भले ला उठाओ, क्रोध नहीं करो? ला उठाने वाले के अन्दर का रूप वही क्रोध का अंश होता है। जो निमित्त आत्मायें हैं वह भी ला उठाते नहीं हैं, लेकिन उन्हों को ला रिवाइज कराना पड़ता है। ला कोई भी नहीं

उठा सकता लेकिन निमित्त हैं तो बाप द्वारा बनाये हुए ला को रिवाइज करना पड़ता है। निमित्त बनने वालों को इतनी छुट्टी है, सबको नहीं।

आज बापदादा थोड़ा आफीसियल शिक्षा दे रहे हैं, प्यार से उठाना क्योंकि बापदादा बच्चों के लिखे हुए, किये हुए वायदे देखकर, सुनकर मुस्कराते रहते हैं। अभी बापदादा ने जो सुनाया कि हर गुण को निजी संस्कार बनाओ। अन्डरलाइन किया? तो अभी से यह कहना – कि शान्त स्वरूप में रहना, सहनशील बनना – यह तो मेरा संस्कार बन गया है। फिर बापदादा जब मिलन मनाने आये, तो इसे अपना निजी संस्कार बनाकर बापदादा के आगे इन 5-6 मास में दिखाना। इसलिए आज रिजल्ट सुना रहे हैं। क्रोध की रिपोर्ट बहुत आती है। छोटा-बड़ा, भिन्न-भिन्न रूप से क्रोध करते हैं। अभी बापदादा ज्यादा नहीं खोलते हैं लेकिन कहानियां बहुत मज़े की हैं। इसलिए आज से क्रोध को क्या करेंगे? विदाई देंगे? (सभी ने ताली बजाई) देखो, ताली बजाना बहुत सहज है लेकिन क्रोध की ताली नहीं बजे। बापदादा अभी यह बार-बार सुनने नहीं चाहते हैं फिर भी रहम पड़ता है तो सुन लेते हैं। तो अब से यह नहीं कहना कि बाबा वायदा तो किया लेकिन.... फिर-फिर आ गया, क्या करें! चाहते नहीं हैं, आ जाता है। आप ही माया को समझा दो, क्रोध को समझा दो। तो यह पुरूषार्थ भी बाप करे और प्रालब्ध बच्चे लेंगे? यह भी मेहनत बाप करे? तो ऐसा वायदा नहीं करना, जो फिर 5 मास के बाद रिजल्ट देखें। भले आप बताओ नहीं बताओ, बाप के पास तो पहुंचती है। ऐसी रिजल्ट न हो – क्या करें, हो जाता है, सरकमस्टांश ऐसे आते हैं, बात बहुत बड़ी हो गई ना! बाप को भी समझाने की कोशिश करते हैं, बड़े होशियार हैं। कहते हैं बाबा छोटी-मोटी बातें हम पार कर लेते हैं, यह बात ही बड़ी थी ना! अभी दोष किस पर रखा? बात पर। और बात क्या करती है? आई और गई। 5 हजार वर्ष के बाद फिर बात आयेगी। जो 5 हजार वर्ष के बाद बात आनी है, उस पर दोष रख देते हैं। ऐसे नहीं करना। क्या करूं...! यह संकल्प में भी नहीं लाना। बापदादा क्रोध के लिए क्यों विशेष कह रहा है? क्योंकि अगर क्रोध को आपने विदाई दे दी तो इसमें लोभ, इच्छा सब आ जाता। लोभ सिर्फ पैसे और खाने का नहीं होता है, भिन्न-भिन्न प्रकार की, चाहे ज्ञान की, चाहे अज्ञान की कोई भी इच्छा – यह भी लोभ है। तो क्रोध को खत्म करने से लोभ स्वत: खत्म होता जायेगा, अहंकार भी खत्म

हो जायेगा। अभिमान आता है ना – मैं बड़ा, मैं समझदार, मैं जानता हूँ - यह क्या अपने को समझते हैं! तब क्रोध आता है। तो अभिमान और लोभ यह भी साथ-साथ विदाई ले लेंगे। इसीलिए बापदादा विशेष लोभ के लिए न कह करके क्रोध को अन्डरलाइन करा रहा है। तो संस्कार बनायेंगे? अभी सब हाथ उठाओ और सबका फोटो निकालो। (सबने हाथ उठाया) अभी थोड़ी सी मुबारक देते हैं, बहुत नहीं और जब फिर से रिजल्ट देखेंगे फिर वतन के देवतायें भी, स्वर्ग के देवतायें भी आपके ऊपर वाह, वाह के पुष्प गिरायेंगे।

आज से हर एक अपने में देखे – दूसरे का नहीं देखना। दूसरे की यह बातें देखने के लिए मन की आंख बंद करना। यह आंखें तो बंद कर नहीं सकते ना, लेकिन मन की आंख बन्द करना – दूसरा करता है या तीसरा करता है, मुझे नहीं देखना है। बाप इतना भी फोर्स देकर कहते हैं कि अगर कोई विरला महारथी भी कोई ऐसी कमजोरी करे तो भी देखने के लिए और सुनने के लिए मन को अन्तर्मुखी बनाना। हंसी की बात सुनायें – बापदादा आज थोड़ा स्पष्ट सुना रहे हैं, बुरा तो नहीं लगता है। अच्छा–एक और भी स्पष्ट बात सुनाते हैं। बापदादा ने देखा है कि मैजारिटी समय प्रति समय, सदा नहीं कभी-कभी महारथियों की विशेषता को कम देखते और कमजोरी को बहुत गहराई से देखते हैं और फालो करते हैं। एक दो से वर्णन भी करते हैं कि क्या है, सबको देख लिया है। महारथी भी करते हैं, हम तो हैं ही पीछे। अभी महारथी जब बदलेंगे ना तो हम बदल जायेंगे। लेकिन महारथियों की तपस्या, महारथियों के बहुतकाल का पुरूषार्थ उन्हों को एडीशन मार्क्स दिलाकर भी पास विद आनर कर लेती है। आप इसी इन्तजार में रहेंगे कि महारथी बदलेंगे तो हम बदलेंगे तो धोखा खा लेंगे इसलिए मन को अन्तर्मुखी बनाओ। समझा। यह भी बापदादा बहुत सुनते हैं, देख लिया... देख लिया। हमारी भी तो आंखे हैं ना, हमारे भी तो कान हैं ना, हम भी बहुत सुनते हैं। लेकिन महारथियों से इस बात में रीस नहीं करना। अच्छाई की रेस करो, बुराई की रीस नहीं करो, नहीं तो धोखा खा लेंगे। बाप को तरस पड़ता है क्योंकि महारथियों का फाउन्डेशन निश्चय, अटूट-अचल है, उसकी दुआयें एक्स्ट्रा महारथियों को मिलती हैं। इसलिए कभी भी मन की आंख को इस बात के लिए नहीं खोलना। बंद रखो। सुनने के बजाए मन को अन्तर्मुखी रखो। समझा।

आज गर्म-गर्म हलुआ खिलाया है। लेकिन निजी संस्कार बनाओ। मेहनत करते हो, वह भी बापदादा को अच्छा नहीं लगता। बापदादा ने बच्चों का एक वन्डरफुल चित्र देखा। वह चित्र देखेंगे। सुनना चाहते हैं कि बहुत हलुआ खा लिया? कमाल का चित्र है। बापदादा को भी कमाल लगती है। वह चित्र क्या देखा? कि बच्चे कहते एक हैं और करते दूसरा हैं। मुख से कह रहे हैं – हम तो लक्ष्मी-नारायण बनेंगे, राम सीता नहीं, लक्ष्मी-नारायण और करते क्या हैं? कहते तो हैं लक्ष्मी-नारायण बनेंगे। कहने वालों के मुख में गुलाबजामुन। लेकिन करते क्या हैं? पूछो लक्ष्मी-नारायण बनेंगे पक्का? कहते हैं हाँ 100 परसेन्ट लक्ष्मी-नारायण बनेंगे। लेकिन चित्र क्या दिखाते हैं? त्रेता वाले राम के समान युद्ध करते रहते हैं। तीर कमान हाथ में सदा ही है। कहते हैं लक्ष्मी-नारायण बनेंगे लेकिन प्रैक्टिकल में त्रेतायुगी राम समान युद्ध करते रहते हैं। सदा आधा समय युद्ध में, आधा समय योग में। सभी नहीं, लेकिन बहुत हैं। तो बापदादा को यह चित्र देख करके वन्डरफुल चित्र लगता है। जो कहते हो, जो अच्छा-अच्छा सोचते हो वह करना ही है। उसकी सहज विधि सुनाई कि ओरीज्नल निजी संस्कार को इमर्ज करो। संस्कार से स्वत: ही कर्म हो ही जाता है। मेहनत कम सफलता ज्यादा होती है, मेहनत से बच जायेंगे। जैसे आधाकल्प जब विश्व के मालिक बनते हो तो कई प्रकार की मेहनत से स्वत: ही छूट जाते हो। ऐसे इस समय निजी संस्कार बनाने से सहज मेहनत से छूट जायेंगे। समय प्रति समय कमान उठाने की, युद्ध करने की आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी। निरन्तर योगी, सहज योगी, कर्मयोगी, राजयोगी स्वत: ही बन जायेंगे। योग लगाना नहीं पड़ेगा लेकिन हर सेकण्ड, हर समय योगी जीवन स्वत: ही होगी। तो ऐसे ही चाहते हो ना?

ज्ञान, योग, धारणा और सेवा इन चारों सबजेक्ट का सार दो शब्द हैं। एक - बाप ही मेरा संसार है। दूसरा - हर गुण, हर शक्ति मेरा निज़ी संस्कार है। तो दो शब्द याद रखना – संसार और संस्कार। मुश्किल है क्या? थोड़ा-थोड़ा मुश्किल है? जब बात आ जाती है फिर तो मुश्किल है? लेकिन बात आपके आगे क्या है? बात बड़ी या बाप बड़ा? कौन बड़ा है? लेकिन उस समय बात बड़ी लगती है। बापदादा के पास ऐसे समय के बच्चों के फोटो बहुत हैं।

म्युज़ियम लगा हुआ है। कभी आना तो देखना। अपना ही फोटो देख लेना। लेकिन अभी समाप्ति समारोह मनाओ। जब आप यह समाप्ति समारोह मनायेंगे तब विश्व परिवर्तन का समारोह आपके सामने आयेगा।

और एक बात सुनायें, सुनने के लिए तैयार हो? बालक मालिक होते हैं ना! तो मालिक से आर्डर लेकर फिर सुनाना होता है। बेहद का हाल है ना। देखो जैसे रूण्ड माला दिखाई है ना। वैसे यहाँ आकर देखो तो रूण्ड माला ही लगती है। सिर्फ आपको फेस दिखाई देगा, बस। तो बेहद के हाल में बापदादा भी आज खुली दिल से बेहद की बातें बता रहे हैं। कल का दिन कौन सा था?(बुद्धवार) तो बुद्धवार की बात है। आज तो सभी रात का खेल देखकर थोड़ा थके हुए थे। थोड़ा सा परेशानी तो हुई ना। (रात को तूफान के साथ बरसात हुई) लेकिन लास्ट समय में तो बहुत कुछ होने वाला है। अगर थोड़ी सी रिहर्सल कर ली तो अच्छा है। थोड़ी रिहर्सल होनी चाहिए। बैग बैगेज समेटना और भागना, दौड़ना – यह तो एक्सरसाइज कराई। वैसे तो बूढ़ी-बूढ़ी मातायें भागती नहीं हैं लेकिन रात को बिस्तर और अटैची लेकर तो भागी। इसलिए यह भी खेल है। एक्सरसाइज तो हो गई ना। टांगे तो चली। यह छोटी-मोटी रिहर्सल तो फाइनल के आगे कुछ भी नहीं है। यह भी अभ्यास होना चाहिए। बापदादा ने कहा है एवररेडी रहो। इसमें भी एवररेडी, बारिस पड़ी सेकण्ड में चल पड़े। कोई डिस्टर्ब हुए? सेकण्ड में सेट हो गये। बापदादा भी समझते हैं जब तक पक्का नहीं बना है तब तक बच्चे कम आवें। लेकिन जितना ही कम कहते हैं उतना ही बढ़ता जाता है। लाल झण्डी दिखाते भी हैं – नहीं आओ, फिर भी आ जाते हो तो देखो खेल। बापदादा को बच्चों का स्नेह देखकर खुशी होती है और सदा यही बच्चों को कहते हैं – आओ बच्चे, आओ। नहीं आओ, कैसे कहेंगे! कह सकते हैं? तो सभी जितने भी आये हो, खुशी से आये हो और खुशी लेकर जाना और टोली के साथ-साथ पहले खुशी बांटना - उसके साथ टोली बांटना। अच्छा।

कल की बात सुनाते हैं। कल वतन में एडवांस पार्टी इमर्ज हुई थी। बापदादा से रूहरिहान कर रहे थे और बापदादा से पूछ रहे थे कि हमें जिस सेवा के अर्थ निमित्त बनाकर भेजा है, वह सेवा कब शुरू होगी? बापदादा ने क्या जवाब

दिया होगा? वह बार-बार यही कह रहे थे कि हमें एडवांस पार्टी में जो जन्म दिलाया है, वह विशेष कार्य के लिए दिलाया है और मैजारिटी अच्छे ते अच्छे योगी तू आत्मायें, ज्ञानी तू आत्मायें, महावीर भी बहुत एडवांस पार्टी में गये हैं और जो दूसरे साथ में गये हैं, उन्हों में भी मैजारिटी ऐसी आत्मायें गई हैं जो स्नेही और गुप्त योगी हैं। मिक्स तो सबमें होते हैं लेकिन आपके हिसाब से जिसको महारथी नहीं कहें, मैजारिटी साधारण कहते हो, वह भी स्नेह के कारण योग में अच्छे पावरफुल रहे हैं। और विशेष योग की सबजेक्ट में आगे रहने वाली ऐसी आत्मायें, योगबल से जन्म देने के निमित्त बन नई सृष्टि की स्थापना करेंगी। तो वह पूछ रहे थे कि कब हमारी सेवा शुरू होगी? इसमें भी कुछ आत्माओं का, जो गई हैं अलग पार्ट भी है। सभी का एक जैसा नहीं है लेकिन मैजारिटी का नई सृष्टि के स्थापना का पार्ट बना हुआ है। तो रूहरिहान चल रही थी। बापदादा ने तो मुस्कराते हुए उन्हों को दूसरी-दूसरी बातों में बिज़ी कर दिया क्योंकि कब का रेसपान्ड बापदादा को अकेला नहीं करना है, आप सभी को करना है। जब आप कहेंगे एवररेडी, तब उन्हों की सेवा आरम्भ होगी। इसीलिए विनाश का समय कभी भी फिक्स नहीं होना है। अचानक होना है। बापदादा ने पहले से ही इशारा दे दिया है, उस समय नहीं उल्हना देना कि बाबा थोड़ा इशारा तो देते। अचानक होना है, एवररेडी रहना है। इसके लिए एक निमित्त महारथी को एक्जैम्पल बनाया (दादी चन्द्रमणी को)। है तो सब ड्रामा अनुसार लेकिन कोई विशाल सेवा का एक्जैम्पल भी बनता है। इसलिए क्या करेंगे? जब बापदादा मिले तो सब मन से कहना, कागज का वायदा या मुख का वायदा नहीं, मन से वायदा करके दिखाना कि ''हम सब पुराने संस्कार खत्म कर अपने निजी संस्कार धारण करने वाले एवररेडी आत्मायें हैं।'' ठीक है? करेंगे? छोटी-छोटी बातें खत्म करो। ऐसे लगता है जैसे 60 साल का बुजुर्ग और बच्चे माफिक गेंद से खेले। अच्छा नहीं लगता। गेंद क्या, मिट्टी से खेलते हो। देह-अभिमान की मिट्टी से खेलते हो। अभी ज्ञान रत्नों से खेलो, गुणों से खेलो, शक्तियों से खेलो, मिट्टी से नहीं। किसी भी प्रकार का देह-अभिमान, मिट्टी से खेलना है। सुना! वतन का समाचार सुना!

आप सभी की यज्ञ माता, सरस्वती माता उसने विशेष सभी बच्चों को याद-प्यार दिया है। दिया तो सभी ने है लेकिन विशेष यज्ञ माता ने आप सबके लिए बहुत-बहुत दिल से यादप्यार दिया है और यही महामन्त्र याद कराया कि अब घर चलने की तैयारी करो। किनारे सारे छोड़ो, चलो, उड़ो। यज्ञ माता से प्यार है ना! अच्छा।

आज बहुत बातें सुनाई हैं। अभी एक सेकण्ड में एकदम मन और बुद्धि को बिल्कुल प्लेन कर एक बाप से सर्व संबंधों का, बाप ही संसार है – चाहे व्यक्ति संबंध, चाहे प्राप्तियां, यही संसार है .... तो एक ही बाप संसार है, इस बाप की याद में, इस रूप में, इस रस में, इस अनुभव में लवलीन हो जाओ। (बापदादा ने 3 मिनट ड्रिल कराई) अच्छा।

आज टीचर्स भी आई है ना। हाथ उठाओ टीचर्स। जो खास प्रोग्राम प्रमाण भट्ठी में आई हैं वह हाथ उठाओ। विशेष टीचर्स प्रति, बापदादा सदा खुश होते हैं कि चाहे बड़ी, चाहे छोटी लेकिन अपने जीवन के लिए फैंसला करने में बहुत ही अच्छे अपने जज बने हैं, जो फट से अपने जीवन का फैंसला किया कि मुझे यही सेवा की जीवन व्यतीत करनी है। यह वायदा सभी टीचर्स ने किया है ना? या कभी-कभी सोचती हैं कि सोचा नहीं था ऐसा होगा, पहले पता होता तो नहीं करते। ऐसे तो नहीं सोचते? यहाँ एक गीत बजाते हो, बाहर का है या आप लोगों का है, एक गीत बजाते हो उसमें बाप को कहते हो – आपके फूलों से भी प्यार तो कांटों से भी प्यार। यह गाती हो? यह मन में धारणा है? कांटों से प्यार है तो कांटे तो चुभते भी हैं ना। अगर कांटे को प्यार से सम्भाल से उठाओ तो कांटे भी प्यारे लगते हैं और अलबेले पन में कांटे को हाथ लगाओ तो नाराजगी का खून भी निकलता है। तो ऐसे तो नहीं हो ना? आप तो प्यार करने वाले हो ना। छोटी-छोटी बातें, छोटे-छोटे कांटे हैं। लेकिन आपको तो कांटों से भी प्यार है क्योंकि कांटे अर्थात् छोटी-छोटी बातें अनुभवी बहुत बनाती हैं।

बापदादा को इस ग्रुप से जो अभी आये हैं और आने वाले भी हैं, उनसे बड़ों से भी ज्यादा प्यार है। क्यों प्यार है? क्योंकि नाम छोटी है लेकिन सेवा बड़ी करते हो। देखो, प्रदर्शनी कौन समझाते हैं, बड़े समझाते हैं या आप समझाती हो? कोर्स कौन कराता है, भाषण अच्छे-अच्छे कौन करता है? आप लोग ही तो करते हो। तो बापदादा, नाम छोटे है लेकिन सेवा में आपको बड़ों

से भी बड़े समझते हैं। सिर्फ घबराना नहीं, घबराना काम कमजोरों का। आप तो बहुत बहादुर हो, महावीर हो, इसीलिए घबराओ नहीं। दिल छोटी कभी नहीं करो, बड़ी दिल। बड़े बाप के बच्चे हैं ना। छोटे बाप के बच्चे हैं क्या! तो छोटी दिल नहीं। न छोटी दिल करो न छोटी-छोटी बातों में घबराओ। सदा यह स्लोगन याद रखो कि देखने में छोटे हैं लेकिन काम बड़ा करके दिखायेंगे। बड़ों के सहयोगी बनेंगे। बड़ों को आंख नहीं दिखायेंगे लेकिन सहयोगी बन विश्व में नाम बाला करेंगे। ऐसी टीचर्स हैं? जो समझती हैं ऐसा ही करते हैं और करेंगे – वह हाथ उठाओ। यह तो बहुत हैं बहादुर। हाथ उठाना बहुत सहज है, देखना! फिर भी बापदादा आपके भाग्य पर खुश होते हैं। आपका भी बाप से बहुत प्यार है ना! तो बाप का भी आपसे बहुत प्यार है, सिर्फ छोटी दिल नहीं करना। कोमल नहीं बनना, महावीर बनना। कभी भी चेहरे पर कमजोरी का, कोमलता का चिन्ह न हो। निर्माणता अलग चीज है, कोमलता अलग चीज है। निर्माण भले बनो, कोमल नहीं बनो। कोमल कहते हैं जो पानी का फल हो। ऐसे लगाओ पानी और बह जाये उसको कहते हैं कोमल। तो कोमल नहीं बनना, कमाल करके दिखाना। बातें तो बड़ों के सामने भी आती हैं, आपके सामने भी आती हैं लेकिन आप और ही ऐसे समझो कि हम एक्जैम्पल बनकर दिखायेंगे। हम ज्ञान और योग में आगे हैं और रहेंगे। बातों की परवाह नहीं करो। कभी भी हर्षितमुख चेहरा बदलना नहीं चाहिए। सदा मन, तन मुस्कराता रहे। समझा! कमाल करके दिखायेंगी? कभी भी मन मुरझाये नहीं, मुस्कराता रहे। हो सकता है?

टीचर्स बोलो–हाँ जी? हाँ जी बोल रही हो या ना जी? मन से बोल रही हो या मुख से? देखो, बापदादा ने विशेष मिलने के लिए प्रोग्राम रखा। तो सदा मुस्कराते रहना तभी आपके पूज्य स्वरूप में यादगार बन जायेगा। सब खुश हैं? बापदादा मिला, बातें की? अभी जो भट्ठी हो उसमें इस ग्रुप की सभी टीचर्स नम्बरवन हो, सेकण्ड नम्बर नहीं हो, सेकण्ड ग्रुप का नाम है, आप सेकण्ड नहीं हो। तो जो सेकण्ड ग्रुप आया है वह सब बात में नम्बरवन हो। अच्छा।

टीचर्स सिकीलधी हैं ना? सेवा तो बहुत करती हैं ना, दिन रात लगी हुई तो हैं। ऐसे ही जो भी यहाँ शान्तिवन में वा मधुबन में, ज्ञान सरोवर में, हॉस्पिटल में, संगम भवन में सेवा पर हैं, सभी तरफ के सेवाधारियों को बापदादा प्यार की मसाज़ कर रहे हैं। जो भी जहाँ सेवा कर रहे हैं, वह सभी अपने को प्यार की

मसाज़ अनुभव करना। नाम कितनों का लेंगे। देखो आप सबकी सेवा है। आप आये तो सेवाधारियों को सेवा का भाग्य दिया। तो पहले तो आप हो। अगर आने वाले आते नहीं तो सेवाधारी किसकी सेवा करते। तो महत्व तो आपका भी है ना! अच्छा।

चारों ओर के सर्व बापदादा के लवलीन आत्मायें, सर्व बाप के सेवाधारी आत्मायें, सर्व सहज पुरूषार्थ को अपनाने वाली श्रेष्ठ आत्मायें, सदा बाप समान बनने के लक्ष्य और लक्षण को समान बनाने वाली, बाप के समीप आत्माओं को बापदादा का बहुत-बहुत यादप्यार और नमस्ते।

अच्छा–डबल फारेनर्स ठीक हैं? हाथ हिलाओ। बहुत अच्छा–देखो, डबल फारेनर्स हो तो बैठने के लिए भी डबल हाल चाहिए। इसीलिए आपको यह डबल, ट्रिबल हाल में बिठाया है। डबल फारेनर्स को अच्छा लगता है? बापदादा को भी बेहद अच्छी लगती है। लेकिन यह बेहद भी हद हो गई है। अभी से छोटा हो गया है। अभी क्या करेंगी? देखो लास्ट तक फुल बैठे हैं। वृद्धि तो होनी है। अच्छा।

डबल फारेनर्स इस सीजन में खुश हैं? ज्ञान सरोवर में खुश हैं? देखो, डबल फारेनर्स, डबल भाग्यवान हो, सब दादियां आपके लिए ज्ञान सरोवर में आती हैं, आपको आने की मेहनत नहीं करनी पड़ती, वहाँ ही पहुंच जाती हैं। सिकीलधे हो ना। तो सिकीलधे को मेहनत नहीं दी जाती है। तो आपके पास सभी दादियां, दादे आते हैं तो अच्छा लगता है ना। सिर्फ डबल फारेनर्स की सीजन में तो अपने आपको ही देखते हो, कभी भारत वालों को भी तो देखो, इसीलिए अभी मिक्स किया है। अच्छा लगता है मिक्स या अलग? अच्छा। आखिर तो अभी डबल विदेशी हो लेकिन ओरीज्नल तो भारत के हो ना कि विदेश के हो? भारत के हो ना! राज्य कहाँ करेंगे, अमेरिका में, लण्डन में या भारत में? भारत में ही करेंगे ना। इसीलिए भारत और विदेश का संगम है। बापदादा तो आपको इसी रूप में देखते हैं कि आदि भारतवासी हैं और अभी भी भारत में ही रहेंगे, भारतवासी बनेंगे। अच्छा। ओम् शान्ति।

जगदीश भाई तथा अन्य मुख्य भाईयों से

सेवा में पहला सेवा के निमित्त बनना और सेवा में सरेन्डर होना – ये आपका विशेष पार्ट है। अच्छा है चारों का अपना-अपना पार्ट है। सभी की विशेषता आपनी-अपनी है।

सभी की विशेषता आवश्यक है ना। इनकी विशेषता भी आवश्यक है, आपकी भी आवश्यक है। जैसे बहुत चीजें मिला के अच्छी बन जाती हैं ना टेस्टी, तो ऐसे सभी की विशेषता मिलकर सेवा में टेस्ट आ जाती है।

सभी की विशेषता चाहिए। बहुत अच्छा। दादियों ने कहा और पाण्डवों ने माना – ये बहुत अच्छी बात है, जब भी बुलायें हां-जी, हाँ-जी। आपके संगठन के आधार पर सारा दैवी परिवार चलता है। इसलिए जैसे दादियां निमित्त हैं, वैसे आप भी निमित्त हो। जिम्मेवार हो। हैं या नहीं हैं? सब बात में समझो हम सब सेवा के साथी हैं, यह 10-12 नहीं हैं लेकिन एक हैं, इसमें यज्ञ का शान है। बाप-दादा सभी को एवररेडी देखकर बहुत खुश हैं, कार्य तो बढ़ने ही हैं। कम तो होने नहीं हैं। संगठन की शक्ति बहुत वायुमण्डल को पावर देती है। राइट हैण्ड तो आप लोग हो ना! विशेष राइटहैण्ड हो। ठीक है ना? सोच में तो नहीं हो? नहीं। निमित्त हैं निमित्त बन अंगुली लास्ट तक देनी है। अच्छा।

सब ठीक हैं। सेवा में सफलता है ही ना? वृद्धि भी हो रही है और विधि भी स्पष्ट हो रही है। सहज है ना?

(मोहनी बहन अमेरिका का समाचार सुना रही हैं) दिल का प्यार ले आया है क्योंकि बापदादा जानते हैं जितना सेवा से प्यार है उतना बाप से भी दिल का प्यार है। तो दिल का प्यार दिल तक पहुंचाता है। बहुत अच्छा किया। यह उड़ती कला की निशानी है। जैसे स्थूल में उड़करके आये ना। तो यह उड़ना, उड़ती कला की विधि को सिद्ध करता है। अच्छी रफतार ठीक है।

वेदान्ती बहन से:- आप छत्रछाया के बीच में हो। सेवा अच्छी चल रही है। डोंट केयर।

सुदेश बहन से:- सभी को प्यार से चलाओ। पहले इन्हों को ठीक करेंगी फिर होगा। पहले इन आत्माओं को पक्का करो और ही एक्स्ट्रा पावरफुल स्टेज से। ठीक।

चक्रधारी बहन से:- रसिया तो अच्छा है। रिजल्ट अच्छी है। धरनी भी अच्छी है। रसिया की धरनी अच्छी है इसीलिए फल जल्दी निकलता है।

जो इस समय शान्तिवन की सेवा में हाजिर हैं वह हाथ उठाओ। इन्दौर वाले हाथ उठाओ। । अच्छी सेवा कर रहे हो, उमंग और उत्साह से सेवा कर रहे हो और अनेकों की दुआयें प्राप्त कर रहे हो। ऐसे ही सदा सेवा में दुआयें लेते रहना।

अशोक मेहता के बच्चे से:- लक्की है ना? ब्राह्मण परिवार के प्यारे हो। देखो लौकिक परिवार में भी लकी, अलौकिक परिवार में भी लकी। अभी क्या करेगें जाकर? आज क्या पाठ पढ़ा? (गुस्सा कम करेंगे)तो यहाँ गुस्सा छोड़कर जा रहे हो। जब भी गुस्सा आवे ना तो यह हाल इमर्ज करना। बहुत अच्छा। ऐसे ही खिले हुए रूहे गुलाब बनना।

13-11-97

संगमयुग के प्राप्तियों की प्रालब्ध का अनुभव करो, मास्टर दाता, महा सहयोगी बनो

आज भाग्य विधाता बाप अपने श्रेष्ठ भाग्यवान बच्चों को देख रहे हैं। हर एक बच्चे के भाग्य की रेखायें देख-देख भाग्य विधाता बाप भी हर्षित होते हैं क्योंकि सारे कल्प में चक्र लगाओ तो आप जैसा श्रेष्ठ भाग्य किसी धर्म आत्मा, महान आत्मा, राज्य अधिकारी आत्मा, किसी का भी इतना बड़ा भाग्य नहीं है, जितना आप संगमयुगी श्रेष्ठ आत्माओं का है। मस्तक से अपने भाग्य की रेखाओं को देखते हो? बापदादा हर एक बच्चों के मस्तक में चमकती हुई ज्योति की श्रेष्ठ रेखा देख रहे हैं। आप सभी भी अपनी रेखायें देख रहे हो? नयनों में देखो तो स्नेह और शक्ति की रेखायें स्पष्ट हैं। मुख में देखो मधुर श्रेष्ठ वाणी की रेखायें चमक रही हैं। होठों पर देखो रूहानी मुस्कान, रूहानी खुशी की झलक की रेखा दिखाई दे रही है। हृदय में देखो वा दिल में देखो तो दिलाराम के लव में लवलीन रहने की रेखा स्पष्ट है। हाथों में देखो दोनों ही हाथ सर्व खजानों से सम्पन्न होने की रेखा देखो, पांवों में देखो हर कदम में पदम की प्राप्ति की रेखा स्पष्ट है। कितना बड़ा भाग्य है!

भाग्य विधाता बाप ने हर एक बच्चे को पुरुषार्थ से, श्रेष्ठ कर्मों की कलम से यह सब रेखायें खींचने की खुली दिल से, खुली छुट्टी दे दी है। जितनी लकीर लम्बी खींचने चाहो उतनी खींच सकते हो, लेकिन समय के अन्दर। जिसको जितनी लम्बी लकीर खींचनी है वह स्वयं ही खींच सकते हो, बाप ने कलम आपके हाथ में दिया है। तो वह लकीर खींचने आती है? खींची है या खींचना नहीं आती है? सभी को आती है? (हाँ जी) बहुत अच्छा। देखो, अभी के तकदीर की लकीर आपको सारे कल्प में भी श्रेष्ठ बनाती है, 21 जन्म तो सदा सम्पन्न और सुखी रहने की रेखा चलती ही है और द्वापर, कलियुग में भी आपके पूज्य बनने की रेखा श्रेष्ठ रहती है। तो इस समय के भाग्य की रेखा सारा कल्प सदा साथ चलती है क्योंकि अविनाशी बाप की अविनाशी रेखा है। तो सदा अपने श्रेष्ठ भाग्य की रेखा स्मृति में रहती है? रहती तो है लेकिन कभी

इमर्ज रहती है, कभी मर्ज रहती है वा सदा ही इमर्ज रहती है? इसमें कम हाथ उठा रहे हैं। देखना, सदा इमर्ज रहे। इमर्ज रहने की निशानी है कि पुरानी स्मृतियां पुराने संस्कार की रेखायें मर्ज हो जाती हैं। कभी भी पुराने संस्कारों की रेखायें वा पुरानी बातों के स्मृति की रेखायें इमर्ज नहीं हों। मर्ज हों। और मर्ज रहते-रहते समाप्त हो जायें। जहाँ श्रेष्ठ भाग्य की रेखायें इमर्ज हैं, वहाँ पुरानी रेखायें इमर्ज होना असम्भव है। अगर होती हैं तो सिद्ध होता है कि श्रेष्ठ भाग्य की रेखा सदा इमर्ज नहीं रहती। तो क्या समझते हो? इतने श्रेष्ठ भाग्य की रेखायें इमर्ज होनी चाहिए या मर्ज?

बापदादा वर्तमान समय सभी बच्चों को वर्तमान संगमयुग की प्राप्तियों के प्रालब्ध रूप में देखने चाहते हैं। पुरुषार्थ बहुत समय किया, अभी पुरुषार्थ स्वत: चले, मेहनत वाला पुरुषार्थ नहीं। क्या अन्त तक पुरुषार्थ की मेहनत करते रहेंगे? संगमयुग के प्राप्तियों की प्रालब्ध का अनुभव अब नहीं करेंगे तो कब करेंगे! भविष्य की प्रालब्ध अलग चीज़ है। वह तो आपकी इस पुरुषार्थ के प्रालब्ध की परछाई है। वह तो आपके पीछे-पीछे आपेही आयेगी। लेकिन विशेष बात है इस समय के प्रालब्ध प्राप्त करने की। ऐसे नहीं – कोई पूछता है कैसे है? क्या हालचाल है? तो अभी तक यही नहीं कहते रहो कि पुरुषार्थ चल रहा है। पुरुषार्थ तो है लेकिन पुरुषार्थ की प्रालब्ध अभी अनुभव करो। वह प्रालब्ध है सर्व शक्ति सम्पन्न, सर्व ज्ञान सम्पन्न, सर्व विघ्न विनाशक मूर्त, यह अभी की प्रालब्ध भविष्य में स्वत: ही प्राप्त होगी। जैसे भविष्य में सिर्फ प्रालब्ध है, पुरुषार्थ समाप्त है। ऐसे अभी बाकी रहे हुए समय में प्रालब्ध स्वरूप का विशेष अनुभव करो। जब प्रालब्ध कहते हैं तो पुरुषार्थ की ही प्रालब्ध होती है। पुरुषार्थ किया है, उस पुरुषार्थ अनुसार ही प्रालब्ध का अनुभव कर सकते हैं। लेकिन बापदादा बच्चों से क्या चाहते हैं? पूछते हैं ना बापदादा हमसे क्या चाहते हैं? तो बापदादा यही चाहते हैं कि अब थोड़े समय के लिए पुरुषार्थ के प्रालब्ध स्वरूप बन जाओ। बन सकते हो कि पुरुषार्थ की मेहनत अच्छी लगती है? प्रालब्ध वाले बनेंगे? अभी पुरुषार्थ कर रहा हूँ, पुरुषार्थ हो जायेगा, करके दिखायेंगे, यह शब्द समाप्त हों। करके दिखायें क्या, दिखाओ। और कब दिखायेंगे? क्या विनाश के समय दिखायेंगे? इसकी बहुत सहज विधि है कि अब मास्टर दाता बनो। बाप से लिया है और लेते भी रहो लेकिन आत्माओं से

लेने की भावना नहीं रखो – यह कर लें तो ऐसा हो। यह बदले तो मैं बदलूं, यह लेने की भावना है। ऐसा हो तो ऐसा हो। यह लेने की भावनायें हैं। ऐसा हो नहीं, ऐसा करके दिखाना है। हो जाए तो नहीं, लेकिन होना ही है और मुझे करना है। मुझे बायब्रेशन देना है। मुझे रहमदिल बनना है। मुझे गुणों का सहयोग देना है, मुझे शक्तियों का सहयोग देना है। मास्टर दाता बनो। लेना है तो एक बाप से लो। अगर और आत्माओं से भी मिलता है तो बाप का दिया हुआ ही मिलेगा। तो दाता बन फ्राकदिल बनो। देते रहो, देने आता है? या सिर्फ लेने आता है? अब जो जमा किया है वह दो। आपस में ब्राह्मण आत्मायें भी मास्टर दाता बनो। और दे तो मैं दूं, नहीं। मुझे देना है। खजाना है आपके पास? भरपूर है? गुणों से भरपूर है? शक्तियों से भरपूर है? है तो देते क्यों नहीं हो? अपने लिए छिपाकर रखा है क्या? जब खजानों से भरपूर हो तो देते जाओ। यह क्यों करता? यह क्यों कहता? यह सोच नहीं करो। रहमदिल बन अपने गुणों का, अपनी शक्तियों का सहयोग दो – इसको कहा जाता है मास्टर दाता। महा सहयोगी। सहयोगी भी नहीं, महा सहयोगी बनो। महा दाता बनो। तो समझा बापदादा क्या चाहता है?

बापदादा अभी तक बच्चों के पुरुषार्थ की मेहनत देख नहीं सकते। डायमण्ड जुबली समाप्त हुई और डायमण्ड अभी तक बेदाग बनने के पुरुषार्थ में लगे हुए हैं। डायमण्ड जुबली अर्थात् हर ब्राह्मण आत्मा (डायमण्ड) चमकता रहे। आप सोचेंगे कि डायमण्ड जुबली हमारी तो थी नहीं, वह तो दादियों की हुई। आपकी हुई या दादियों की हुई, किसकी हुई? यज्ञ के स्थापना के कार्य की डायमण्ड जुबली। सिर्फ दादियों की नहीं, स्थापना के कार्य की डायमण्ड जुबली। तो आप सभी चाहे दो साल के हो, चाहे 12 साल के हो चाहे 50 के हो, लेकिन स्थापना के कार्य के निमित्त तो हो ना या नहीं? निमित्त हो? ब्राह्मण माना ही ब्रह्मा बाप के साथ स्थापना के कार्य के निमित्त आत्मा। वही ब्रह्माकुमार या ब्रह्माकुमारी कहला सकते हैं। तो ब्रह्माकुमार, कुमारी सभी हो या पुरुषार्थी कुमार कुमारी हो? क्या हो? ब्रह्माकुमार, ब्रह्माकुमारियां अर्थात् जन्म लिया और ब्रह्मा बाप के साथी स्थापना के निमित्त आत्मा बनें। तो ऐसे नहीं सोचना हम तो अभी नये हैं। हम तो अभी छोटे हैं। लेकिन समय के अनुसार जब समय समाप्ति के नजदीक है तो छोटों को, नयों को इतना ही तीव्र पुरुषार्थ करना ही है, अगर

ब्राह्मण हैं तो। अगर क्षत्रिय हैं तो छुट्टी है। लेकिन ब्राह्मण हैं तो ब्राह्मण सो देवता कहा जाता है। क्षत्रिय सो देवता नहीं। तो ब्राह्मण आत्माओं को स्थापना के निमित्त बनना ही है। हैं ही निमित्त। इसलिए अभी मास्टर दाता बनो। दान नहीं करो लेकिन सहयोग दो। ब्राह्मण, ब्राह्मण को दान नहीं कर सकता, सहयोग दे सकता है। तो क्या कहा? महा दाता और महा सहयोगी बनो। अभी एक साल वाला भी है तो भी समय के अनुसार अभी बचपन की बातें समाप्त करो क्योंकि सभी बच्चे वानप्रस्थ अवस्था के समीप हो। समय की गति प्रमाण, ड्रामा के नियम प्रमाण अभी सभी की वानप्रस्थ अवस्था समीप है।

बापदादा जानते हैं कि बच्चों का बाप से जिगरी स्नेह है। जिगरी स्नेह है ना? या ऊपर-ऊपर का स्नेह है? दिल का स्नेह है तब तो भागकर आये हो ना? देखो बेहद के हाल में, बेहद के बाप के बच्चे, बेहद के रूप में विराजमान हैं। यह हाल अच्छा लगता है ना या दूर लगता है? देखो, बैठने में तो दूर है लेकिन बापदादा अपने दिल की बहुत बड़ी स्क्रीन में आप सब दूर बैठे हुए बच्चों को अति समीप देख रहे हैं। दूर नहीं देख रहे हैं। बापदादा के दिल की स्क्रीन बहुत बड़ी है। अभी तक साइंस वालों ने भी नहीं निकाली है। इसीलिए आप दूर नहीं बैठे हो, बापदादा के दिल में बैठे हो। ऐसे समझते हो? कुर्सी पर बैठे हो, दरी पर बैठे हो या दिल में बैठे हो? दृश्य तो बहुत अच्छा सुन्दर लग रहा है। फुल पीछे तक भरा हुआ है या कुछ खाली है? बापदादा देख रहे हैं - पीछे थोड़ा खाली है।

देखो आप लोगों को बापदादा ने काम दिया था। आप भूल गये होंगे लेकिन बापदादा को याद है। कौन सा काम दिया था? (क्रोध मुक्त का) आज वह नहीं पूछेंगे। पहला चांस लिया है ना तो आज क्रोधमुक्त का पूछेंगे तो दिलशिकस्त हो जायेंगे। बापदादा को रिजल्ट पता है। पूछेंगे। आप लोगों से भी वहाँ से रिजल्ट मंगायेंगे। आज छोड़ देते हैं। तो काम दिया था कि 9 लाख तैयार करके दिखाओ। याद है - हर ज़ोन को कहा था। तो किस जोन ने 9 लाख तैयार किये हैं?

बंगाल-बिहार का सेवा का टर्न है। तो बंगाल-बिहार ने 9 लाख तैयार किया है? चुप हैं, बोलते नहीं हैं। चलो एक ज़ोन नहीं, सभी ज़ोन ने, देश विदेश वालों ने मिलकर 9 लाख तैयार किये हैं? विदेश वाले बताओ। 9 लाख हैं?

बापदादा तो अपनी डेट फिक्स करते हैं और उसी फिक्स डेट पर आते हैं। आप भी सब बातों की डेट फिक्स करते हो? यह हाल कब तक बनेगा, फंक्शन कब होगा, यह डेट फिक्स करते हो ना? तो इसकी डेट कौन सी है? फिक्स है? विनाश के इन्ड (अन्त) में या पहले? क्या होगा? क्या सोचा है? कौन सी डेट है? कोई डेट है या अभी फिक्स नहीं किया है? यह भी बाप करे। करना आपको है। बापदादा तो कहेंगे कि शुभ कार्य में देरी नहीं करो फिर क्या करेंगे? चलो, इस सीजन के इन्ड में हो जाए तो भी अच्छा। इतनी हिम्मत है? सिर्फ दाता बन जाओ। अगर दाता बनेंगे तो दाता की भावना से आपकी रॉयल फैमिली और समीप वाली प्रजा बहुत जल्दी बनेंगी। वह लोग तो इन्तजार कर रहे हैं, सिर्फ सदा दाता बनने की देरी है। महान सहयोगी बनने की देरी है। ज्यादा खजाना स्वयं प्रति वा सिर्फ स्वयं की सेवाओं के प्रति लगाते हो। अपने-अपने सेवाओं के ड्युटीज़ में ज्यादा समय लगाते हो। महान दाता बन, बेहद के दाता बन वर्ल्ड के गोले पर खड़े हो, बेहद की सेवा में वायब्रेशन फैलाओ। विश्व राजा बनना है सिर्फ ज़ोन के वा अपने-अपने ड्युटीज़ के सर्किल के राजा नहीं बनना है। विश्व कल्याणकारी हो। अभी बेहद में जाओ। बेहद में जाने से हदों की बातें स्वतः ही समाप्त हो जायेंगी। मनोबल बहुत श्रेष्ठ बल है, उसको यूज़ नहीं करते हो। वाणी, संबंध, सम्पर्क उससे सेवा में बिजी रहते हो। अब मनोबल को बढ़ाओ। बेहद की सेवा जो अभी आप वाणी या संबंध, सहयोग से करते हो, वह मनोबल से करो। तो मनोबल की बेहद की सेवा अगर आपने बेहद की वृत्ति से, मनोबल द्वारा विश्व के गोले के ऊपर ऊंचा स्थित हो, बाप के साथ परमधाम की स्थिति में स्थित हो थोड़ा समय भी यह सेवा की तो आपको उसकी प्रालब्ध कई गुणा ज्यादा मिलेगी।

आजकल के समय और सरकमस्टांश के प्रमाण अन्तिम सेवा यही मन्सा वा मनोबल की सेवा है। इसका अभ्यास अभी से करो। चाहे वाणी द्वारा वा संबंध सम्पर्क द्वारा सेवा करते हो लेकिन अब इस मन्सा सेवा का अभ्यास अति आवश्यक है, साथ-साथ अभ्यास करते चलो। समझा क्या करना है? यह मन्सा सेवा वही रंगत दिखायेगी जो स्थापना के आदि में बाप की मन्सा द्वारा रूहानी आकर्षण ने बच्चों को आकर्षित किया। और मन्सा सेवा के फल स्वरूप अभी भी देख रहे हो कि वही आत्मायें अब भी फाउण्डेशन हैं। ड्रामा अनुसार यह

बाप की मन्सा आकर्षण का सबूत है जो कितने पक्के हैं। तो अन्त में भी अभी बाप के साथ आपकी भी मन्सा आकर्षण, रूहानी आकर्षण से जो आत्मायें आयेंगी वह समय अनुसार समय कम, मेहनत कम और ब्राह्मण परिवार में वृद्धि करने के निमित्त बनेंगी। वही पहले वाली रंगत अन्त में भी देखेंगे। जैसे आदि में ब्रह्मा बाप को साधारण न देख कृष्ण के रूप में अनुभव करते थे। साक्षात्कार अलग चीज़ है लेकिन साक्षात स्वरूप में कृष्ण ही देखते, खाते-पीते चलते थे। ऐसा है ना? तो स्थापना में एक बाप ने किया, अन्त में आप बच्चे भी आत्माओं के आगे साक्षात देवी-देवता दिखाई देंगे। वह समझेंगे ही नहीं कि यह कोई साधारण हैं। वही पूज्यपन का प्रभाव अनुभव करेंगे, तब बाप सहित आप सभी के प्रत्यक्षता का पर्दा खुलेगा। अभी अकेले बाप को नहीं करना है। बच्चों के साथ प्रत्यक्ष होना है। जैसे स्थापना में ब्रह्मा के साथ विशेष ब्राह्मण भी स्थापना के निमित्त बनें, ऐसे समाप्ति के समय भी बाप के साथ-साथ अनन्य बच्चे भी देव रूप में साक्षात अनुभव होंगे। इसके लिए यही जो आज सुनाया अभी से प्रालब्ध स्वरूप में स्थित रहो। छोड़ो छोटी-छोटी बातों को, अब ऊंचे जाओ। विशेष प्रालब्ध स्वरूप का साक्षात्कार स्वयं भी करो और कराओ। समझा।

अभी सभी अपने अनादि स्वरूप में एक सेकण्ड में स्थित हो सकते हो? क्योंकि अन्त में एक सेकण्ड की ही सीटी बजने वाली है। तो अभी से अभ्यास करो। बस टिक जाओ। (ड्रिल कराई) अच्छा।

सभी आराम से रह रहे हो? शान्तिवन अच्छा लगता है? सभी को पसन्द है? डबल फारेनर्स हाथ उठाओ। डबल फारेनर्स को डबल नशा है वा पदमगुणा नशा है? पदमगुणा नशा है वा डबल नशा है? फारेन में तो सुन रहे हैं ना? सभी देशों में सुन रहे हैं? (सेटलाइट-इन्टरनेट द्वारा 50 से भी अधिक देशों में डायरेक्ट बापदादा की मुरली सभी सुन रहे हैं) देखो फारेन की इन्वेन्शन फारेन में ही पहले काम में आ रही है। बापदादा को खुशी है कि फारेन वाले बापदादा को प्रत्यक्ष करने में सहयोगी बन रहे हैं और आगे भी बनेंगे। दिमाग अच्छा चलाते हैं। इन्वेन्शन अच्छी निकालते हैं इसलिए पहला चांस उन्हों को ही मिला है। तो जो भी अपने-अपने देश में सुन रहे हैं। बापदादा सभी बच्चों को इस हाल में फरिश्तों के रूप में हाजिर नाजिर देख रहे हैं। डबल सभा देख रहे हैं। एक साकार और दूसरी फरिश्तों की सभा। भारत में भी चारों ओर के बच्चे इस समय

फरिश्ते रूप में शान्तिवन में पहुंच गये हैं। तो सभी बच्चों को साकार रूपधारी बच्चों से पहले अखुट यादप्यार दे रहे हैं। बापदादा देख रहे हैं कि कोने-कोने से बच्चे शान्तिवन निवासी बन अव्यक्त अनुभव कर रहे हैं। बहुत अच्छा साधन मिला है और सदा साधन और साधना दोनों साथ रखना। अच्छा।

सर्व चारों ओर के बच्चों को सदा भाग्य की रेखायें इमर्ज रूप में स्मृति में रखने वाली आत्माओं को, सदा अपने संगमयुगी सर्व प्राप्ति स्वरूप प्रालब्ध को अनुभव करने वाले, सदा मास्टर दाता, महा सहयोगी आत्माओं को, सदा मन्सा सेवा द्वारा विश्व के आत्माओं के कल्याणकारी आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

इस्टर्न और तामिलनाडु के सेवाधारियों प्रति -

इस्टर्न ज़ोन वा तामिलनाडु दोनों ने मिलकर अपने उमंग-उत्साह से, एक दो के सहयोग से एक दो को आगे रखते हुए जो पार्ट बजाया वह बहुत अच्छा। यह संगठन बहुत शक्ति देता है। सभी की अंगुली से सेवा की सफलता सहज हो जाती है। तो आप सभी जो भी इस्टर्न वा तामिलनाडु के भाई और बहन सेवा में आये हैं, सभी ने जो सहयोग की शक्ति यूज़ करके सभी को जो शान्ति और शक्ति का अनुभव कराया, स्नेह का अनुभव कराया वह बहुत अच्छा है और आगे भी अच्छा रहेगा। इसलिए सभी की तरफ से बापदादा भी मुबारक दे रहे हैं। अच्छा। ओम् शान्ति।

28-11-97

बेहद की सेवा का साधन – रूहानी पर्सनैलिटी द्वारा नज़र से निहाल करना

आज बापदादा अपने अनेक कल्प के मिलन मनाने वाले लाडले, सिकीलधे बच्चों से फिर से मिलन मनाने आये हैं। अव्यक्त मिलन तो सदा मनाते ही हो लेकिन अव्यक्त से व्यक्त रूप में मिलन मनाने के लिए सभी बच्चे भारत वा विदेश से फिर से अपने घर पहुंच गये हैं। बापदादा देख रहे हैं कि चारों ओर बच्चे अपने-अपने स्थान पर भी मिलन मना रहे हैं। यह मिलन रूहानी अलौकिक मिलन है। इस मिलन में बापदादा और बच्चों के स्नेह का साकार स्वरूप है।

आज बापदादा अपने बच्चों की रूहानी पर्सनैलिटी को देख रहे हैं। हर एक बच्चे की रूहानी पर्सनैलिटी कितनी श्रेष्ठ है। ऐसी रूहानी पर्सनैलिटी सारे कल्प में और किसी की भी नहीं है क्योंकि आप सबकी पर्सनैलिटी बनाने वाला ऊंचे ते ऊंचा बाप है। आप भी अपनी रूहानी पर्सनैलिटी को जानते हैं ना? सबसे बड़े ते बड़ी पर्सनैलिटी है - स्वप्न वा संकल्प में भी सम्पूर्ण प्युरिटी की पर्सनैलिटी। नम्बरवार है लेकिन फिर भी विश्व की सर्व आत्माओं से श्रेष्ठ है। तो बापदादा हर एक के मस्तक से पर्सनैलिटी की झलक देख रहे हैं। प्युरिटी के साथ-साथ सबके चेहरे और चलन में रूहानियत की भी पर्सनैलिटी है। और पर्सनैलिटी क्या होती है? जो खजानों से सम्पन्न होते हैं, उसकी भी पर्सनैलिटी होती है लेकिन कितने भी बड़े-बड़े सम्पन्न आत्मायें हों, आपके आगे वह सम्पन्न आत्मायें भी कुछ नहीं हैं क्योंकि वह भी अविनाशी सुख-शान्ति के खजाने से खाली हैं। आपके पास जो सम्पत्ति है उसके आगे अरब-खरब-पति भी बाप से सुख-शान्ति मांगने वाले हैं और आप सदा अविनाशी खजानों से भरपूर हो। वह खजाने आज हैं कल नहीं लेकिन आपका खजाना न कोई लूट सकता है, न कोई आत्मा खजाने को हिला सकती है। अखुट है, अखण्ड है। ऐसी पर्सनैलिटी वाले आप बच्चे हो। सबसे ऊंचे ते ऊंची पर्सनैलिटी वाले फिर भी आत्माओं द्वारा, विनाशी धन द्वारा, विनाशी आक्यूपेशन द्वारा पर्सनैलिटीज़ बनती हैं वा कहलाई जाती हैं। लेकिन आपको ऊंचे ते ऊंचे परम आत्मा ने श्रेष्ठ पर्सनैलिटी वाले बना दिया।

तो अपने ऊंची पर्सनैलिटी का रूहानी नशा रहता है? रहता है तो हाथ हिलाओ।

बापदादा को इतने श्रेष्ठ पर्सनैलिटी वाले बच्चे देख कितनी खुशी होती है। आपको भी होती है? बापदादा बच्चों की ऐसी श्रेष्ठता को देख क्या गीत गाते हैं, जानते हो? आप भी गाते हैं, बाप भी गाते हैं। बाप का गीत सुनाई देता है या टेप का गीत सुनाई देता है? बापदादा की टेप न्यारी होगी ना, आटोमेटिक है। चलाने की मेहनत नहीं करनी पड़ती। और दिल का गीत दिल वाले ही सुन सकते हैं। सिर्फ कान वाले नहीं, दिल वाले। तो सभी दिल वाले हो ना? दिलवाला मन्दिर में आपका चित्र है ना? सभी ने अपना चित्र देखा है? बापदादा तो सदा बच्चों के चित्र और चरित्र देखते रहते हैं। तो आज पर्सनैलिटी को देख रहे थे। सदा यह पर्सनैलिटी स्मृति में इमर्ज रहे। है ही, नहीं। है, दिखाई देवे। अनुभव में आये। सदा ऐसी पर्सनैलिटी में रहने वाले की निशानी क्या होगी? जिस निशानी से समझ जाएं कि यह अपने पर्सनैलिटी में है? अगर यह रूहानी पर्सनैलिटी इमर्ज रूप में रहती है तो उनके नयन, उनका चेहरा, चलन, संकल्प और संबंध सब प्रसन्नता वाले होंगे। सदा प्रसन्नचित, प्रश्न चित नहीं, प्रसन्न-चित। अगर प्रश्न चित है तो चलन भी पर्सनैलिटी वाली नहीं। चेहरे पर भी प्रसन्नता की झलक नहीं। कुछ भी हो जाए, पर्सनैलिटी वाले की प्रसन्नता छिप नहीं सकती। मर्ज नहीं हो सकती। प्रसन्नचित आत्मा; कोई कैसी भी आत्मा परेशान हो, अशान्त हो उसको अपने प्रसन्नता की नज़र से प्रसन्न कर देगी। जो बाप का गायन है ''नजर से निहाल करने वाले'', वह सिर्फ बाप का नहीं है आपका भी यही गायन है। और अभी समय प्रमाण जितना समय समीप आ रहा है तो नज़र से निहाल करने की सेवा करने का समय आयेगा। सात दिन का कोर्स नहीं होगा, एक नज़र से प्रसन्नचित हो जायेंगे। दिल की आश आप द्वारा पूर्ण हो जायेगी। तो सभी क्या समझते हो? आदि सेवा के रत्न क्या समझते हैं? ऐसी सेवा कर सकते हो ना?

अभी देखो आप लोगों ने 40 वर्ष सेवा की या ज्यादा भी की, कोई का एक दो साल कम भी होगा, किसका ज्यादा भी होगा। अभी आप लोगों ने अपने साथियों को यह सेवा सिखा दी और निमित्त भी बना दिया। अभी आप क्या करेंगे? वो सेवा तो वह भी कर रहे हैं। आप आदि रत्न हो तो न्यारी और प्यारी सेवा करेंगे ना? अभी फिर उत्सव मनायेंगे कि नज़र से निहाल कितने

किये। 9 लाख में से कितने बनाये? आगे तो 33 करोड़ भी हैं, 9 लाख तो उसके आगे कुछ नहीं हैं। बीज तो यहाँ ही डालना है ना? तो देखेंगे कि आदि सेवा के रत्न अब और क्या कमाल दिखाते हैं। यह कमाल तो दिखाई, सेवाकेन्द्र बनाये, अच्छे-अच्छे प्रोग्राम किये, उसकी तो पदमगुणा मुबारक है। दो प्रकार के बच्चे हैं जो पहले वाले हैं वह हैं स्थापना के निमित्त बच्चे और आप लोग हो विशेष सेवा के आदि के बच्चे। यह (दादियां) हैं जड़ स्थापना वाले और आप सब (सेवा के आदि रत्न) हैं पहला-पहला तना। तो तना तो मजबूत होता है ना। तना पर ही सब आधार होता है। तना से ही सब शाखायें निकलती हैं। जड़ वाले तो सूक्ष्म में शक्ति देते हैं लेकिन जो प्रैक्टिकल में होता है, दिखाई देता है, वह तना दिखाई देता है। तो दादियां अभी गुप्त हो गई हैं, सकाश देने वाली और प्रैक्टिकल में स्टेज पर आने वाले आप निमित्त बनें, (सम्मान समारोह में आई हुई सभी बड़ी बहिनों से बापदादा ने हाथ उठवाया) इसीलिए बापदादा काम दे रहे हैं। समारोह तो बहुत अच्छा मनाया ना। बापदादा ने सब देखा। सजी हुई मूर्तियों को देखा। उस समय तो आप लोगों को भी यही रूहानी अनुभव हो रहा था कि हम चैतन्य मूर्तियां हैं। ऐसे ही लग रहा था जैसे सजी हुई मूर्तियां मन्दिरों से शान्तिवन में पहुंच गई हैं।

तो बापदादा अभी बच्चों से चाहते हैं कि अभी फास्ट सेवा शुरू करो। जो हुआ वह बहुत अच्छा। अब समय प्रमाण औरों को ज्यादा वाणी का चांस दो। अभी औरों को माइक बनाओ, आप माइट बनके सकाश दो। तो आपकी सकाश और उन्हों की वाणी, यह डबल काम करेगी। तब ही 9 लाख सहज बन जायेंगे। अभी आप सभी चाहे फंक्शन में बैठे या और भी महारथी हैं तो महारथियों की अभी सेवा है – सर्व को सकाश देना। बेहद की सेवा के मैदान में आना। जब बाप अव्यक्त वतन, एक स्थान पर बैठे चारों ओर के विश्व के बच्चों की पालना कर सकते हैं, कर रहे हैं तो क्या आप एक स्थान पर बैठे बाप समान बेहद की सेवा नहीं कर सकते हो? आदि रत्न अर्थात् फालो फादर। बेहद में सकाश दो। कई बच्चे अपने से भी पूछते हैं और आपस में भी पूछते हैं कि बेहद का वैराग्य कैसे आयेगा? दिखाई तो देता नहीं है, लेकिन बेहद की सेवा में अपने को बिजी रखो तो बेहद का वैराग्य स्वत: ही आयेगा क्योंकि यह सकाश देने की सेवा निरन्तर कर सकते हो, इसमें तबियत की बात, समय की

बात – यह सहज हो जाती है। दिन रात इस बेहद की सेवा में लग सकते हो। जैसे ब्रह्मा बाप को देखा रात को भी कैसे आंख खुली और बेहद की सकाश देने की सेवा होती रही। तो यह बेहद की सेवा इतना बिजी कर देगी जो बेहद का वैराग्य स्वत: ही दिल से आयेगा। प्रोग्राम से नहीं। यह करें, यह करें – यह प्लैन तो बनाते हो, लेकिन बिजी बेहद की सेवा में रहना – यह सबसे सहज साधन है क्योंकि जब बेहद को सकाश देंगे तो नजदीक वाले तो ऑटोमेटिक सकाश लेते रहेंगे। इस बेहद की सकाश देने से वायुमण्डल ऑटोमेटिक बनेगा। अभी यह नहीं सोचो कि इतने सेन्टर के जिम्मेवार हैं वा ज़ोन के जिम्मेवार हैं! आप सभी को स्टेट के राजा बनना है या विश्व का? क्या बनना है? विश्व का ना? आदि रत्न हो तो विश्व को सकाश देने वाले बनो। अगर 20 सेन्टर, 30 सेन्टर या दो अढ़ाई सौ सेन्टर या जोन, यह बुद्धि में रहेगा तो यह भी तना का काम नहीं है। यह तो टाल टालियां भी कर सकती हैं। आप तो तना हो। तना से सबको सकाश पहुंचती है। आप सभी भी यह सोचते हो कि बेहद का वैराग्य आना चाहिए, यह तो बहुत अच्छा। अभी विनाश हो जाए। लेकिन 9 लाख ही तैयार नहीं किये, तो सतयुग के आदि में आने वाली संख्या ही तैयार नहीं है और विनाश हो गया तो कौन आयेगा? क्या 2-3 हजार पर राज्य करेंगे? 4-5 लाख पर राज्य करेंगे? इसलिए अब बेहद की सेवा का पार्ट आरम्भ करो। पाण्डव क्या समझते हैं? बेहद की सेवा करेंगे ना? पाण्डव तैयार हैं? अभी यह हद की बातें बेहद में जाने से आपेही छूट जायेंगी। छुड़ाने से नहीं छूटेंगी। बेहद की सकाश से परिवर्तन होना फास्ट सेवा का रिजल्ट है।

बापदादा जानते हैं कि नाज़ुक परिस्थितियों में निमित्त बनी आत्माओं ने सेवा का प्रत्यक्ष प्रमाण दिया है। लेकिन आप सभी का फाउण्डेशन वा सेकण्ड का परिवर्तन का मूल अनुभव यही है कि ब्रह्मा बाप को देखा और ब्राह्मण बन गये। सेवा का वरदान मिला और सेवा में लग गये। बापदादा ने सभी के अनुभव भी सुने। अच्छे अनुभव सुनाये। तो जैसे आप लोगों का अनुभव है, ब्रह्मा बाप को देखा और सोचना भी नहीं पड़ा। सहन करने का भी अनुभव नहीं हुआ कि सहन कर रहे हैं। बड़ी बात नहीं लगी। ऐसे अभी हर श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्मा को देखें और आत्मा में (ब्राह्मण में) ब्रह्मा बाप देखें। यह है सेवा का फास्ट साधन, क्या ब्रह्मा बाप ने आपको कोर्स कराया? कोर्स तो पीछे किया। लेकिन देखा और हो गये।

तो जैसे ब्रह्मा बाप में बाप समाया हुआ था इसीलिए मेहनत नहीं लगी। ऐसे आप सभी भी बापदादा को अपने में समाते हुए नज़र से निहाल करो। जो आप सबका अनुभव है, अनुभवी हो। देखा और फ़िदा हो गये। जैसे अभी सोचते हैं, ट्रेनिंग लेते हैं फिर ट्रायल पर आते हैं, फिर कोई चला जाता है कोई रहता है। इतनी मेहनत आपने ली? ट्रेनिंग की क्या? ट्रायल पर रहे क्या? बस आये और खो गये। ऐसी सेवा जब एक ब्रह्मा बाप ने की तो आप इतने ब्राह्मण आत्मायें नहीं कर सकती हो क्या? आपकी पर्सनैलिटी अपना बना दे। ब्रह्मा बाप की भी पर्सनैलिटी थी ना। चाहे सूरत की, चाहे सीरत की लेकिन पर्सनैलिटी थी तब आकर्षित हुए। तो फालो फादर। जब बाप ने आपको आदि में निमित्त बनाया तो जो आदि के हैं, सेवा के निमित्त वा स्थापना के फाउण्डेशन उनको अन्त तक सेवा में रहना ही है। तबियत के कारण शरीर से चक्कर नहीं लगा सकते लेकिन मन से तो लगा सकते हो? उसमें तो खर्चा भी नहीं, बीजा लेने की भी जरूरत नहीं। भाग दौड़ की भी जरूरत नहीं। लेटे-लेटे भी कर सकते हो। क्या समझते हो? अब ऐसा कोई प्लैन बनाओ। नया पाठ शुरू करो। अभी एक फंक्शन तो मना लिया ना। जो सेवा की उसका प्रत्यक्ष फल मिल गया। अभी नई सेवा करो। अच्छा।

बापदादा सिर्फ सामने वालों को नहीं कह रहे हैं, सभी बच्चों को कह रहे हैं। विदेश में भी जो सुन रहे हैं उन्हों को भी कह रहे हैं। जहाँ भी सुन रहे हैं, चाहे शान्तिवन में सुन रहे हैं, चाहे ऊपर पाण्डव भवन में, चाहे विदेश में, जहाँ भी हैं वहाँ बापदादा सभी के लिए कह रहे हैं। अब बेहद के सेवाधारी बनो। समय बेहद की सेवा में लगाओ। बेहद की सेवा में समय लगाने से समस्या सहज ही भाग जायेगी क्योंकि चाहे अज्ञानी आत्मायें हैं, चाहे ब्राह्मण आत्मायें हैं लेकिन अगर समस्या में समय लगाते हैं वा दूसरों का समय लेते हैं तो सिद्ध है कि वह कमजोर आत्मायें हैं, अपनी शक्ति नहीं है। जिसको शक्ति नहीं हो, पांव लंगड़ा हो और उसको आप कहो दौड़ लगाओ, तो लगायेगा या गिरेगा? तो समस्या के वश आत्मायें चाहे ब्राह्मण भी हैं लेकिन कमजोर हैं, शक्ति नहीं है, तो वह कहाँ से शक्ति लायें? बाप से डायरेक्ट शक्ति ले नहीं सकता क्योंकि कमजोर आत्मा है। तो क्या करेंगे? कमजोर आत्मा को दूसरे कोई का ब्लड देकर ताकत में लाते हैं, कोई शक्तिशाली इन्जेक्शन देकर ताकत में लाते

हैं तो आप सबमें शक्तियां हैं। तो शक्ति का सहयोग दो, गुण का सहयोग दो। उन्हों में है ही नहीं, अपना दो। पहले भी कहा ना – दाता बनो। वह असमर्थ हैं, उन्हों को समर्थी दो। गुण और शक्ति का सहयोग देने से आपको दुआयें मिलेंगी और दुआयें लिफ्ट से भी तेज राकेट हैं। आपको पुरुषार्थ में समय भी देना नहीं पड़ेगा, दुआओं के रॉकेट से उड़ते जायेंगे। पुरुषार्थ की मेहनत के बजाए संगम के प्रालब्ध का अनुभव करेंगे। दुआयें लेना – वह सीखो और सिखाओ। अपना नेचरल अटेन्शन और दुआयें, अटेन्शन भी टेन्शन मिक्स नहीं होना चाहिए, नेचरल हो। नॉलेज का दर्पण सदा सामने है ही। उसमें स्वत: सहज अपना चित्र दिखाई देता ही रहेगा। इसीलिए कहा कि पर्सनैलिटी की निशानी है प्रसन्नचित। यह क्यों, क्या, कैसे। यह के के की भाषा समाप्त। दुआयें लेना और देना सीखो। प्रसन्न रहना और प्रसन्न करना – यह है दुआयें देना और दुआयें लेना। कैसा भी हो आपकी दिल से हर आत्मा के प्रति हर समय दुआयें निकलती रहें – इसका भी कल्याण हो। इसकी भी बुद्धि शान्त हो। यह ऐसा, यह वैसा – ऐसा नहीं। सब अच्छा। यह हो सकता है? दुआयें देने आती हैं? लेने तो आती हैं, देने भी आती हैं? देंगे नहीं तो लेंगे कैसे? दो और लो। यह करे नहीं, मैं करूं। ब्रह्मा बाप का सदा स्लोगन रहा, ब्रह्मा बाप बार-बार याद दिलाते रहे - जो कर्म मैं करूंगा, मुझे देख और करेंगे। जब दूसरे करेंगे तब मैं करूंगा .... यह स्लोगन नहीं। जो मैं करूंगा मुझे देख और करेंगे। नहीं तो स्लोगन चेंज कर दो और जगदम्बा माँ का विशेष स्लोगन रहा – हुक्मी हुक्म चला रहा है। वह चला रहा है, हम निमित्त बन चल रहे हैं। तो दोनों स्लोगन सदा याद रखो, इमर्ज। है ही, सुना है ... याद तो रहता है...., नहीं। कर्म में दिखाई दे। तो क्या करेंगे? दुआयें लेंगे, दुआयें देंगे कि ग्लानी करेंगे, फील करेंगे – यह ऐसा, यह वैसा? नहीं। उसको दुआयें दो। कमजोर है, वशीभूत है। भाषा और संकल्प बदली करो। यह संकल्प मात्र भी न हो कि यह बदले, नहीं। मैं बदलूं। और बातों में तो मैं मैं का आता है लेकिन जिस बात में मैं आना चाहिए, उसमें और करे तो करें, यह क्या? अच्छा काम होगा तो कहेंगे मैं। और ऐसा कोई काम होगा तो कहेंगे इसने किया, इसने कहा। उल्टा हो गया ना। कोई क्या भी करता है, मुझे क्या करना है, मुझे क्या सोचना है, मुझे क्या कहना है, इसमें मैं-पन लाओ। बॉडी कान्सेस वाला मैं नहीं, सेवा का मैं। तो ऐसे ही श्रेष्ठ

वायब्रेशन फैलाओ। अभी वाणी कम काम करती है, दिल का सहयोग, दिल के वायब्रेशन बहुत जल्दी काम कर सकते हैं। तो यह हो सकता है?

अगर हो सकता है तो शुभ कार्य में देरी क्यों? अब से हो सकता है? पाण्डव सुनाओ। फिर वहाँ जाकर नहीं बदल जाना। वहाँ जाकर कहेंगे – बापदादा तो कहते हैं लेकिन साकार में तो हम हैं ना। बापदादा को क्या पता, क्या होता है। ऐसे नहीं कहना। मातायें क्या कहेंगी? बापदादा बच्चों को सम्भाले तो पता पड़े, ऐसे सोचेंगी? बापदादा ने आप बड़ों को सम्भाला, छोटे क्या बड़ी बात हैं। तो वहाँ जाकर बदल नहीं जाना। आप लोगों का एक गीत है ना – बदल जाए दुनिया न बदलेंगे हम। यह गीत पक्का है, राइट है? अगर ठीक है तो हाथ उठाओ। फिर तो आपकी जो 21वीं सेंचुरी की कान्फ्रेन्स है ना वह प्रैक्टिकल हो जायेगी। ठीक है ना! प्रैक्टिकल में सृष्टि को नक्शा दिखाओ। यह होगा, होगा नहीं, हो गया है। क्या हुआ? अगर मानों आपने ग्लानी या डिस्ट्रबेन्श सहन भी कर लिया, समा भी लिया तो आपका सहन करना, समाना, आपके लिए अपनी राजधानी निश्चित होना। आपको क्या नुकसान हुआ? फायदा ही हुआ। देखने में आता है - बड़ा मुश्किल है। बात बहुत बड़ी है लेकिन आपने सहन किया, समाया और आपका स्टैम्प लग गया, आपकी राजधानी बन गई। तो फायदा हुआ या नुकसान हुआ?

अभी इस सीज़न में बापदादा ऐसा चारों ओर का स्वरूप देखने चाहते हैं। हर सीजन में वही बातें सुनना अच्छा नहीं लगता। वही कथायें, कथायें, कथायें... तो बापदादा भी बच्चों से प्रश्न करते हैं कि आखिर यह बातें कब तक? या तो समय बता दो कि एक साल और चाहिए, दो साल और चाहिए। इसकी भी डेट तो फिक्स करो। फंक्शन की डेट तो जल्दी फिक्स हो गई। सभी के फंक्शन की डेट फिक्स कर ली है, इस फंक्शन की डेट कौन सी है?

सभी दूर-दूर से प्यार से आये हैं। बापदादा विदेश को भी देख रहा है। भिन्न टाइम होते भी बहुत प्यार से समय देकर सुन रहे हैं। (विदेश में 200 स्थानों पर सैटलाइट द्वारा मुरली सुन रहे हैं) देखो यह भी फास्ट गति है ना। यहाँ का आवाज विदेश में 200 स्थान पर पहुंच रहा है, यह भी आवाज की गति फास्ट है ना। यह भी इन्वेन्शन है ना। तो आप साइलेन्स के पावर की गति फास्ट नहीं कर सकते हो? साइन्स ने भारत का आवाज विदेश तक पहुंचाया और आप

अपने दिल की शुभ भावनायें आत्माओं को नहीं पहुंचा सकते हो! पहुंचा सकते हैं ना? नहीं तो साइन्स आगे चली जायेगी, साइलेन्स की पावर थोड़ा कम दिखाई देगी। इसलिए साइलेन्स की शक्ति को प्रत्यक्ष करो। सभी में है। एक ब्राह्मण भी नहीं है जो कहे कि मेरे में साइलेन्स की शक्ति नहीं है। सभी में है, कितने ब्राह्मण हैं? इतने ब्राह्मणों की सकाश क्या नहीं कर सकती? सभी में साइलेन्स की शक्ति है? तो अभी एक मिनट में सभी अपने साइलेन्स की शक्ति इमर्ज करो। एकदम साइलेन्स मन से, तन से इमर्ज करो। **(बापदादा ने डेड साइलेन्स की ड्रिल करवाई)**

अच्छा। चारों ओर के सर्व विशेष आत्माओं को सदा रूहानी पर्सनैलिटी के नशे में रहने वाली आत्माओं को, सदा बेहद की सेवा में स्वयं को बिजी रखने वाली निमित्त विश्व कल्याणकारी आत्माओं को, सदा ब्रह्मा बाप और जगदम्बा का स्लोगन साकार में लाने वाली, ऊंच ते ऊंच नज़र से निहाल करने की सेवा में सदा रहने वाली बाप समान आत्माओं को बापदादा और जगदम्बा माँ का यादप्यार और नमस्ते।

दादियों तथा बड़े भाईयों से

सभी का दिल का उमंग-उत्साह बहुत अच्छा है। अभी दिल का उमंग-उत्साह इमर्ज करना है। संकल्प बहुत अच्छे-अच्छे करते हैं। लेकिन प्रैक्टिकल में आने में समाने की शक्ति और कल्याण की भावना इसको इमर्ज करना पड़ेगा, तभी संकल्प साकार में होंगे। यह बातें तो एक सागर की लहरे हैं, लहरों को क्या देखना। वह तो अभी-अभी उठती हैं अभी-अभी मर्ज हो जाती हैं। लेकिन सागर समान समाने की शक्ति, साइलेन्स की पावर की शक्ति रत्न पैदा करेगी। तो अच्छा है। अभी आप लोगों की सकाश चाहिए। कमजोरों को बल दो। अपने पुरुषार्थ का समय दूसरों को सहयोग देने में लगाओ। तो आपका पुरुषार्थ स्वतः ही जमा होता जायेगा। दूसरों को सहयोग देना अर्थात् अपना जमा करना। अभी ऐसी लहर फैलाओ – देना है, देना है, देना ही देना है। सैलवेशन लेना नहीं है, सैलवेशन देना है। देने में लेना समाया हुआ है। ठीक है ना। फाउण्डेशन तो पक्का है। बापदादा की सकाश तो है ही। अभी आप आत्माओं के सकाश की आवश्यकता है। बाप की डायरेक्ट इतनी पावर लेने की हिम्मत

नहीं है, बाप तो दे रहे हैं लेकिन कमजोर आत्मा ले नहीं पाती है, उन्हों को आप लोगों का सहयोग चाहिए। बस पाठ पक्का कर लो – आज के दिन कितनी आत्माओं को नि:स्वार्थ सहयोग दिया। आप देना शुरू करेंगे, करते भी हो लेकिन और अन्डरलाइन। तो सबके पास वह लहर फैलेगी।

(भूपाल भाई से)– शान्तिवन कितना बड़ा हो गया। अब सारे भारत के सेवाकेन्द्रों से, पाण्डव भवन से, ज्ञान सरोवर से, चारों ओर से शान्तिवन बड़ा हो गया है। तो बड़ी दिल। अच्छा है, मेहनत भी अच्छी कर रहे हैं।

अभी यू.पी. का टर्न है ना। यू.पी. वाले हाथ उठाओ, जो सेवा में हैं खड़े हो जाओ। बहुत अच्छा। सेवा का प्रत्यक्ष फल है खुशी। तो खुशी हो रही है ना? यह प्रत्यक्ष फल अविनाशी रहे। सभी अच्छे सेवा का सबूत दे रहे हैं इसीलिए बापदादा कहते हैं सबूत देने वाले सपूत बच्चे। तो कितनों की दुआयें ली? दिल से सेवा करना अर्थात् दुआओं का दरवाजा खुलना। तो सेवा की अर्थात् दुआयें ली। तो दुआयें जमा करते जाओ। अच्छा।

आदि रत्न भी अच्छा सबूत दे रहे हैं। मधुबन वाले भी सेवा में अच्छा पार्ट बजा रहे हैं। मधुबन वाले तो सदा बापदादा के साथ का अनुभव सहज करने वाले हैं। मधुबन अर्थात् मधुबन का बाबा। तो मधुबन वाले सदा बाप के साथ हैं। सेवा के लिए बापदादा सदा दिल से दुआयें देते हैं। हर एक बच्चों की सेवा बापदादा सदा देखते हैं। हर एक सेन्टर की सेवा का रिकार्ड बापदादा के पास रहता है। मधुबन का अपना, विदेश का अपना, भारत का अपना, बापदादा तो गीता पाठशालायें भी देखते हैं। आप लोग तो दो चार पांच जगह में चक्कर लगाते हो, बापदादा तो गीता पाठशाला का भी चक्कर लगाते हैं। अच्छा गीता पाठशाला वाले उठो, खड़े हो जाओ। मुबारक हो। तीन पैर देकर तीनों लोकों के मालिक बन गये। चतुर निकले ना। दिया तीन पैर और लिया तीन लोक। बापदादा तो आपकी गीता पाठशालायें, क्लासेज़ का भी चक्कर लगाते हैं। दादियों को टाइम नहीं मिलता है ना इसीलिए बापदादा चक्र लगाते हैं। इसलिए तो अव्यक्त बने हैं ना। (दादी जी से) आपका काम भी अभी अव्यक्त रूप में बापदादा करता है।

बापदादा सब नोट करते हैं, गीता पाठशाला वाले, क्लास कराने वाले किस विधि से चलते हैं, किस विधि से सोते हैं, किस विधि से खाते-पीते हैं, सब नोट

करता है। कहाँ-कहाँ ठीक नहीं होता है। गीता पाठशाला या कहाँ भी सेवा करने वाले हैं, वह स्थान विधि पूर्वक हो, स्वच्छ और मर्यादा पूर्वक भी हो। और जो भी दिनचर्या है, वह ब्राह्मण जीवन के नियम प्रमाण हो, ऐसे चलाओ नहीं, चलता है ....। बापदादा ज्यादा कहते नहीं हैं, समझते हैं थोड़ा मुश्किल लगेगा, इसीलिए कुछ बातें तो छोड़ देते हैं। छोड़ना चाहिए नहीं लेकिन छोड़ देते हैं। ऐसे कभी नहीं समझना कि कौन देखता है, फिर भी हिम्मत रखकर प्रवृत्ति में रहते सेवा के निमित्त बने हैं, यह बापदादा को देखकर खुशी होती है। बाकी चेक करना यह आपका काम है। बाप नहीं कहेंगे, आपका काम है। अगर बाप कहेंगे या दादियां कहेंगी ना तो चार-चार पेज का पत्र आयेगा, ऐसा है, ऐसा है... इसलिए बापदादा कहते नहीं हैं। इशारा देते हैं कि मर्यादापूर्वक अपने आपको चेक करो और चेंज करो। अच्छा। सभी एक दो से प्यारे हो ऐसे नहीं जो आगे बैठे हैं वह प्यारे हैं। आप उन्हों से भी प्यारे हो। अच्छा–ओम् शान्ति।

14-12-97

व्यर्थ और निगेटिव को अवाइड कर अवार्ड लेने के पात्र बनो

आज बापदादा अपने परमात्म प्यार के पात्र आत्माओं को देख रहे हैं। परमात्म प्यार आनंदमय झूला है जिस सुखदाई झूले में सदा झूलते रहते हैं। परमात्म प्यार अनेक जन्मों के दु:खों को एक सेकण्ड में समाप्त कर देता है। परमात्म प्यार सर्व शक्ति सम्पन्न है, जो निर्बल आत्माओं को शक्तिशाली बना देता है। ऐसे श्रेष्ठ परमात्म प्यार के आप कितनी थोड़ी सी आत्मायें पात्र हो। ऐसी श्रेष्ठ पात्र आत्माओं को बापदादा देख-देख हर्षित होते हैं। जैसे बाप हर्षित होते हैं वैसे बच्चे भी हर्षित होते हैं लेकिन नम्बरवार। बापदादा तो यही हर बच्चे को दिल से वरदान देते हैं कि सदा परमात्म प्यार के झूले में झूलने वाले अविनाशी रत्न भव। इस प्यार के झूले से मन रूपी पांव नीचे नहीं करो क्योंकि सारे विश्व की आत्माओं से परम आत्मा के लाडले हो, प्यारे हो। तो बापदादा यही बच्चों को दुआयें देते हैं इसी परमात्म प्यार में लवलीन रहो। ऐसे लवलीन आत्माओं के पास कोई भी पर-स्थिति वा माया की हलचल आ नहीं सकती। नीचे पांव रखते हो तो माया भी भिन्न-भिन्न खेल खेलने आती है, भिन्न-भिन्न रूप धारण कर आकर्षित करती है। लवलीन आत्माओं के सर्व शक्तियों के आगे माया आंख उठाकर भी नहीं देख सकती। आपका तीसरा नेत्र, ज्वालामुखी नेत्र माया को शक्तिहीन कर देता है। तो आप सब जो विशेष आत्मायें हो, सभी ब्राह्मणों को बापदादा द्वारा जन्मते ही तीसरा नेत्र मिला हुआ है। लेकिन बाप देखते हैं कभी-कभी बच्चों का तीसरा नेत्र बहुत मेहनत का पुरुषार्थ करते-करते थक जाता है और थकने के कारण बंद हो जाता है। माया को भी देखने की आंख बहुत दूरादेशी वाली है, दूर से देख लेती है। अभी तो माया भी समझ गई है कि अब हमारा राज्य गया कि गया, इसलिए माया से घबराओ नहीं। खुशी-खुशी से, सर्व शक्तियों के आधार से उनको विदाई दो। आने का चांस नहीं दो, विदाई दो। वह भी ब्राह्मण आत्माओं से, श्रेष्ठ आत्माओं से वार करते-करते थक गई है। आप खुद कमजोरी के कारण माया का आह्वान करते हो, वह थक गई है लेकिन आप आह्वान करते हो तो वह भी चांस ले लेती है। अभी शक्तिहीन हो गई है। आप सबका अनुभव क्या कहता है? अभी माया में

पहले जैसी शक्ति है? उसमें शक्ति है या आप शक्तिशाली हो? वह ट्रायल तो करेगी क्योंकि आप ही आह्वान करते हो तो वह चांस क्यों नहीं देगी। कमजोर बनते क्यों हो? बाप का यह क्वेश्चन है कि मास्टर सर्वशक्तिवान हो या नहीं? सभी मास्टर सर्वशक्तिवान हो? कभी-कभी सर्वशक्तिवान हो या सदा सर्वशक्तिवान हो? क्या हो? सदा शक्तिशाली हो? तो माया को कह दें कि अभी जाओ? आप उसे नहीं बुलाना। बाप माया को कहते हैं अभी समाप्त करो। तो माया बाप को कहती है कि मुझे आह्वान करते हैं। तो बाप क्या करे? अगर किसी भी प्रकार की कमजोरी चाहे मन में, चाहे वचन में, चाहे संबंध-सम्पर्क में आती है तो समझो माया को आह्वान किया। उसको भी आह्वान का वायब्रेशन बहुत जल्दी पहुंचता है।

यह महा उत्सव तो बहुत अच्छे मना रहे हो। लेकिन उत्साह सदा रहे इसलिए उत्सव मना रहे हो। इस वर्ष बहुत उत्सव मना रहे हो ना? (इस ग्रुप में ईश्वरीय सेवा के आदि रत्न भाईयों का सम्मान समारोह तथा टीचर्स बहिनों की सिल्वर जुबली का कार्यक्रम रखा गया है) हर ग्रुप में उत्सव मना रहे हैं तो बाप समझते हैं कि यह वर्ष उत्सव मनाना अर्थात् माया को विदाई देना। ऐसे नहीं गोल्डन चुन्नी पहनकर बैठ जाओ, गोल्डन चुन्नी पहनना माना गोल्डन एजड बनना। दृश्य तो बहुत अच्छा लगता है लेकिन सदा गोल्डन स्थिति की चुन्नी वा दुपट्टा पड़ा रहे। ऐसे नहीं दुपट्टा उतरा, उत्सव पूरा हुआ और जैसे थे वैसे रहे। यह उत्साह दिलाने का फंक्शन है। तो जिन्होंने उत्सव मनाया है या मनाने के लिए आये हैं वह हाथ उठाओ। बापदादा खुश है। खूब मनाओ लेकिन मनाना अर्थात् बनना और बनाना। उत्सव मनाने समय अपने आपको अन्डरलाइन करो सदा याद और सेवा के उत्साह में रहने वाली आत्मा हूँ। बापदादा को भी दृश्य अच्छा लगता है। तो यह वर्ष बापदादा माया को विदाई देने का वर्ष मनाने चाहते हैं। तो ऐसा उत्सव मनायेंगे ना? कल जो मनायेंगे, ऐसा ही मनायेंगे ना? सिल्वर जुबली मनायेंगे ना? गोल्डन जुबली हो, सिल्वर जुबली हो लेकिन है तो उत्सव ना! ऐसे नहीं सोचना कि हम तो सिल्वर जुबली वाले हैं, पहले गोल्डन वाले बनें फिर हम बनें। ऐसे नहीं सोचना। और जिन्होंने नहीं भी मनाया है, वह भी ऐसे नहीं समझना कि जो उत्सव मनाने वाले हैं उन्हों के लिए बापदादा कह रहे हैं। सभी के लिए कह रहे हैं। ब्राह्मण जीवन का उत्सव तो मनाया है ना! ब्राह्मण तो

सभी बन गये या ब्राह्मण भी बन रहे हैं? बन गये हैं। तो ब्राह्मण जन्म का उत्सव मनाने वाली आत्मायें अर्थात् सदा उत्साह में रहना और औरों को भी उत्साह में लाना। यही ब्राह्मणों का आक्यूपेशन है। वह ब्राह्मण तो मुख से कथा करते हैं, आप ब्राह्मण मुख से भी बोलते तो उत्साह दिलाने के लिए बोलते हैं। कैसी भी आत्मा हो चाहे आपके विरोधी आत्मा हो, क्योंकि हिसाब-किताब भी यहाँ ही चुक्तू होना है। लेकिन कैसी भी आत्मा हो ब्राह्मणों का काम है उत्साह भरी कहानी सुनाना। उत्साह की बातें सुनाना। वह रोता हो, आप उन्हें उत्साह में नचा दो। जब कोई दिल में उत्साह होता है तो क्या होता है? पांव नाचने लगते हैं। जैसे यह फंक्शन करते हो ना। तो लास्ट में क्या करते हो? सब डांस करते हैं ना। यह तो पांव की डांस है। ब्राह्मण आत्मा सिवाए उत्साह दिलाने और उत्साह में रहने के बिना रह नहीं सकती। उत्साह मिटाने वाली बातें होती हैं और होंगी लेकिन बापदादा इस वर्ष में यही सब बच्चों से शुभ आश रखते हैं कि बीती सो बीती, आज तक जो भी कैसी भी आत्मायें संबंध-सम्पर्क में रही हैं, जैसी भी हैं, चाहे निगेटिव भी हैं, सामना करने वाली भी हैं, ब्राह्मण जीवन को हिलाने वाली भी हैं लेकिन इस वर्ष में निगेटिव और वेस्ट दृष्टिकोण समाप्त करो। स्नेह दो, शक्ति दो। अगर स्नेह नहीं दे सकते, शक्ति नहीं दे सकते तो देखते, सुनते, सम्पर्क में आते वेस्ट और निगेटिव बातों को दिल में धारण करने में अवाइड करो। मन और बुद्धि में धारण नहीं हो, अवाइड करो। परिवर्तन करो। निगेटिव को वा वेस्ट को परिवर्तन करके दिल में समाओ। ऐसे दोनों बातों को जो अवाइड करेगा उसको बापदादा द्वारा, ब्राह्मण परिवार द्वारा बहुत अच्छे ते अच्छा, बड़े ते बड़ा अवार्ड मिलेगा। और आत्माओं को तो अवार्ड देने वाली आत्मायें होती हैं। अवार्ड मिलता है ना? तो यह परमात्म अवार्ड है। अवाइड करो, अवार्ड लो। हिम्मत है? अच्छा।

पाण्डवों ने जिन्होंने फंक्शन मनाया, उन्हों में हिम्मत है? अवार्ड लेंगे? सभी ने हाथ उठाया, आज की डेट अन्डरलाइन करना। आज कौन सी डेट है? (14 दिसम्बर) तो हर मास की 14 तारीख अपने को चेक करना। अच्छा - सिल्वर जुबली वाले जो समझते हैं अवार्ड लेंगे, वह हाथ उठाओ। ऐसे देखा-देखी नहीं उठाओ। शर्म के कारण नहीं उठाओ। बापदादा चांस देते हैं, अगर कोई में हिम्मत नहीं है तो नहीं उठाओ, कोई हर्जा नहीं। बापदादा और सकाश देगा,

ऐसी कोई बात नहीं है। ऐसे कोई हैं जो समझते हैं और थोड़ी हिम्मत चाहिए? कोई सिल्वर जुबली वाली टीचर्स ऐसी हैं? चलो यहाँ हाथ नहीं उठाओ, शर्म आता हो तो लिखकर देना। जब फंक्शन मनाओ तब देना, समझते हो हमको एक्स्ट्रा हिम्मत चाहिए, तो उसके लिए विशेष ट्युशन रखेंगे। जो पढ़ाई में कमजोर होता है तो क्या करते हैं? ट्युशन रखते हैं ना? अच्छा। मधुबन वाले हाथ उठाओ। खड़े हो जाओ। मधुबन वाले चांस अच्छा लेते हैं। अच्छा – मधुबन वाले अवार्ड लेंगे? सभी ने उठाया? ट्युशन नहीं चाहिए? बहादुर हैं। अच्छा - बापदादा हिसाब लेंगे। मुबारक हो मधुबन वालों को।

बाकी जो कोने-कोने से स्नेही, सहयोगी, संबंध में रहने वाले नये पुराने बच्चे आये हैं, उन्हों को विशेष बापदादा एक तो आने की मुबारक देते हैं, दूसरा मर्यादा में चलने की भी मुबारक देते हैं। कम से कम एक साल तो नये भी मर्यादापूर्वक चले हैं तब यहाँ पहुंचे हैं। कोई चतुर भी होंगे लेकिन मैजारिटी तो मर्यादा को पालन करने वाले हैं। तो प्रवृत्ति में रहते मर्यादा में चलने वाली, मर्यादा रखने वाली आत्माओं को मर्यादा की भी मुबारक है।

अच्छा – मातायें हिम्मत रखती हो कि हम माया को विदाई देंगे? अगर हाँ तो एक हाथ की ताली बजाओ। अच्छा - प्रवृत्ति वाले पाण्डव, हिम्मत है? अवार्ड लेना है? एक हाथ की ताली बजाओ। बापदादा को भी खुशी होती है, देखो बेहद का हाल, बेहद का नशा चढ़ाता है ना। आराम से बैठने की जगह तो है ना? अभी आपका उल्हना होगा कि दूर से देख नहीं सकते हैं। लेकिन अभी तो फिर भी आप बहुत आराम से बैठकर सुन तो सकते, टी.वी. में देख तो सकते। जब 9 लाख तैयार करेंगे तो क्या होगा? फिर बैठने की जगह मिलेगी? इसीलिए जो जितना पहले आया वह भाग्यवान है। तो जैसे अभी आप लोग अपने से पहले वालों का भाग्य गाते हो कि आप बहुत अच्छे हैं। ऐसे बापदादा कहते हैं कि अभी जो आप आये हो ना, उन्हों को भी पीछे वाले कहेंगे, आप बहुत भाग्यवान हैं। वृद्धि तो होनी है ना? नहीं तो राजधानी कैसे बनेगी?

तो यह वर्ष विदाई और बधाई का है और इस वर्ष में विशेष जो बच्चों ने संकल्प किया है, वह प्रैक्टिकल में करने वालों को बापदादा की एक्स्ट्रा मदद भी मिलेगी। सिर्फ दृढ़ रहना। बीच-बीच में ड्रामा पेपर लेगा लेकिन संकल्प में

दृढ़ रहना, संकल्प रूपी पांव हिले नहीं, अचल रहे तो बापदादा द्वारा एक्स्ट्रा मदद की अनुभूति होगी। सिर्फ लेने की शक्ति चाहिए। एक बल, एक भरोसा.. कुछ भी हो जाए, बनना ही है। यह संकल्प रूपी पांव मजबूत रखना। तो बातें आयेंगी भी लेकिन ऐसे ही अनुभव करेंगे जैसे प्लेन में बादल नीचे रह जाते हैं और स्वयं बादलों के ऊपर रहते हैं। बादल एक मनोरंजन का दृश्य बन जाता है। ऐसे कितने भी काले बादलों जैसी बातें हों, जिसमें कुछ समस्या का हल या समाधान उस समय दिखाई न भी दे लेकिन यह दृढ़ निश्चय हो कि यह बादल आये हैं जाने के लिए। यह बादल बिखरने वाले ही हैं, रहने वाले नहीं हैं। ऐसे उड़ती कला की स्टेज पर स्थित हो जाओ तो कितने भी गहरे काले बादल बिखर जायेंगे और आप दृढ़ता के बल से सफल हुए ही पड़े हैं। घबराओ नहीं, यह कैसे होगा! अच्छा होगा, क्योंकि बापदादा जानते हैं जितना समय समीप आ रहा है उतना नई-नई बातें, संस्कार, हिसाब-किताब के काले बादल आयेंगे। यहाँ ही सब चुक्तू होना है। कई बच्चे कहते हैं कि दिन-प्रतिदिन और ही ऐसी बातें बढ़ती क्यों हैं? जिन बच्चों को धर्मराजपुरी में क्रास नहीं करना है, उन्हों के संगम के इस अन्तिम समय में स्वभाव-संस्कार के सब हिसाब-किताब यहाँ ही चुक्तू होने हैं। धर्मराजपुरी में नहीं जाना है। आपके सामने यमदूत नहीं आयेंगे। यह बातें ही यमदूत हैं, जो यहाँ ही खत्म होनी हैं इसीलिए बीमारी बाहर निकलकर खत्म होने की निशानी है। ऐसे नहीं सोचो कि यह तो दिखाई नहीं देता है कि समय समीप है और ही व्यर्थ संकल्प बढ़ रहे हैं! लेकिन यह चुक्तू होने के लिए बाहर निकल रहे हैं। उन्हों का काम है आना और आपका काम है उड़ती कला द्वारा, सकाश द्वारा परिवर्तन करना। घबराओ नहीं। कई बच्चों की विशेषता है कि बाहर से घबराना दिखाई नहीं देता है लेकिन अन्दर मन घबराता है। बाहर से कहेंगे नहीं-नहीं, कुछ नहीं। यह तो होता ही है लेकिन अन्दर उसका सेक होगा। तो बापदादा पहले से ही सुना देता है कि घबराने वाली बातें आयेंगी लेकिन आप घबराना नहीं। अपने शस्त्र छोड़ नहीं दो। जो घबराता है ना तो जो भी हाथ में चीज़ होती है वह गिर जाती है। तो जब यह मन में भी घबराते हैं ना तो शस्त्र व शक्तियां जो हैं वह गिर जाती हैं, मर्ज हो जाती हैं। इसीलिए घबराओ नहीं, पहले से ही पता है। त्रिकालदर्शी बनो, निर्भय बनो। ब्राह्मण आपस में सम्बन्ध में निर्भय नहीं बनना, माया से निर्भय बनो। संबंध में

तो स्नेह और निर्माण। कोई कैसा भी हो आप दिल से स्नेह दो, शुभ भावना दो, रहम करो। निर्माण बन उसको आगे रख आगे बढ़ाओ। जिसको कहा जाता है कारण रूपी निगेटिव को समाधान रूपी पॉजिटिव बनाओ। यह कारण, यह कारण, यह कारण... कारण वा समस्या को पॉजिटिव समाधान बनाओ।

बापदादा को एक बात पर कभी-कभी हंसी आती है। पता है कौन सी बात? जानते हो? एक तरफ तो चैलेन्ज करते हैं - बाबा हम प्रकृति जीत बनेंगे। प्रकृति को भी परिवर्तन करेंगे, यह कहते हो ना? प्रकृति को बदलेंगे ना? ऐसी चैलेन्ज करने वाले प्रकृति को परिवर्तन कर सकते हैं। लेकिन जब सम्बन्ध-सम्पर्क में कोई बातें होती हैं तो उसको समाधान नहीं कर सकते। परिवर्तन नहीं कर सकते। हंसी की बात है ना – प्रकृति जड़ है उसके लिए तो चैलेन्ज है लेकिन ब्राह्मण आत्माओं को परिवर्तन करना, वह नहीं होता है। और फिर क्या सोचते हैं? वह हो नहीं सकता, यह होना ही नहीं है। हो ही नहीं सकता, बदल ही नहीं सकता। तो प्रकृति को कैसे बदलेंगे? खुद बदलकर औरों को बदलो। चलो वह रांग है, 100 परसेन्ट रांग है। लेकिन आपका वायदा क्या है? बाप से क्या वायदा किया है? स्व परिवर्तन से विश्व का परिवर्तन करेंगे? यह वायदा है या भूल गये हैं? हाँ तो सब करते हो। कैसी भी बातें हों, बातों को बदलने के लिए मदद भले लो लेकिन यह बदलना ही मुश्किल है, यह सर्टीफिकेट नहीं दो। किसने आपको अथॉरिटी दी है सर्टीफिकेट देने की? तो यह सोचना कि यह तो होना ही नहीं है, यह तो ठीक होगा ही नहीं। किसने आपको जज बनाया? ऐसे ही जज की कुर्सी पर बैठ जाते हो? या तो वकील बनते, बहुत कायदे कानून बताते, बहस करते, ऐसा नहीं ऐसा। ऐसा नहीं ऐसा। न वकील बनो, न जज बनो। यह अथॉरिटी बापदादा ने दी नहीं है, जो निमित्त हैं उनका सहयोग लो। वह निमित्त आत्मायें भी बापदादा की राय से करती हैं। अपनी मनमत नहीं चलाती हैं।

तो इस वर्ष में यह सब बातें समाप्त करो अर्थात् मन से परिवर्तन करो, अवाइड करो, ऊपर पहुंचाया, जिम्मेवारी खत्म। आपसे परिवर्तन नहीं होता तो निमित्त आत्माओं तक पहुंचाना यह आपका फ़र्ज है। फिर खुद लॉ हाथ में नहीं उठाओ, तभी अवार्ड के पात्र बनेंगे। तो सदा उत्साह में रहो और उत्साह बढ़ाओ, यही स्मृति में बापदादा इमर्ज कर रहे हैं। जब स्वयं उत्साह में रहेंगे तो सभी को हाथ में हाथ अर्थात् मन के स्नेह का हाथ में हाथ ले नाचेंगे, खुश

रहेंगे। स्थूल हाथ नहीं, मन से स्नेह के सहयोग का हाथ। इसको ही हाथ में हाथ मिलाना कहा जाता है। स्नेह क्या नहीं कर सकता और यह परमात्म स्नेह है, परमात्म प्यार है। वह क्या नहीं कर सकता! असम्भव ब्राह्मण डिक्शनरी में है ही नहीं। उत्साह वाला कभी भी किसी भी बात में निराश, दिलशिकस्त नहीं होता।

तो यह पाण्डव जो विशेष उत्सव मना रहे हैं, वह क्या करेंगे? हर एक पाण्डव यह दृढ़ संकल्प करो कि मुझे परिवर्तन करने की जिम्मेवारी है क्योंकि आदि पालना वाले हो ना? तो ब्रह्मा बाप ने क्या किया? जिम्मेवारी उठाई ना? या कहा यह तो बदलना ही नहीं है? यह तो होना ही नहीं है? नहीं। इतनी आत्माओं का परिवर्तन करके दिखाया ना? चलो दूसरों को नहीं देखो, अपने को तो देख सकते हो, आपका परिवर्तन तो किया? या आपकी कमजोरियां देखी? नहीं देखी। तो ब्रह्मा बाप की पालना लेने वाले निमित्त हो, फॉलो ब्रह्मा को करने के लिए। इसमें ऐसे नहीं समझो - यह तो बड़ों की जिम्मेवारी है, हम तो डायरेक्शन पर चलने वाले हैं। नहीं। स्व-परिवर्तन से सर्व के सम्बन्ध-सम्पर्क में परिवर्तन लाने की जिम्मेवारी हर छोटे बड़े की है। जब बापदादा पूछते हैं क्या बनेंगे? तो सभी क्या कहते हैं? विश्व राजन बनेंगे। छोटा-मोटा भी नहीं, विश्व महाराजा बनेंगे। तो जब विश्व महाराजा बनने की जिम्मेवारी है तो सम्बन्ध-सम्पर्क में परिवर्तन करने की जिम्मेवारी नहीं है? हर एक आत्मा बाप की पालना का रिटर्न - परिवर्तन करने में जिम्मेवार है, सहयोगी है। ऐसे है? यह ग्रुप तो पालना लेने वाला है। तो पालना लेना उसका रिटर्न है - बाप समान पालना देना, इसमें छोटे नहीं बनो। इसमें हर एक बड़ा है। चाहे एक साल वाला भी है तो भी जिम्मेवार है। तो आप तो 30 साल से पुराने हो। तो बापदादा इस ग्रुप को परिवर्तक ग्रुप कहते हैं। चलो कहाँ झुकना भी पड़े, क्या ब्रह्मा बाप को झुकना नहीं पड़ा? विरोध नहीं देखा? सबसे ज्यादा गाली तो ब्रह्मा बाप ने खाई। आपोजीशन सबसे बड़ा ब्रह्मा बाप ने देखा। अगर दो चार भी आपोजीशन में हैं तो क्या बड़ी बात है? तो समझा यह ग्रुप कौन सा है? परिवर्तक ग्रुप। ठीक है ना? नाम पसन्द है? काम पसन्द है? सिर्फ नाम नहीं, काम भी।

अच्छा - सिल्वर जुबली वाला ग्रुप क्या करेगा? यह तो हैं ही निमित्त टीचर्स। तो यह सिल्वर जुबली मनाने वाला ग्रुप सदा अपने उत्साह के फीचर्स, हर्षित, खुश रहने के फीचर्स द्वारा अनेक आत्माओं को हर्षायेंगे। टीचर्स का काम

ही है, रोता कोई आवे और नाचता जावे। परेशान कोई आवे और अपनी शान में स्थिति हो जाए। परेशान का अर्थ ही है, शान से परे हो जाता है। तो टीचर्स का काम है परेशान को शान में स्थित करना। यह है सिल्वर जुबली मनाने वालों की सेवा। ऐसे नहीं खुद ही परेशान हो। कई ऐसे जिज्ञासु कहते भी हैं कि बाहर से परेशान होकर आते हैं और कभी-कभी कोई-कोई सब नहीं हैं, कोई-कोई टीचर ही परेशान होती हैं, तो हमको क्या शान में स्थित करेंगी। लेकिन नहीं, टीचर्स अर्थात् सदा अपने फीचर्स द्वारा हर आत्मा की सेवा करे। बोलने का टाइम नहीं हो, कोई हर्जा नहीं। एक सेकण्ड में अपने हर्षित दिल से, हर्षित मन से परमात्म स्नेह से (आत्मा का स्नेह नहीं) परमात्म स्नेह द्वारा, दृष्टि द्वारा उसको भी हर्षित बना दे। टीचर्स अगर कभी परेशान होते भी हो गलती से, होना नहीं चाहिए लेकिन गलती से हो भी जाते हो तो फौरन बापदादा से कनेक्शन जोड़कर, रूहरिहान करके उसी समय अपने को ठीक करो। यहाँ बापदादा से कनेक्शन करने का ड्रामा दिखाया ना? (कल बम्बई के छोटे बच्चों ने बापदादा से रूहरिहान का एक ड्रामा किया था) तो आप बापदादा से कनेक्शन नहीं कर सकते हो क्या? आपके पास वायरलेस सेट नहीं है क्या? आजकल तो सेटेलाइट है ना, वह तो फौरन हो जाता है। तो टीचर्स के पास है? सबके पास है सिर्फ समय पर यूज़ करो। समय पर सिर्फ स्मृति का स्विच आन करो बस। फिर देखो सेकण्ड में परिवर्तन होता है या नहीं। जिस समय कोई ऐसी बात हो तो यह ड्रामा याद करना। लगाना कनेक्शन। तो समझा सिल्वर जुबली वालों को क्या करना है? बापदादा को तो टीचर्स सबसे ज्यादा याद रहती हैं। क्यों? जो भी सेवा के निमित्त हैं तो ब्रह्मा बाप की भुजाएं बनकर निमित्त हैं। तो बाप समान सेवा में हैं ना। इसलिए ऐसे निमित्त सेवाधारी बापदादा को सदा याद हैं। ऐसे नहीं समझना कि जिन्हों की गोल्डन जुबली हुई वह याद हैं, आप नहीं। पहले आप। छोटों के ऊपर और ही ज्यादा स्नेह होता है। इसलिए अभी मुझे बदलना है, मुझे बिगड़ी को बनाना है, दूसरा बिगाड़े, मेरा काम है बनाना। यह शिकायत नहीं, यह बिगाड़ते हैं ना, यह करते हैं ना। नहीं। वह बिगाड़ने में होशियार हैं, आप अपने काम में होशियार हो। बिगाड़ने वाला होशियार, बनाने वाला कम क्यों? आप होशियार हो जाओ, बिगाड़ने वाला क्या भी करे। तो बिगड़ी को बनाने वाले बाप समान आप आत्मायें हो। यह काम करेंगे तो हाथ हिलाओ। करेंगे,

पक्का? या वहाँ जाकर कहेंगे दादी क्या करें? शिकायत तो नहीं करेंगे? आज सब शिकायत का फाइल यहाँ शान्तिवन के डायमण्ड हाल में खत्म करके जाओ। हर्षित रहना है और हर्षित बनाना है। ठीक है ना? सिल्वर जुबली वालों से मिले ना? अब शिकायत तो नहीं होगी ना, हमसे तो मिले नहीं? आज दो ग्रुप हैं। लेकिन बाप को पाण्डव भी प्यारे हैं तो टीचर्स भी प्यारी हैं। तो क्या समझती हो? हो सकता है? कांध हिलाओ। पाण्डव हो सकता है कि होना ही है? क्या कहेंगे, हुआ ही पड़ा है? एक एक कांध हिलाओ। यही कहो हम नहीं करेंगे तो कौन करेगा। बापदादा की आशाओं के सितारे आप बच्चे हो। तो आप नहीं करेंगे तो कौन करेगा? अच्छा।

मातायें सब खुश हो? कोई तकलीफ तो नहीं हुई? (सभी ने तालियां बजाई) इन्हों को यह दो हाथ की ताली बजाना अच्छा लगता है। अच्छा पाण्डव सब ठीक हैं? कोई तकलीफ नहीं? शान्तिवन अच्छा बना है, पसन्द है? बापदादा तो खुश होते हैं कि सभी बच्चों के सहयोग से यह शान्तिवन बना है। आप सबके सहयोग से यह स्थान बना है। इसलिए शान्तिवन के सर्व सहयोगी आत्माओं को बापदादा पदमगुणा मुबारक देते हैं।

डबल फारेनर्स हाथ उठाओ, देखो डबल फारेनर्स से हर सीजन बहुत अच्छी सज जाती है। डबल फारेनर्स मधुबन के श्रृंगार हो। आपको देख करके सभी को बहुत खुशी होती है। क्यों खुशी होती है, जानते हो? क्योंकि आप फारेनर्स बहुत फारेन क्लचर की दीवारें तोड़कर आये हो, यह जो गीत बजता है ना - वह आप डबल फारेनर्स के लिए बहुत अच्छा है। भारत वालों ने दीवारें तोड़कर आने की हिम्मत रखी लेकिन डबल फारेनर्स ने डबल दीवारें तय करके अपना विशेष पार्ट नूंध लिया। तो जहाँ भी डबल फारेनर्स हैं, सुन रहे हैं, उन सबको भी बापदादा पदमगुणा मुबारक देते हैं। डबल फारेनर्स इस ब्राह्मण परिवार के विशेष डायमण्ड हो। तो डायमण्ड चमकता है, कितना प्यारा लगता है। ऐसे डबल फारेनर्स इस ब्राह्मण परिवार में ब्राह्मण युग में बहुत-बहुत चमकते हुए विशेष आत्मायें हैं। फारेन के पत्र भी आये हैं, तो जिन्होंने भी पत्र भेजे हैं, बापदादा के पास तो सबके दिल की बातें पहुंच ही जाती हैं। उमंग-उत्साह और तीव्र पुरुषार्थ की खुशबू अच्छी आ रही है। अभी समय जैसे जैसे बीतता जाता है, तो बापदादा देख रहे हैं कि डबल फारेनर्स मैजारिटी अभी नालेजफुल अच्छे

बन गये हैं। माया को परखने की नज़र अब अच्छी तेज हो रही है। इसलिए बापदादा पत्रों से खुशबू लेते हैं और सच्ची दिल वाले हैं। गिरने की भी सच्चाई लिखते हैं तो उड़ने की भी सच्चाई लिखते हैं। साफ दिल हैं। तो जहाँ साफ दिल है, तो बापदादा सदा कहते हैं साफ दिल मुराद हांसिल। जो उमंगें, आशायें रखते हैं वह प्राप्त हो जाती हैं अर्थात् मुराद हांसिल हो जाती है। बापदादा की मदद को कैच करने में अच्छे हैं इसलिए पत्र भेजने वाले वा अपने अपने स्थान पर सुनने वाले वा चारों ओर के डबल फारेनर्स को बापदादा दिल से पदमगुणा यादप्यार, मुबारक दे रहे हैं। अच्छा।

बाम्बे के सेवाधारी ग्रुप हाथ उठाओ। अच्छा किया है। बाम्बे को तो बापदादा नर-देसावर कहते हैं। कमाने वाला बच्चा। बापदादा बाम्बे को सदा याद करता है। अच्छी हिम्मत से कर रहे हो, सब सन्तुष्ट हैं इसकी मुबारक। बाम्बे में अच्छे-अच्छे महारथी हैं, एक दो से आगे हैं। कोई किसी से कम नहीं है। बापदादा विशेषता के आधार से कहते हैं। अच्छी हिम्मत की। बापदादा को खुशी है कि बाम्बे सेवा की स्टेज पर आया। अच्छा लग रहा है ना? सेवा की स्टेज अच्छी है ना? अच्छा। हर एक अपने नाम से समझे कि मेरे को मुबारक और याद-प्यार स्पेशल है। सिर्फ नाम नहीं ले रहे हैं। अगर नाम लेंगे तो माला बन जायेगी। अच्छा।

चारों ओर के परमात्म प्यार के सुखमय, आनंदमय झूले में झूलने वाली लकी और लवली आत्माओं को, सदा दृढ़ संकल्प द्वारा समाधान स्वरूप श्रेष्ठ आत्माओं को, सदा परमात्म अवार्ड लेने के पात्र हीरो पार्टधारी आत्माओं को, सदा बापदादा की पालना का रिटर्न देने वाले बाप के दिलतख्त नशीन आत्माओं को बापदादा का पदमगुणा, अरब-खरब से भी ज्यादा यादप्यार और नमस्ते।

दादी जानकी तथा सर्व दादियों को दृष्टि देते हुए:-

अच्छी ड्युटी ली है? सभी को खुशी में नचाने की ड्युटी अच्छी है। अभी यही चाहिए। शिक्षा सुनने कोई नहीं चाहता। तो सभी आदि रत्न यह ड्युटी विशेष बजाओ। कोई कैसा भी हो लेकिन आपके सामने आने से खुशी में नाचना शुरू कर दे। डायरेक्ट दाता के बच्चे हो ना और पहली रचना हो। तो आदि रचना का प्रभाव तो है ना। तो बापदादा भी आदि रत्नों को विशेष स्नेह देता है स्पेशल। अभी ऐसे साथियों को तैयार करो जो वायुमण्डल फैलायें। अच्छा। ओम् शान्ति।

31-12-97

इस नये वर्ष को मुक्ति वर्ष मनाओ, सफ़ल करो - सफ़लता लो

आज बापदादा अपने नव जीवन की श्रेष्ठ आत्माओं को, नव युग रचता आत्माओं को नये वर्ष की मुबारक दे रहे हैं। दुनिया के लिए नया वर्ष आरम्भ हो रहा है, आप बच्चों के मन में नव युग याद आ रहा है। जैसे नया वर्ष कल आने वाला है, ऐसे नव युग भी कल आने वाला है। ऐसे स्मृति आती है कि हमारा नया युग आया कि आया? जैसे आज नये वर्ष के लिए मनुष्य आत्माओं के दिल में खुशी है, अल्पकाल का उत्साह है, ऐसे आप आत्माओं को नव युग आने की सदाकाल की खुशी है। ऐसे लगता है कि बस आज और कल की बात है। आज पुराना युग है, कल नया युग सामने खड़ा है। ड्रामानुसार आज और कल की बात है, ऐसे स्पष्ट स्मृति अनुभव होती है? या सिर्फ नया वर्ष मनाने आये हो? नया वर्ष नव युग की याद दिलाता है। यह उमंग-उत्साह दिल में रहता है कि कल हम क्या होंगे? अपनी नई शरीर रूपी ड्रेस सामने आती है? याद है आपका नया शरीर नये युग में कैसा सुन्दर था? कैसा युग था, कैसे राज्य था, कैसे प्रकृति दासी थी, सतोप्रधान थी! उस राज्य अधिकारी स्थिति की स्मृति स्पष्ट है? दिखाई दे रही है, वह नई दुनिया कितनी सुन्दर है? एक सेकण्ड में अपने राज्य अधिकार का अनुभव कर सकते हो या कर रहे हो? बस एक सेकण्ड में नव युग में चले जाओ। जाना आता है? कितने वार यह राज्य अधिकार प्राप्त किया है, याद है? अनुभव करो अपना राज्य कितना प्यारा है! न्यारा भी है तो प्यारा भी है। तो सेकण्ड में बस हमारा राज्य और हमारा विश्व राज्य अधिकारी स्वरूप स्मृति में आ जाए। वे लोग नये वर्ष में एक दो को अल्पकाल की गिफ्ट देते हैं और बाप गिफ्ट देते हैं नव युग के, विश्व राज्य के अधिकार की। यह अविनाशी गिफ्ट इस समय बाप द्वारा आप सबके लिए अटल भावी बन जाती है। जिस भावी को कोई टाल नहीं सकता। अचल है, अखण्ड है। तो ऐसी गिफ्ट मिल गई है ना? तो यह गिफ्ट सम्भाल कर रखना, कोई डाकू यह गिफ्ट ले नहीं जाये। सबके पास डबल लॉक है ना? आजकल सिंगल लॉक नहीं चलता, डबल लॉक चाहिए। गाडरेज का लॉक नहीं, गॉड का लॉक चाहिए। तो गॉड ने ऐसा लॉक दिया है जो कोई भी तोड़ नहीं सकता।

अगर अलबेले हो जायेंगे तो डाकू आयेगा। डाकू भी होशियार होते हैं, उन्हों को पता पड़ जाता है कि इनका लॉक आज ढीला है, इसलिए अलबेले नहीं होना।

तो इस नये वर्ष में स्व के प्रति और सेवा के प्रति कोई नया प्लैन बनाया है? कान्फ्रेन्स करनी है, डायलॉग करना है, वह तो है ही। नया प्लैन क्या बनाया है? बापदादा इस नये वर्ष में, देश वा विदेश में वैरायटी वर्ग की विशेष आत्माओं का एक गुलदस्ता देखने चाहते हैं। वर्गों की सेवा तो बहुत की है ना, अभी हर वर्ग का ऐसा एक-एक रत्न तैयार करो, एक भी वर्ग मिस नहीं हो, क्यों? अभी जब समय समीप आ रहा है तो कोई भी वर्ग वाले उल्हना नहीं दें कि हमारा वर्ग रह गया। एक-एक वर्ग में विशेष एक-एक क्वालिटी का हो जो माइक का काम कर सके, क्योंकि जैसे समय समीप आ रहा है तो सर्व वर्ग वाले, सर्व धर्म वाले सबके मुख से एक आवाज निकले कि बाप आ गया, क्योंकि इस संगमयुग में ही सभी धर्म स्थापक आत्माओं वा सर्व वर्ग की आत्माओं में बीज पड़ना है। वह इतनी पावर अपने में ले जायेंगे जो फिर अपने-अपने समय पर वर्ग वा धर्म के इन्वेन्टर बनेंगे। तो सब बीज आपको तैयार करने हैं, जो समय पर अपने-अपने डिपार्टमेंट के निमित्त बनेंगे क्योंकि बीज बाप है और आप ब्राह्मण आत्मायें तना हो, सर्व आत्मायें बीज और तना द्वारा ही निकलते हैं। तो ऐसा गुलदस्ता बाप के सामने लाओ, विदेश वाले भी और देश वाले भी। एक-एक सैम्पुल लाओ, सैम्पुल से अन्य अनेकों स्वत: ही बनते हैं। लेकिन एक-एक पावरफुल माइक बनें, ऐसे बीज कहो, धर्म या वर्ग कहो वा वैरायटी फूलों का गुलदस्ता कहो तैयार होना चाहिए। एक भी मिस नहीं हो तब कहा जायेगा विश्व कल्याणकारी वा सर्व आत्माओं के निमित्त उद्धार करने वाली आत्मायें। एक शाखा भी कम नहीं, सर्व शाखायें चाहिए। चाहे आपके नव युग में कई वर्ग नहीं होंगे लेकिन उन आत्माओं में भी द्वापर में या कलियुग में जो इन्वेन्टर निमित्त हैं, उन्हों को शक्ति आप द्वारा ही मिलनी है। जैसे सभी धर्म पितायें आपके आगे बाप का झण्डा, प्रत्यक्षता का झण्डा लहराने में सहयोगी बनेंगे, वैसे ही सर्व वर्ग वाले भी प्रत्यक्षता का झण्डा लहराने में सहयोगी बनेंगे, तब कहेंगे सर्व के सहयोग से सुखमय दुनिया की स्थापना। सहयोगी बन रहे हैं लेकिन उनमें से अब विशेष आत्मा को सहयोग में आगे बढ़ाओ, निमित्त बनाओ। निमित्त बनाने का बीज डालो। समझा क्या करना है? विदेश में भी अभी

आई.पी. या वी.आई.पी. के कनेक्शन तो सहज हो गये हैं ना। मुश्किल नहीं है ना? मुश्किल है या सहज है? तो आप सभी जब दूसरे न्यु ईयर में फिर आयेंगे तो अगले न्यु ईयर की सौगात बापदादा ऐसा गुलदस्ता देखने चाहते हैं। एक साल है, कम नहीं है। देश वाले भी करेंगे, विदेश वाले भी करेंगे ? (हाँ जी) अवश्य करेंगे। कहो हुआ ही पड़ा है। सिर्फ निमित्त बनना है। डबल विदेशी बोलो? सब विदेशी ताली बजाओ। अच्छा-देखेंगे पहले कौन तैयार करता है - देश या विदेश? और कितना बड़ा गुलदस्ता तैयार करते हैं? ठीक है ना? चारों ओर सुन रहे हैं। देश वाले भी सुन रहे हैं, विदेश वाले भी सुन रहे हैं। अभी उमंग आ रहा है, उन्हों के मन में प्लैन बन रहा है - यह करेंगे, यह करेंगे। अच्छा - यह तो हुआ विश्व सेवा।

स्व के लिए क्या करेंगे? वह भी तो प्लैन बनेंगा ना? क्योंकि अगर स्व कल्याण का श्रेष्ठ प्लैन नहीं बनायेंगे तो विश्व सेवा में सकाश नहीं मिल सकेगी। इसलिए बापदादा सबके दिलों के उमंग-उत्साह को जानते हुए यही कहेंगे कि हर एक उत्सव में बच्चों ने चाहे गोल्डन जुबली वाले, चाहे डायमण्ड जुबली वाले, चाहे सिल्वर जुबली वाले, चाहे और भी जो जुबलियां होनी हैं, सभी ने दिल से, उमंग-उत्साह से अपने मन में यह बाप से वायदा किया है कि हम बाप समान बनकर ही दिखायेंगे। सभी ने यह वायदा किया है ना? डबल फारेनर्स ने वायदा किया है? (सभी ने हाथ हिलाया) अच्छा, मुबारक हो। वायदा तो बहुत मीठा, बहुत अच्छा, बहुत प्यारा, बहुत शक्तिशाली किया है। अभी सिर्फ निभाते रहना। वायदा करने वाले उस समय बहुत उमंग-उत्साह से करते हैं, हिम्मत भी बहुत अच्छी रखते हैं फिर क्या होता? कभी माया चूहे के रूप में आ जाती, कभी बिल्ली के रूप में आ जाती, बिल्ली क्या करती है? म्याऊं-म्याऊं करती है ना। तो बच्चे क्या करते हैं? मैं मैं मैं, तो यह बिल्ली की म्याऊं-म्याऊं नहीं करना। चूहा क्या करता है? चूहा बेसमझ होकर जो आता है वह खा लेता है, काट लेता है। तो माया भी बच्चों के खजानों को काटकर खा लेती है। कभी शेर आ जाता है, शेर क्या करता है? निर्भय वालों को भय पैदा कर देता है। सर्वशक्तिवान बच्चों को दिलशिकस्त बना देता है। ऐसे नहीं करना, आने नहीं देना, डबल लॉक लगाकर ही रखना। इस वर्ष किसी को भी आने नहीं देना।

यह वर्ष सर्व बातों से मुक्त वर्ष मनाओ। मुक्ति वर्ष। जब यह मुक्ति वर्ष

मनायेंगे तब मुक्तिधाम में जायेंगे। इसके लिए क्या करेंगे? बहुत छोटी सी बात है, बड़ी बात नहीं है। बापदादा सिर्फ छोटा सा स्लोगन दे रहे हैं ''सफल करो सफलता ला''। समझा! सफल करो, सफलता लो। क्या सफल करना है? जो भी आपके पास है, अपनी जो प्रापर्टी है ना - समय, संकल्प, श्वांस वा तन-मन-धन सफल करो, व्यर्थ न गंवाओ, न आइवेल के लिए सम्भालकर रखो। संकल्प को भी सफल करो। एक-एक संकल्प - यह आपकी प्रापर्टी है। जैसे धन स्थूल प्रापर्टी है, वैसे सूक्ष्म प्रापर्टी है समय, श्वांस, संकल्प। एक संकल्प भी व्यर्थ नहीं जाये, सफल हो। चाहे मन्सा सेवा द्वारा, चाहे वाचा द्वारा, चाहे कर्म द्वारा - चेक करो, सफल कितना किया? जमा कितना किया? और बापदादा इस वर्ष यह विशेष वरदान दे रहे हैं - सफल करो और पदमगुणा सफलता का अनुभव करो। यह प्रत्यक्ष फल सहज प्राप्त कर सकते हो, सिर्फ सच्ची दिल से। सच्ची दिल पर भोलानाथ बाप बहुत सहज राज़ी हो जाता है, इसलिए सफल करो। ज्ञान धन, शक्तियों का धन, गुणों का धन हर समय सफल करो। सफल करना आता है वा किनारे करना वा सम्भालने बहुत आता है? किनारे नहीं करो, लगाओ। जब कहते हो कि अचानक सब होना है, एवररेडी बनना है। तो जो भी है उसको सफल करो। बापदादा को नहीं चाहिए, अपने लिए जमा करो। बापदादा तो दाता है लेकिन सफल करना अर्थात् जमा करना क्योंकि बापदादा ने समय प्रमाण जमा का खाता देखा, हर एक बच्चे के जमा का खाता बापदादा के पास है। तो जमा के खाते में क्या देखा? कई बच्चे समझते वा कहते बहुत हैं कि हमारा यह भी जमा है, यह भी जमा है, बाहर से जमा का खाता बहुत वर्णन करते हैं लेकिन बाप के जमा के खाते में जो जितना कहते हैं, समझते हैं उससे बहुत कम जमा है। क्यों? वही पहला पाठ ''मैं और मेरा-पन''। मैंने किया, मेरी यह सेवा है, मेरा यह कार्य है। तो जमा करते समय, वह समझते हैं कि जमा कर रहे हैं लेकिन वह ऑटोमेटिक जमा के खाते से निकल, व्यर्थ के खाते में जमा हो जाता है। यह ऑटोमेटिक सूक्ष्म मशीनरी है। बाबा ने कराया, बाबा की सेवा है, मेरी सेवा नहीं है। मैंने किया, नहीं। वर्णन नहीं करो, मैंने यह किया, मैं यह करती हूँ, मैं यह करता हूँ...यह मैं-मैं नहीं। बाबा, बाबा बोलो तो पदमगुणा जमा होगा। और मैं मेरा बोलेंगे तो ट्रांसफर होकर व्यर्थ के खाते में जमा हो जायेगा। यह ऑटोमेटिक मशीनरी बहुत फास्ट है, आप लोगों को पता भी नहीं पड़ता

है। इसकी चेकिंग भी बहुत सच्चे दिल से, मैं-पन से न्यारे होकर करने वाले कर सकते हैं। जब आप आदि रत्न आदि में स्थापना में निकले, सेवा में निकले तो क्या भाव रहता था? क्या बोल निकलता था? मैं-पन था? बाबा-बाबा कहा तभी वारिस बाबा के बने, जो आज सेवा के आदि बनें, यह बाबा-बाबा कहने का सबूत है।

अभी बापदादा के पास वारिस क्वालिटी बहुत कम आती हैं, क्यों? बाबा और मैं-पन मिक्स है। इसलिए इस वर्ष में बापदादा खुली दिल से वरदान दे रहे हैं - **जितना जमा करने चाहो उतना कर लो, कर लो, कर लो।** सफल करो सफलता मूर्त बनो। अच्छा।

अभी कौन सा उत्सव मनाया? सिल्वर जुबली। सिल्वर जुबली वाले हाथ उठाओ। जिन्हों की सेरीमनी मनाई वह हाथ उठाओ। डबल सेरीमनी मनाई है। भारत की भी तो विदेश की भी। अच्छा है यह सेरीमनी मनाना अर्थात् अपने आपको पक्की प्रतिज्ञा की स्टैम्प लगाना। सेरीमनी मनाई, बापदादा को भी दृश्य अच्छा लगता है। साथ-साथ जो संकल्प करते हो, उसको ऐसी आलमाइटी गवर्मेन्ट की स्टैम्प लगाओ जो सदा अविनाशी, अटल रहे। मनाना अर्थात् वायदा निभाना। तो ऐसी पक्की स्टैम्प लगाई? या कच्ची स्टैम्प लगाई है? पक्की लगाई? यह सिल्वर जुबली वाले कुमार, हाथ तो अच्छा हिला रहे हैं, पक्की मनाई है? अच्छा है। यह दृश्य भूल नहीं जाना। कभी भी कुछ भी कमजोरी आये तो अपने उत्सव का फोटो सामने लाना। हर एक का फोटो निकालते हैं ना। सबको मिलता है? तो ऐसे फोटो नहीं निकलता है, मतलब से निकलता है। फोटो इसीलिए निकलता है कि जब ऐसा कोई समय आवे तो फोटो सामने रखना, ऐसे नहीं आलमारी में बन्द रख दो जो समय पर भी याद नहीं आवे। यह सबसे बड़ी सौगात है, यह स्मृति दिलाने की निशानी है।

तो यह जो सिन्धी ग्रुप आया है वह हाथ उठाओ। अच्छा - आपने उत्सव मनाया? फोटो निकला? अभी क्या करेंगे? सम्भालकर रखेंगे ना? इस ग्रुप का हेड कौन है? (नारी भाई और गोविन्द भाई) हेड तो पावरफुल है। अभी इस ग्रुप को बहुत-बहुत-बहुत पक्का रखना, सम्भालना। उत्सव मनाया है सदा उत्साह में रहने के लिए। यह ज्ञान, योग का उत्साह कम नहीं हो। सदा बढ़ता रहे। शक्तियों में जिम्मेवार कौन है? (त्रिमूर्ति है) सभी की युनिटी बहुत है। अमर रहना। अमर

भव। अच्छे हैं। देखो, बापदादा सिन्धी ग्रुप को क्यों आगे रखता? वैसे तो सभी हैं ना? सभी एक दो से आगे और प्यारे हैं लेकिन खास सिन्धी ग्रुप को आगे क्यों रखता? इस सिन्धी ग्रुप को चैरिटी बिगन्स एट होम...., जहाँ से स्थापना हुई, उस कुल को जगाना है। इसलिए बापदादा आप सभी को विशेष याद भी करता, निमित्त भी बनाया है तो निमित्त बन अपने लौकिक कुल सिन्धियों को जगाओ, रह नहीं जावें। फिर भी ब्रह्मा बाप का स्थापना का कार्य सिन्ध में हुआ है। तो जहाँ स्थापना हुई वह आत्मायें वंचित नहीं रह जायें। बापदादा को भी उन आत्माओं पर तरस पड़ता है। ब्रह्मा का तो चैरिटी बिगन्स एट होम है ना। इसलिए ब्रह्मा बाप ने आप बच्चों को निमित्त बनाया है। समझा जिम्मेवारी, है या नहीं? यह होशियार है। देखो जब स्थापना हुई तो पहला परिवार ब्रह्मा बाप का और साथ में आपका (नारी भाई का) परिवार निमित्त बना। पता है ना? तो अभी आप क्या करेंगे? (उत्तर बहुत अच्छा देता है) बापदादा कहते हैं आपके मुख में गुलाबजामुन। गुलाब नहीं। सिर्फ गुलाब क्या करेंगे, गुलाबजामुन खायेंगे ना। ऐसे नहीं एक को कह रहे हैं, सभी को निमित्त बनना है और दूसरा है सावित्री का परिवार। आप लोगों को पता है, आपका परिवार सेवा में पहले निमित्त बना है। विशेष सेवा को आगे बढ़ाया है तो अभी क्या करना है? फालो लौकिक माँ बाप। तो फालो करना है? अभी बापदादा देखेंगे दोनों परिवार क्या कमाल करके दिखाते हैं। अच्छा है, निमित्त बने हो, जैसे माँ बाप निमित्त बनें, बड़े निमित्त बनें, ऐसे फालो करो। ठीक है ना। देखो स्पेशल बापदादा आपसे मिल रहा है। तो लक है ना। अच्छा।

अभी कुमार क्या करेंगे? (कुमार 5 हजार आये हैं) बहुत अच्छा। कुमार कोई नई कमाल करके दिखाओ, ऐसी कमाल दिखाओ जो असम्भव को सम्भव करके दिखाओ। कुमारों को बापदादा विश्व की स्टेज पर एक्जैम्पुल बनाकर खड़ा करने चाहते हैं। ऐसे कुमार हीरो पार्ट बजायेंगे? पक्का या हाथ उठाने तक? देखो हीरो पार्ट बजाने वाले बेदाग हीरा होना चाहिए। डबल हीरो। बेदाग हीरा भी और हीरो पार्टधारी भी। ऐसे हैं?

डबल फारेनर्स क्या कमाल करेंगे? डबल फारेनर्स ऐसी कमाल करके दिखाओ जो ऐसी आत्माओं को सन्देश दो जो भारत के लिए माइक बनें, क्योंकि भारत के माइक का भी प्रभाव है लेकिन फारेन के माइक का प्रभाव

डबल पड़ेगा। तो डबल फारेनर्स को ऐसे माइक तैयार करने हैं। करेंगे? अगले वर्ष माइक आना चाहिए। ऐसे नहीं सिर्फ भाषण करके चले जायें, नहीं। संबंध में समीप हों। भले ज्ञान, योग में नियमित नहीं बनें लेकिन मानें कि सचमुच यह ईश्वरीय कार्य है और जीवन बनानी ऐसी चाहिए लेकिन मेरे में हिम्मत कम है। उसमें भी कोई हर्जा नहीं, औरों के निमित्त माइक बनते-बनते स्वयं बन ही जायेगा। वैसे सीधा स्टूडेन्ट नहीं बनेंगे लेकिन सेवा के बल से दूसरों के निमित्त बनते, उसके प्रभाव से बन जायेंगे। तो सुना डबल फारेनर्स ने? अभी देखेंगे कौन सा देश निमित्त बनता है। जो भी देश निमित्त बने, फिर उसको अवार्ड देंगे।

डबल विदेशी वहाँ भी सुन रहे हैं, उन्हों की भी दिल में आ रहा है, ढूंढ रहे हैं किसको निमित्त बनायें। अच्छा। फारेन के यूथ ग्रुप हाथ उठाओ। (20 देशों से 170 यूथ ने रिट्रीट में भाग लिया है) अच्छा किया। अभी विदेश के यूथ ऐसी सेवा करके अपना ग्रुप तैयार करो, तो फिर जब महात्माओं का सम्मेलन होगा ना, उसमें आप सभी यूथ ग्रुप को निमन्त्रण देंगे। तो आप यूथ के आगे यह महात्मायें जो हैं वह सिर झुकावें, समझा। तो ऐसा ग्रुप तैयार करो।

(यूथ ग्रुप के मास्टर, जापान के ली भाई से) अच्छा ग्रुप तैयार किया है। अभी ऐसा तैयार करो जो भारत के महात्मायें ब्रह्मचर्य में रहना असम्भव वा मुश्किल समझते हैं, उन्हों को यह यूथ अपने अनुभव से सुनावें कि मुश्किल नहीं है, सहज है और हम सहज योगी, सहज ब्रह्मचारी बने हैं। तो ऐसे पक्के ब्रह्मचारी योगी आत्मायें इन्हों का प्रभाव, उन्हों पर भी पड़ेगा। यह भी प्रत्यक्षता का एक निमित्त दृश्य बनेगा। गवर्मेन्ट को भी दिखायेंगे कि यह यूथ देखो, अपनी मन्सा द्वारा भी विश्व कल्याण के निमित्त हैं। ठीक है ना? अभी पक्का ग्रुप चाहिए। ऐसे नहीं गवर्मेन्ट और सन्यासियों के आगे रखें और कुछ समय के बाद फिर फेल हो जायें। नहीं। पक्के हों। ऐसा पक्का ग्रुप बापदादा को बताना जो गैरन्टी करे कि हम अचल, अडोल, अविनाशी ब्राह्मण आत्मायें हैं। कुछ भी हो जाए हिले नहीं। तो ऐसा ग्रुप बापदादा के सामने लाना। ठीक है ना? अच्छी हिम्मत वाले हैं। जहाँ हिम्मत है वहाँ बाप की मदद है ही है। अच्छा। मुबारक हो।

भारत के यूथ भी ऐसे तैयार हों। ऐसे पक्के यूथ तैयार करो। आज पक्के कल कच्चे नहीं। (सभी ने वायदे लिखकर दिये हैं) बापदादा लिखतें तो बहुत

देख चुके हैं। (सभी हंसने लगे) हंसते हैं। वायदे के पत्र बापदादा के पास सभी के बहुत जमा हैं। तो भारत के यूथ बताओ जो आज वायदा किया है, वह फाइल में रहेगा या फाइनल रहेगा? क्या होगा? फाइनल होगा या फाइल में रहेगा? जो पक्के हैं वह हाथ उठाओ। इन्हों का वीडियो निकालो। यह वीडियो आप लोगों को भेजा जायेगा। फाइनल वायदा करने वाले एक्जैम्पुल बनेंगे। बाकी फाइल तो बापदादा के पास बहुत-बहुत हैं। समझा। फाइल में नहीं रखना, फाइनल बनकर दिखाना। अच्छा।

अच्छा – (दिल्ली वालों ने मेला सम्भाला है) सभी को अच्छी सेवा की लाटरी मिली है। तो दिल्ली वालों ने सेवा की लाटरी ले ली और हर समय के लिए सेवा की नूँध, नूँध ली। सेवा पसन्द है? दिल्ली वाले जो सेवा में आये हैं वह उठो। आगरा वाले उठो। अच्छा है, सहयोगी बनना अर्थात् समीप आना। विशेष आत्माओं के समीप आने का चांस मिलता है और साथ-साथ सेवा का बल समय पर कार्य में आता है। तो जमा भी करते हो और श्रेष्ठ आत्माओं के समीप भी आते हो। अनेक ब्राह्मण आत्माओं के सम्पर्क में आते, तो नजदीक आने का यह साधन अच्छा है। सभी को चांस दिया है, अच्छा किया। दिल्ली वालों को पसन्द है ना! अच्छा।

(रतन भाई लण्डन तथा अन्य दो भाईयों से)– ईश्वरीय सेवा का कोई भी कार्य होता है, उसका लक्ष्य आत्माओं को बाप के समीप सम्बन्ध में लाना है। उन्हों का किसी भी प्रकार से जमा कराने का साधन है। तो सभी इसी लक्ष्य से सेवा के निमित्त हो ना? यही लक्ष्य है ना? तो बापदादा देखेंगे कितनी आत्माओं का भविष्य बनाने के निमित्त बने हैं। ग्रुप ले आयेंगे ना? अच्छा गुलदस्ता ले आना। फाउण्डेशन का गुलदस्ता ले आना। पसन्द है? जो कार्य होता है उसमें सेवा समाई हुई है। सिर्फ निमित्त बनना होता है। तो अच्छा किया है। अभी बापदादा के आगे गुलदस्ता ले आना। ठीक है ना? अच्छा उमंग है। हिम्मत वाले को बाप की मदद मिलती ही है। तो कार्य की मुबारक हो और इनएडवांस गुलदस्ते लाने की भी मुबारक। अच्छा।

सभी की मुबारक सुन-सुनकर सब खुश हो रहे हैं तो आप सभी को कितनी मुबारक मिली? अरब खरब से भी ज्यादा मुबारक है। अच्छा।

सर्व नव युग के विश्व अधिकारी, नव जीवन द्वारा विश्व परिवर्तक आत्माओं

को, सदा सफल करने से सफलतामूर्त बनने वाली आत्माओं को, सदा अपने किये हुए वायदों को साकार स्वरूप देने वाले अचल, अखण्ड स्वरूप आत्माओं को, सदा उत्सव में रह औरों को भी उत्सव द्वारा उत्साह दिलाने वाले आत्माओं को, बापदादा का नये वर्ष और नये युग के स्थापना की मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो। साथ-साथ हिम्मत रख सर्व बच्चे आगे बढ़ने वाले हिम्मते बच्चे और मददे बाप ऐसे सर्व बच्चों को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

(रात्रि १२ बजे के बाद बापदादा ने सभी बच्चों को पुनः नये वर्ष की बधाई दी)

सर्व विश्व के कोने-कोने में, विश्व के चारों ओर विशेष नव जीवन में रहने वाले सभी को नये वर्ष के साथ-साथ नव युग की भी मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो। ब्राह्मण बच्चों के लिए तो हर दिन, हर सेकण्ड नया है। तो अभी पुराने वर्ष की विदाई है और नये वर्ष को बधाई हो। ऐसे सदा हर सेकण्ड जो भी संकल्प करो, कर्म करो हर कर्म, संकल्प बधाई वाले हो। जो भी सम्पर्क में आये वह सदा बधाई हो, बधाई हो, यही गीत गाते रहें। इस नये वर्ष में सभी को जो भी मिले वा जो भी साथ में रहते हैं, उन्हों को सदा खुशी की, दिलखुश मिठाई खिलाते रहना और सदा खुशी में मन से नाचते रहना और सेवा में सभी को खुशी का खजाना भर-भरकर बांटते रहना। तो ऐसे नये जीवन, नये उमंग-उत्साह की चारों ओर के बच्चों को नये वर्ष के साथ-साथ मुबारक हो, मुबारक हो। गुडनाईट और गुडमार्निग।

अच्छा। ओम् शान्ति।

18-1-98

सकाश देने की सेवा करने के लिए लगाव मुक्त बन बेहद के वैरागी बनो

आज का दिन विशेष स्नेह का दिन है। अमृतवेले से लेकर चारों ओर के बच्चे अपने दिल के स्नेह को बापदादा के अर्थ अर्पित कर रहे थे। सर्व बच्चों के स्नेह के मोतियों की मालायें बापदादा के गले में पड़ती जा रही थी। आज के दिन एक तरफ स्नेह के मोतियों की मालायें, दूसरे तरफ मीठे-मीठे उल्हनों की मालायें भी थी। लेकिन इस वर्ष उल्हनों में अन्तर देखा। पहले उल्हनें होते थे हमें भी साथ ले जाते, हमने साकार पालना नहीं ली.....। इस वर्ष मैजारिटी का उल्हना यह रहा कि अब बाप समान बन आपके पास पहुँच जाएं। समान बनने का उमंग-उत्साह मैजारिटी में अच्छा रहा। समान बनने की इच्छा बहुत तीव्र है, बन जायें और आ जायें, यह संकल्प रूहरिहान में बहुत बच्चों का रहा। बापदादा भी यही बच्चों को कहते हैं - समान भव, सम्पन्न भव, सम्पूर्ण भव। इसका साधन सदा के लिए बहुत सहज है, सबसे सहज साधन है – सदा स्नेह के सागर में समा जाओ। जैसे आज का दिन स्नेह में समाये हुए थे और कुछ याद था? सिवाए बापदादा के और कुछ याद रहा? उठते, बैठते स्नेह में समाये रहे। चलते-फिरते क्या याद रहा? ब्रह्मा बाप के चरित्र और चित्र, चित्र भी सामने रहा और चरित्र भी स्मृति में रहे। सभी ने स्नेह का अनुभव आज विशेष किया ना? मेहनत लगी? सहज हो गया ना! स्नेह ऐसी शक्ति है जो सब कुछ भुला देती है। न देह याद आती, न देह की दुनिया याद आती। स्नेह मेहनत से छुड़ा देता है। जहाँ मोहब्बत होती है वहाँ मेहनत नहीं होती है। स्नेह सदा सहज बापदादा का हाथ अपने ऊपर अनुभव कराता है। स्नेह छत्रछाया बन मायाजीत बना देता है। कितनी भी बड़ी समस्या रूपी पहाड़ हो, स्नेह पहाड़ को भी पानी जैसा हल्का बना देता है। तो स्नेह में रहना आता है ना? आज रहकर देखा ना! कुछ याद रहा? नहीं रहा ना! बाबा, बाबा और बाबा.... एक ही याद में लवलीन रहे। तो बापदादा कहते हैं और कोई पुरुषार्थ नहीं करो, स्नेह के सागर में समा जाओ। समाना आता है? कभी-कभी बच्चे स्नेह के सागर में समाते हैं लेकिन थोड़ा सा समय समाया, फिर बाहर निकल आते हैं। अभी-अभी कहेंगे बाबा, मीठा बाबा, प्यारा बाबा और अभी-अभी बाहर निकलते और बातों में लग जाते

हैं। बस सिर्फ थोड़ी-सी जैसे कोई डुबकी लगाके निकल आता है ना, ऐसे स्नेह में समाया, डुबकी लगाई, निकल आये। समाये रहो, तो स्नेह की शक्ति सबसे सहज मुक्त कर देगी।

सभी बच्चों को ब्राह्मण जन्म के आदि का अनुभव, स्नेह ने ब्राह्मण बनाया। स्नेह ने परिवर्तन किया। अपने जन्म के आदि समय का अनुभव याद है ना? ज्ञान और योग तो मिला लेकिन स्नेह ने आकर्षित कर बाप का बनाया। अगर सदा स्नेह की शक्ति में रहो तो सदा के लिए मेहनत से मुक्त हो जायेंगे। वैसे भी मुक्ति वर्ष मना रहे हैं ना। तो मेहनत से भी मुक्त, उसका साधन है - स्नेह में समाये हुए रहो। स्नेह का अनुभव सभी को है ना? या नहीं है? अगर किसी से भी पूछेंगे कि बापदादा से सबसे ज्यादा स्नेह किसका है? तो सभी हाथ उठायेंगे मेरा है। (सबने हाथ हिलाया) साइलेन्स का हाथ उठाओ, आवाज वाला नहीं। तो बापदादा आज यही कहते हैं कि स्नेह की शक्ति सदा कार्य में लगाओ। सहज है ना! योग लगाते हो - देह भूल जाए, देह की दुनिया भूल जाए, मायाजीत बनें। जब स्नेह की छत्रछाया में रहेंगे, तो स्नेह की छत्रछाया के अन्दर माया नहीं आ सकती है। स्नेह के सागर के बाहर आते हो ना तो माया देख लेती है और अपना बना लेती है, निकलो ही नहीं। समाये रहो। स्नेही कोई भी कार्य करते हुए स्नेही को नहीं भूल सकता। स्नेह में खोया हुआ हर कार्य करता। तो जैसे आज के दिन खोये रहे, ऐसे सदा स्नेह में नहीं रह सकते हो क्या? स्नेह सहज ही समान बना देगा क्योंकि जिसके साथ स्नेह है उस जैसा बनना, यह मुश्किल नहीं होता है।

ब्रह्मा बाप से दिल का प्यार है, ब्रह्मा बाप का भी बच्चों से अति स्नेह है। सदा एक-एक बच्चे को इमर्ज कर विशेष समान बनने की सकाश देते रहते हैं। जैसे पास्ट जीवन में एक-एक रत्न को देखते, हर एक रत्न के मूल्य को जानते विशेष कार्य में लगाते, ऐसे अभी भी एक-एक रत्न को विशेष रूप से विशेषता को कार्य में लगाने का सदा संकल्प देते रहते। और हर एक के विशेषता की वाह-वाह गाते रहते। वाह मेरा अमूल्य रत्न। कई बच्चे सोचते हैं कि ब्रह्मा बाप वतन में क्या करते हैं? हम तो यहाँ सेवा करते रहते और ब्रह्मा बाप वहाँ वतन में क्या करते? लेकिन बाप कहते हैं जैसे साकार रूप में सदा बच्चों के साथ रहे, ऐसे वतन में भी रहते हैं। बच्चों के साथ ही रहते हैं, अकेले नहीं रहते हैं। बच्चों

के बिना बाप को भी मजा नहीं आता। जैसे बच्चों को बाप के बिना कुछ सूझता नहीं, ऐसे बाप को भी बच्चों के बिना और कुछ नहीं सूझता। अकेले नहीं रहते हैं, साथ में रहते हैं। साकार में तो साथ का अनुभव साकार रूप में थोड़े बच्चे कर सकते थे, अब तो अव्यक्त रूप में, हर बच्चे के साथ जिस समय चाहे, जब चाहे साथ निभाते रहते हैं। जैसे चित्रों में दिखाते हैं ना - उन्होंने एक-एक गोपी के साथ कृष्ण को दिखा दिया लेकिन यह इस समय का गायन है। अब अव्यक्त रूप में हर बच्चे के साथ जब चाहे, चाहे रात को दो बजे, अढ़ाई बजे हैं, किसी भी टाइम साथ निभाते रहते हैं। साकार में तो सेन्टर्स पर चक्कर लगाना कभी-कभी होता लेकिन अब अव्यक्त रूप में तो पवित्र प्रवृत्ति में भी चक्कर लगाते हैं। बाप को काम ही क्या है, बच्चों को समान बनाके साथ ले जाना, यही तो काम है ना और क्या है? तो इसी में ही बिजी रहते हैं।

तो आज के दिन बापदादा बच्चों को विशेष मेहनत से मुक्त भव का वरदान देते हैं। कोई भी कार्य करो तो डबल लाइट बनके कार्य करो, तो मेहनत मनोरंजन अनुभव करेंगे क्योंकि बापदादा को बच्चों की मेहनत करना, युद्ध करना, हार और जीत का खेल करना - यह अच्छा नहीं लगता। तो मुक्त वर्ष मना रहे हो ना! मना रहे हो या मेहनत में लगे हुए हो? आज के दिन विशेष यह वरदान याद रखना - मेहनत से मुक्त भव। यह संगमयुग मेहनत से मुक्त होने का युग है। मौज में रहने का है। अगर मेहनत है तो मौज नहीं हो सकती है। एक ही युग परम आत्मा और आत्माओं का मौज मनाने का युग है। आत्मा, परमात्मा के स्नेह का युग है। मिलन का युग है। तो दृढ़ संकल्प करो कि आज से मेहनत से मुक्त हो जायेंगे। होंगे ना? फिर ऐसे नहीं यहाँ तो हाथ उठाओ और वहाँ जाकर कहो क्या करें, कैसे करें? क्योंकि बापदादा के पास हर एक बच्चे के दृढ़ संकल्प करने का पूरा फाइल है। बापदादा कभी बच्चों का फाइल देखते हैं। बार-बार दृढ़ संकल्प किया है ना। जब से जन्म लिया और अब तक कितने बार संकल्प किया है, यह करेंगे, यह करेंगे... लेकिन उसको पूरा नहीं किया है। रूहरिहान बहुत अच्छी करते हैं, बापदादा को भी खुश कर देते हैं। जैसे जिज्ञासुओं को प्रभावित कर देते हो ना, तो बापदादा को भी प्रभावित तो कर देते हैं लेकिन दृढ़ संकल्प का प्रभाव थोड़ा समय रहता है, सदा नहीं रहता। तो बापदादा का फाइल तो बढ़ता जाता है। जब भी कोई फंक्शन होता है तो

बापदादा की फाइल में एक प्रतिज्ञा पत्र तो जमा हो ही जाता है, इसलिए बापदादा लिखाते नहीं हैं।

आज भी सभी संकल्प तो कर रहे हैं, अभी कब तक चलता है, फाइल में कागज कब तक रहता है, बाप भी देखते रहते हैं। बच्चों का बाप समान बनना और फाइल खत्म होके फाइनल हो जायेंगे। अभी तो ढेर के ढेर फाइल हैं। तो सिर्फ स्नेह में डूबे रहो, स्नेह के सागर से बाहर नहीं निकलो। ब्रह्मा बाप से दिल का स्नेह है ना? तो स्नेही को फालो करना मुश्किल नहीं होता है। स्नेह के लिए कहते भी हो कि जहाँ स्नेह है, वहाँ जान भी कुर्बान हो जाती है। बापदादा तो जान को कुर्बान करने के लिए नहीं कहते, पुराना जहान कुर्बान कर दो। इसकी फाइनल डेट फिक्स करो। और फंक्शन की डेट तो फिक्स करते हो, 20 तारीख है, 24 तारीख है। इसकी डेट कब फिक्स करेंगे? (इसकी डेट बापदादा फिक्स करें) बापदादा कब शब्द कहते ही नहीं हैं, अब कहते हैं। बापदादा कब पर छोड़ता है क्या? अब कहता है। जो करना है वो अब करो। लेकिन बापदादा तो समर्थ है ना, तो समर्थ के हिसाब से तो अब कहेंगे। बच्चे कब, कब की आदत में हिरे हुए हैं। इसीलिए बापदादा बच्चों को कहते हैं कि यह डेट कब फिक्स करेंगे? आप भी कब, कब कहते हैं तो बाप भी कब कहते हैं।

अभी समय प्रमाण सबको बेहद के वैराग्य वृत्ति में जाना ही होगा। लेकिन बापदादा समझते हैं कि बच्चों का समय शिक्षक नहीं बनें, जब बाप शिक्षक है तो समय पर बनना - यह समय को शिक्षक बनाना है। उसमें मार्क्स कम हो जाती हैं। अभी भी कई बच्चे कहते हैं - समय सिखा देगा, समय बदला देगा। समय के अनुसार तो सारे विश्व की आत्मायें बदलेंगी लेकिन आप बच्चे समय का इन्तजार नहीं करो। समय को शिक्षक नहीं बनाओ। आप विश्व के शिक्षक के मास्टर विश्व शिक्षक हो, रचता हो, समय रचना है तो हे रचता आत्मायें रचना को शिक्षक नहीं बनाओ। ब्रह्मा बाप ने समय को शिक्षक नहीं बनाया, बेहद का वैराग्य आदि से अन्त तक रहा। आदि में देखा इतना तन लगाया, मन लगाया, धन लगाया, लेकिन जरा भी लगाव नहीं रहा। तन के लिए सदा नेचुरल बोल यही रहा - बाबा का रथ है। मेरा शरीर है, नहीं। बाबा का रथ है। बाबा के रथ को खिलाता हूँ, मैं खाता हूँ, नहीं। तन से भी बेहद का वैराग्य। मन तो मनमनाभव था ही। धन भी लगाया, लेकिन कभी यह संकल्प भी नहीं आया कि

मेरा धन लग रहा है। कभी वर्णन नहीं किया कि मेरा धन लग रहा है या मैंने धन लगाया है। बाबा का भण्डारा है, भोलेनाथ का भण्डारा है। धन को मेरा समझकर पर्सनल अपने प्रति एक रूपये की चीज़ भी यूज नहीं की। कन्याओं, माताओं की जिम्मेवारी है, कन्याओं-माताओं को विल किया, मेरापन नहीं। समय, श्वांस अपने प्रति नहीं, उससे भी बेहद के वैरागी रहे। इतना सब कुछ प्रकृति दासी होते हुए भी कोई एकस्ट्रा साधन यूज़ नहीं किया। सदा साधारण लाइफ में रहे। कोई स्पेशल चीज़ अपने कार्य में नहीं लगाई। वस्त्र तक, एक ही प्रकार के वस्त्र अन्त तक रहे। चेंज नहीं किया। बच्चों के लिए मकान बनाये लेकिन स्वयं यूज़ नहीं किया, बच्चों के कहने पर भी सुनते हुए उपराम रहे। सदा बच्चों का स्नेह देखते हुए भी यही शब्द रहे - सब बच्चों के लिए है। तो इसको कहा जाता है बेहद की वैराग्य वृत्ति प्रत्यक्ष जीवन में रही। अन्त में देखो बच्चे सामने हैं, हाथ पकड़ा हुआ है लेकिन लगाव रहा? बेहद की वैराग्य वृत्ति। स्नेही बच्चे, अनन्य बच्चे सामने होते हुए फिर भी बेहद का वैराग्य रहा। सेकण्ड में उपराम वृत्ति का, बेहद के वैराग्य का सबूत देखा। एक ही लगन सेवा, सेवा और सेवा..... और सभी बातों से उपराम। इसको कहा जाता है बेहद का वैराग्य। अभी समय प्रमाण बेहद के वैराग्य वृत्ति को इमर्ज करो। बिना बेहद के वैराग्य वृत्ति के सकाश की सेवा हो नहीं सकती। फालो फादर करो। साकार में ब्रह्मा बाप रहा, निराकार की तो बात छोड़ो। साकार में सर्व प्राप्ति का साधन होते हुए, सर्व बच्चों की जिम्मेवारी होते हुए, सरकमस्टांश, समस्यायें आते हुए पास हो गये ना! पास विद ऑनर का सर्टीफिकेट ले लिया। विशेष कारण बेहद की वैराग्य वृत्ति। अभी सूक्ष्म सोने की जंजीर के लगाव, बहुत महीन सूक्ष्म लगाव बहुत हैं। कई बच्चे तो लगाव को समझते भी नहीं हैं कि यह लगाव है। समझते हैं - यह तो होता ही है, यह तो चलता ही है। मुक्त होना है, नहीं। लेकिन ऐसे तो चलता ही है। अनेक प्रकार के लगाव बेहद के वैरागी बनने नहीं देते हैं। चाहना है बनें, संकल्प भी करते हैं - बनना ही है। लेकिन चाहना और करना दोनों का बैलेन्स नहीं है। चाहना ज्यादा है, करना कम है। करना ही है - यह वैराग्य वृत्ति अभी इमर्ज नहीं है। बीच-बीच में इमर्ज होती है, फिर मर्ज हो जाती है। समय तो करेगा ही लेकिन पास विद ऑनर नहीं बन सकते। पास होंगे लेकिन पास विद ऑनर नहीं। समय की रफ्तार तेज है, पुरुषार्थ की रफ्तार कम है। मोटा-मोटा

पुरुषार्थ तो है लेकिन सूक्ष्म लगाव में बंध जाते हैं।

बापदादा जब बच्चों के गीत सुनते हैं – उड़ आयें, उड़ आयें... तो सोचते हैं उड़ा तो लें लेकिन लगाव उड़ने देंगे या न इधर के रहेंगे न उधर के रहेंगे? अभी समय प्रमाण लगाव-मुक्त बेहद के वैरागी बनो। मन से वैराग्य हो। प्रोग्राम प्रमाण वैराग्य जो आता है वह अल्पकाल का होता है। चेक करो - अपने सूक्ष्म लगाव को। मोटी-मोटी बातें अभी खत्म हुई हैं, कुछ बच्चे मोटे-मोटे लगाव से मुक्त हैं भी लेकिन सूक्ष्म लगाव बहुत सूक्ष्म हैं, जो स्वयं को भी चेक नहीं होते हैं। (मालूम नहीं पड़ते हैं)। चेक करो, अच्छी तरह से चेक करो। सम्पूर्णता के दर्पण से लगाव को चेक करो। यही ब्रह्मा बाप के स्मृति दिवस की गिफ्ट ब्रह्मा बाप को दो। प्यार है ना, तो प्यार में क्या किया जाता है? गिफ्ट देते हैं ना? तो यह गिफ्ट दो। छोड़ो, सब किनारे छोड़ो। मुक्त हो जाओ। बापदादा खुश भी होते हैं कि बच्चों में उमंग-उत्साह उठता है, बहुत अच्छे-अच्छे स्व-उन्नति के संकल्प भी करते हैं। अभी उन संकल्पों को करके दिखाओ। अच्छा।

आज विशेष टीचर्स का संगठन इक्ट्ठा हुआ है। सेवा का रिटर्न यह उत्सव रखा जाता है। बापदादा खुश होते हैं कि बच्चों को सेवा का फल मिल रहा है वा मना रहे हैं, खा रहे हैं। सेवा में नम्बरवार सफल रहे हैं और रहते रहेंगे। बापदादा बच्चों के 40 साल की सेवा देख हर्षित होते हैं। हाथ उठाओ जो फंक्शन के लिए आये हैं। बड़ा ग्रुप है। 40 वर्ष भी सेवा में अमर भव के वरदानी रहे हैं इसकी मुबारक हो। आपके संगठन को देख सब बहुत खुश होंगे कि 40 वर्ष सेवा में अमर रहना - यह भी कमाल है। डायमण्ड जुबली हुई, सिल्वर जुबली हुई और यह कौन सी जुबली है? यह विशेष जुबली है। ज्यादा मेहनत इस ग्रुप ने ही की है। यह ग्रुप जैसे बॉर्डर में मिलेट्री जाती है ना और कमान्डर तो पीछे रहते हैं लेकिन बॉर्डर पर महारथी ही जाते हैं। तो सेवा के बॉर्डर में यह ग्रुप रहा है। बापदादा समान सेवाधारी ग्रुप को देख खुश होते हैं। बॉर्डर पर जाने वाले पक्के होते हैं। बहुत अनुभव होते हैं ना। सामना करने की शक्ति ज्यादा होती है। हर ग्रुप की विशेषता अपनी-अपनी है। तो डायमण्ड जुबली वाले स्थापना के निमित्त बनें, गोल्डन जुबली वाले सेवा में आदि रत्न निमित्त बनें। सिल्वर जुबली वाले राइट हैण्ड बन आगे बढ़े और बढ़ाया। और यह विशेष ग्रुप सेवा के सर्व प्रकारों के अनुभवी मूर्त हैं। ज्यादा अनुभव इस ग्रुप

को है। मेहनत भी की है लेकिन मोहब्बत में मेहनत की है। इसलिए बापदादा इस ग्रुप को विशेष सेवाधारी, सफलतामूर्त ग्रुप कहते हैं। जो नये-नये आते हैं उनकी पालना के निमित्त आधारमूर्त यह ग्रुप है। इस ग्रुप को एक बात कहें ? सुनने के लिए तैयार हो? आर्डर करेंगे। आर्डर करें? एवररेडी ग्रुप है ना?

बापदादा को विशेष सेवा में सफलता स्वरूप आत्माओं को देख यह संकल्प आता है कि सेन्टर तो अच्छे जमा दिये हैं। जमा दिये हैं ना या हिलने वाले हैं? अभी इस ग्रुप में से बेहद की सेवा के लिए कोई रत्न निकलने चाहिए। एवररेडी हैं या सेन्टर छोड़ना मुश्किल है? मुश्किल है या सहज है? अभी हाथ उठाओ। आप निकलेंगे तो सेन्टर हिलेंगे क्या? यह भी पक्का हो ना। आप कहो हम तो तैयार हैं सेन्टर हिले या नहीं, हमारा क्या जाता। ऐसा नहीं। बापदादा फिर भी 6 मास का टाइम देते हैं, अपने सेन्टर्स पर ऐसा राइट हैण्ड बनाओ जो आप चक्रवर्ती बन सको; क्योंकि बापदादा देखते हैं - चक्रवर्ती बनकर सेवा करने वालों से एक ही जगह पर बैठकर सेवा करने वालों का नम्बर थोड़ा पीछे हो जाता है। वह चक्रवती नम्बरवन राजा बन सकते हैं। और यह ग्रुप ऐसा है जो नम्बर आगे ले सकते हैं। तो नम्बर लेंगे? फिर दादी आर्डर करेगी, एवररेडी। (दादी से) आर्डर करेंगी ना? आपको हैण्डस चाहिए ना? कभी-कभी दादी रूहरिहान करती है - मददगार चाहिए। तो कौन यह फरमाइस पूरी करेंगे? आप लोग ही कर सकते हैं। बापदादा उम्मींदवार आत्मायें समझते हैं। इसलिए अपने-अपने स्थान ऐसे पक्के करो, मजबूत बनाओ जो आप जैसे ही चलें, अन्तर नहीं पड़े। ब्रह्मा बाप ने देखा क्या कि पीछे क्या होगा? नहीं देखा ना! अच्छा ही है और अच्छा ही होना है। तो सेकण्ड में लगावमुक्त आत्मा उड़ गई। कोई लगाव ने खींचा नहीं। तो ऐसा ग्रुप बनाओ, कोई लगाव नहीं। मेरी यह ड्युटी है, मेरे बिना कोई कर नहीं सकेगा – यह संकल्प नहीं आवे, इससे भी वैराग्य। तो सुना बापदादा की बात? ध्यान से सुनी। अच्छा - अभी 6 मास में सभी ऐसे सेन्टर पक्का करना, फिर आर्डर होगा। पसन्द है ना? विश्व महाराजन बनना है कि स्टेट का राजा बनना है? कौन सा राजा बनना है? एक ही सेन्टर सम्भालना तो स्टेट का राजा बनेंगे। चक्रवर्ती बनेंगे तो विश्व के राजा बनेंगे। जैसे आप अनुभवी बने हो वैसे औरों को अनुभवी बनाओ। मुश्किल काम तो नहीं है? मुश्किल हो तो ना कर दें। अगर मुश्किल लगता हो तो बापदादा कहेंगे जहाँ हैं वहाँ ही रहो।

यह भी छुट्टी है, जिसकी जो इच्छा हो वह करे, लेकिन बापदादा इस ग्रुप को आगे बढ़ने के उम्मींदवार समझते हैं। ठीक है? पसन्द है?

मनाने के पहले फिक्र तो नहीं हो गया? बेफिक्र बादशाह हैं। जब ब्रह्मा बाप ने कुछ नहीं सोचा, तो फालो फादर। बच्चों ने सोचा क्या होगा, कैसे होगा, सेन्टर चलेंगे नहीं चलेंगे, मुरली कहाँ से आयेगी.... कितने क्वेश्चन सोचे, ब्रह्मा बाप ने सोचा? सेकण्ड में व्यक्त से अव्यक्त हो गये। लेकिन और अच्छे ते अच्छा होना ही है, यह निश्चय रहा। और हो रहा है ना? बाकी बापदादा को हर ग्रुप की विशेषता प्यारी लगती है। अच्छा।

चारों ओर देश विदेश के स्नेह में समाये हुए स्नेही बच्चों को, सदा बाप के स्नेह के सागर में समाये हुए रहने वाले अति समीप आत्माओं को, सदा ब्रह्मा बाप की विशेषताओं को स्वयं में धारण करने वाली श्रेष्ठ आत्माओं को, सदा मेहनत मुक्त हो, मौज में रहने वाली परमात्म प्यार में उड़ने वाली आत्माओं को, बाप समान बनने के संकल्प को साकार में लाने वाले ऐसे दिलाराम बाप के दिल में समाये हुए बच्चों को, विशेष आज के दिन ब्रह्मा बाप की पदम-पदमगुणा यादप्यार स्वीकार हो। बापदादा तो सदा बच्चों के दिल में रहता है, वतन में रहते भी बच्चों के दिल में रहते हैं, तो ऐसे दिल में समाने वाले बच्चों को बापदादा का स्नेह के मोतियों की थालियां भर-भर कर यादप्यार और नमस्ते।

(गुजरात की सेवा का टर्न है) अच्छा है। गुजरात वाले अनुभवी मूर्त हैं। समीप होने के कारण हर कार्य में एवररेडी हो जाते हैं। हर एक ज़ोन को यह सेवा का चांस भी अच्छा मिला है। सेवा करना अर्थात् सर्व की दुआयें लेना। तो कितनी दुआयें ली हैं? बहुत ली हैं ना? तो गुजरात दुआओं की झोली भर रहे हैं। अच्छा। सभी गुजरात के सेवाधारी हाथ उठाओ। सिर्फ सेवा नहीं कर रहे हो, दुआयें जमा कर रहे हो। अच्छा।

जो भाई-बहिनें कैबिन में बैठे हुए सेवा कर रहे हैं उन सबके प्रति बापदादा बोले:-

यह भी मेहनत बहुत करते हैं। यह डिपार्टमेंट (साउण्ड डिपार्टमेंट) भी मेहनत अच्छी करता है। जो भी सभी कैबिन में बैठे हैं सभी मेहनत अच्छी करते हो, सभी को सुख देते हो। तो सुख देने की दुआयें बहुत मिलती हैं। पुरुषार्थ

में यह दुआयें एड हो जाती हैं। निर्विघ्न सेवा, यह बहुत पदमगुणा फल देती है। जितनी निर्विघ्न सेवा होती है उतना ऑटोमेटिक मार्क्स बढ़ती जाती हैं। सबको सुख देना, किसी भी बात से, चाहे कर्म से, चाहे वाणी से, चाहे मन्सा से – कोई भी सुख देता है तो उसकी मार्क्स ऑटोमेटिक बढ़ती जाती हैं। मेहनत से इतनी नहीं बढ़ती जितनी यह ऑटोमेटिक मार्क्स बढ़ती हैं। तो सुख स्वरूप बनकर सुख दो। सुख दो और सुख लो। ऐसे है ना। बहुत अच्छा।

मधुबन निवासियों को दुआयें बहुत मिलती हैं। चाहे सफाई करने वाला भी हो, झाड़ू लगाने वाला हो लेकिन सफाई भी अच्छी देखकर सबकी दुआयें मिलती हैं। सबसे सहज पुरुषार्थ है दुआयें लो, दुआयें दो। इसमें कोई मेहनत नहीं है। बहुत जल्दी मायाजीत बन जायेंगे। किसको मर्यादापूर्वक दु:ख नहीं देना है। ऐसे भी नहीं है कि मर्यादा तोड़ करके इसको सुख दो, नहीं। वह सुख के खाते में जमा नहीं होता है, वह ऑटोमेटिक मशीनरी दु:ख के खाते में जमा हो जाती है। इसलिए दिल से सुख दो, मर्यादापूर्वक दिल से। दिखावा-मात्र नहीं, दिल से। सुख कर्ता के बच्चे एक सेकण्ड में अपनी मन्सा द्वारा, वाणी द्वारा, संबंध-सम्पर्क द्वारा सुख दे सकते हैं। अच्छा।

(यह इस सीजन का सबसे बड़ा ग्रुप है।)

सभी आराम से रहे हैं। टीचर्स को तो आराम मिलता ही है। टीचर्स तो स्पेशल हैं ना। (डबल फारेनर्स भी 150 के लगभग आये हैं) बाप विश्व कल्याणकारी है तो हर ग्रुप में देश-विदेश होना ही चाहिए। विदेश वालों को यह सीजन का पसन्द है? इतनी बड़ी सभा पसन्द है? सभी विदेशियों ने बहुत अच्छे अनुभव के पत्र लिखे हैं। बापदादा के पास पहुंचे हैं। कईयों ने अपना उमंग-उत्साह बहुत अच्छा लिखा है और कहाँ-कहाँ पुरुषार्थ भी लिखा है लेकिन मैजारिटी रिजल्ट अच्छी है। अभी पहले जैसे जल्दी-जल्दी हिलने वाले नहीं हैं, अचल हो गये हैं। इसलिए डबल विदेशियों को आगे बढ़ने की मुबारक हो। (160 स्थानों पर डायरेक्ट सुन रहे हैं) अच्छा है ब्रह्मा बाप ने पहले से ही कहा है कि एक समय आयेगा जो सारे वर्ल्ड में बाप का सन्देश जायेगा। अभी सुनते हैं फिर देखेंगे भी। आप सबका साक्षात्कार करेंगे। जगह-जगह पर आपको जाना नहीं पड़ेगा। एक जगह से ही बापदादा सहित आप सभी बच्चों का साक्षात्कार हो जायेगा। अच्छा।

31-1-98

पास विद् आनर बनने के लिए हर खज़ाने का एकाउण्ट चेक करके जमा करो

आज बापदादा हर एक छोटे-बड़े चारों ओर के देश-विदेश के बच्चों का भाग्य देख हर्षित हो रहे हैं। ऐसा भाग्य सारे कल्प में सिवाए ब्राह्मण आत्माओं के किसी का भी नहीं हो सकता। देवतायें भी ब्राह्मण जीवन को श्रेष्ठ मानते हैं। हर एक अपने जीवन के आदि से देखो कि हमारा भाग्य जन्मते ही कितना श्रेष्ठ है। जीवन में जन्मते ही माँ बाप की पालना का भाग्य मिलता है। उसके बाद पढ़ाई का भाग्य मिलता है। उसके आगे गुरु द्वारा मत वा वरदान मिलता है। आप बच्चों को पालना, पढ़ाई और श्रीमत, वरदान देने वाला कौन? परम आत्मा द्वारा यह तीनों ही प्राप्त हैं। पालना देखो - परमात्म पालना कितने थोड़े कोटों में से कोई को मिलती है। परमात्म शिक्षक की पढ़ाई आपके सिवाए किसको भी नहीं मिलती है। सतगुरू द्वारा श्रीमत, वरदान आपको ही प्राप्त है। तो अपने भाग्य को अच्छी तरह से जानते हो? भाग्य को स्मृति में रखते हुए झूलते रहते हो, गीत गाते रहते हो - वाह मेरा भाग्य!

अमृतवेले से लेकर जब उठते हो तो परमात्म प्यार में लवलीन होके उठते हो। परमात्म प्यार उठाता है। दिनचर्या की आदि परमात्म प्यार होता है। प्यार नहीं होता तो उठ नहीं सकते। प्यार ही आपके समय की घण्टी है। प्यार की घण्टी आपको उठाती है। सारे दिन में परमात्म साथ हर कार्य कराता है। कितना बड़ा भाग्य है जो स्वयं बाप अपना परमधाम छोड़कर आपको शिक्षा देने के लिए आते हैं। ऐसे कभी सुना कि भगवान रोज़ अपने धाम को छोड़ पढ़ाने के लिए आते हैं! आत्मायें चाहे कितना भी दूर-दूर से आयें, परमधाम से दूर और कोई देश नहीं है। है कोई देश? अमेरिका, अफ्रीका दूर है? परमधाम ऊंचे ते ऊंचा धाम है। ऊंचे ते ऊंचे धाम से ऊंचे ते ऊंचे भगवन, ऊंचे ते ऊंचे बच्चों को पढ़ाने आते हैं। ऐसा भाग्य अपना अनुभव करते हो? सतगुरू के रूप में हर कार्य के लिए श्रीमत भी देते और साथ भी देते हैं। सिर्फ मत नहीं देते हैं, साथ

भी देते हैं। आप क्या गीत गाते हो? मेरे साथ-साथ हो कि दूर हो? साथ है ना? अगर सुनते हो तो परमात्म टीचर से, अगर खाते भी हो तो बापदादा के साथ खाते हो। अकेले खाते हो तो आपकी गलती है। बाप तो कहते हैं मेरे साथ खाओ। आप बच्चों का भी वायदा है - साथ रहेंगे, साथ खायेंगे, साथ पियेंगे, साथ सोयेंगे और साथ चलेंगे..... सोना भी अकेले नहीं है। अकेले सोते हैं तो बुरे स्वप्न वा बुरे ख्यालात स्वप्न में भी आते हैं। लेकिन बाप का इतना प्यार है जो सदा कहते हैं मेरे साथ सोओ, अकेले नहीं सोओ। तो उठते हो तो भी साथ, सोते हो तो भी साथ, खाते हो तो भी साथ, चलते हो तो भी साथ। अगर दफ्तर में जाते हो, बिजनेस करते हो तो भी बिजनेस के आप ट्रस्टी हो लेकिन मालिक बाप है। दफ्तर में जाते हो तो आप जानते हो कि हमारा डायरेक्टर, बॉस बापदादा है, यह निमित्त मात्र है, उनके डायरेक्शन से काम करते हैं। कभी उदास हो जाते हो तो बाप फ्रैन्ड बनकर बहलाते हैं। फ्रैन्ड भी बन जाता है। कभी प्रेम में रोते हो, आंसू आते हैं तो बाप पोछने के लिए भी आते हैं और आपके आंसू दिल के डिब्बी में मोती समान समा देते हैं। अगर कभी-कभी नटखट होके रूठ भी जाते हो, रूसते भी हो बहुत मीठा-मीठा। लेकिन बाप रूठे हुए को भी मनाने आते हैं। बच्चे कोई बात नहीं, आगे बढ़ो। जो कुछ हुआ बीत गया, भूल जाओ, बीती सो बीती करो, ऐसे मनाते भी हैं। तो हर दिनचर्या किसके साथ है? बापदादा के साथ। बापदादा को कभी-कभी बच्चों की बातों पर हंसी भी आती है। जब कहते हैं बाबा आप भूल जाते हो, एक तरफ तो कहते हैं कम्बाइन्ड है, कम्बाइन्ड कभी भूलता है क्या? जब साथ-साथ है तो साथ वाला भूल सकता है क्या? तो बाबा कहते हैं शाबास - बच्चों में इतनी ताकत है जो कम्बाइन्ड को भी अलग कर देते हैं! है कम्बाइन्ड और थोड़ा सा माया कम्बाइन्ड को भी अलग कर देती है।

बापदादा बच्चों का खेल देखते यही कहते हैं बच्चे, अपने भाग्य को सदा स्मृति में रखो। होता क्या है? सोचते हो हाँ मेरा भाग्य बहुत ऊंचा है लेकिन सोचना-स्वरूप बनते हो, स्मृति-स्वरूप नहीं बनते हो। सोचते बहुत अच्छा हो मैं तो यह हूँ, मैं तो यह हूँ, मैं तो यह हूँ.... सुनाते भी बहुत अच्छा हो। लेकिन जो सोचते हो, जो कहते हो उसका स्वरूप बन जाओ। स्वरूप बनने में कमी पड़ जाती है। हर बात का स्वरूप बन जाओ। जो सोचो वह स्वरूप भी अनुभव करो।

सबसे बड़े ते बड़ा है अनुभवी मूर्त बनना। अनादि काल में जब परमधाम में हैं तो सोचना स्वरूप नहीं हैं, स्मृति स्वरूप हैं। मैं आत्मा हूँ, मैं आत्मा हूँ - यह भी सोचने का नहीं है, स्वरूप ही है। आदिकाल में भी इस समय के पुरुषार्थ का प्रालब्ध स्वरूप है। सोचना नहीं पड़ता - मैं देवता हूँ, मैं देवता हूँ... स्वरूप है। तो जब अनादिकाल, आदिकाल में स्वरूप है तो अब भी अन्त में स्वरूप बनो। स्वरूप बनने से अपने गुण, शक्तियां स्वतः ही इमर्ज होते हैं। जैसे कोई भी आक्यूपेशन वाले जब अपने सीट पर सेट होते हैं तो वह आक्यूपेशन के गुण, कर्तव्य ऑटोमेटिक इमर्ज होते हैं। ऐसे आप सदा स्वरूप के सीट पर सेट रहो तो हर गुण, हर शक्ति, हर प्रकार का नशा स्वतः ही इमर्ज होगा। मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। इसको कहा जाता है ब्राह्मणपन की नेचुरल नेचर, जिसमें और सब अनेक जन्मों की नेचर्स समाप्त हो जाती हैं। ब्राह्मण जीवन की नेचुरल नेचर है ही गुण स्वरूप, सर्व शक्ति स्वरूप और जो भी पुरानी नेचर्स हैं वह ब्राह्मण जीवन की नेचर्स नहीं हैं। कहते ऐसे हो कि मेरी नेचर ऐसी है लेकिन कौन बोलता है मेरी नेचर? ब्राह्मण वा क्षत्रिय? वा पास्ट जन्म के स्मृति स्वरूप आत्मा बोलती है? ब्राह्मणों की नेचर - जो ब्रह्मा बाप की नेचर वह ब्राह्मणों की नेचर। तो सोचो जिस समय कहते हो मेरी नेचर, मेरा स्वभाव ऐसा है, क्या ब्राह्मण जीवन में ऐसा शब्द - मेरी नेचर, मेरा स्वभाव... हो सकता है? अगर अब तक मिटा रहे हो और पास्ट की नेचर इमर्ज हो जाती है तो समझना चाहिए इस समय मैं ब्राह्मण नहीं हूँ, क्षत्रिय हूँ, युद्ध कर रहा हूँ मिटाने की। तो क्या कभी ब्राह्मण, कभी क्षत्रिय बन जाते हो? कहलाते क्या हो? क्षत्रिय कुमार या ब्रह्माकुमार? कौन हो? क्षत्रिय कुमार हो क्या? ब्रह्माकुमार, ब्रह्माकुमारियां। दूसरा नाम तो है ही नहीं। कोई को ऐसे बुलाते हो क्या कि हे क्षत्रिय कुमार आओ? ऐसा बोलते हो या अपने को कहते हो कि मैं ब्रह्माकुमार नहीं हूँ, मैं क्षत्रिय कुमार हूँ? तो ब्राह्मण अर्थात् जो ब्रह्मा बाप की नेचर वह ब्राह्मणों की नेचर। यह शब्द अभी कभी नहीं बोलना, गलती से भी नहीं बोलना, न सोचना, क्या करूं मेरी नेचर है! यह बहानेबाजी है। यह कहना भी अपने को छुड़ाने का बहाना है। नया जन्म हुआ, नये जन्म में पुरानी नेचर, पुराना स्वभाव कहाँ से इमर्ज होता है? तो पूरे मरे नहीं हैं, थोड़ा जिंदा हैं, थोड़ा मरे हैं क्या? ब्राह्मण जीवन अर्थात्

जो ब्रह्मा बाप का हर कदम है वह ब्राह्मणों का कदम हो।

तो बापदादा भाग्य को भी देख रहे हैं और इतना श्रेष्ठ भाग्य, उस भाग्य के आगे यह बोल अच्छा नहीं होता। इस बारी मुक्ति वर्ष मना रहे हो ना – क्या क्लास कराते हो? मुक्ति वर्ष है। तो मुक्ति वर्ष है या 99 में आना है? 98 का वर्ष मुक्ति वर्ष है? जो समझते हैं यही वर्ष मुक्ति वर्ष है, वह हाथ हिलाओ। देखो हाथ हिलाना बहुत सहज है। होता क्या है? वायुमण्डल में बैठे हो ना, खुशी में झूम रहे हो, तो हाथ हिला देते हो, लेकिन दिल से हाथ हिलाओ, प्रतिज्ञा करो - कुछ भी चला जाए लेकिन प्रतिज्ञा मुक्ति वर्ष की न जाए। ऐसी पक्की प्रतिज्ञा है? देखो सम्भालके हाथ उठाओ। इस टी.वी. में आवे या न आवे, बापदादा के पास तो आपका चित्र निकल रहा है। तो ऐसे-ऐसे कमजोर बोल से भी मुक्ति। बोल ऐसे मधुर हो, बाप समान हो, सदा हर आत्मा के प्रति शुभ भावना के बोल हों, इसको कहा जाता है युक्तियुक्त बोल। साधारण बोल भी चलते-फिरते होना नहीं चाहिए। कोई भी अचानक आ जाए तो ऐसा ही अनुभव करे कि यह बोल हैं या मोती हैं। शुभ भावना के बोल हीरे मोती समान हैं क्योंकि बापदादा ने कई बार यह इशारा दे दिया है कि समय प्रमाण अभी थोड़ा सा समय है सर्व खजाने जमा करने का। अगर इस समय में - समय का खजाना, संकल्प का खजाना, बोल का खजाना, ज्ञान धन का खजाना, योग की शक्तियों का खजाना, दिव्य जीवन के सर्व गुणों का खजाना जमा नहीं किया तो फिर ऐसा जमा करने का समय मिलना सहज नहीं होगा। सारे दिन में अपने इन एक-एक खजाने का एकाउण्ट चेक करो। जैसे स्थूल धन का एकाउण्ट चेक करते हो ना, इतना जमा है.. ऐसे हर खजाने का एकाउण्ट जमा करो। चेक करो। सर्व खजाने चाहिए। अगर पास विद आनर बनने चाहते हो तो हर खजाने का जमा खाता इतना ही भरपूर चाहिए जो 21 जन्म जमा हुए खाते से प्रालब्ध भोग सको। अभी समय के टू लेट की घण्टी नहीं बजी है, लेकिन बजने वाली है। दिन और डेट नहीं बतायेंगे। अचानक ही आउट होगा - टू लेट। फिर क्या करेंगे? उस समय जमा करेंगे? कितना भी चाहो समय नहीं मिलेगा। इसलिए बापदादा कई बार इशारा दे रहा है - जमा करो-जमा करो-जमा करो। क्योंकि आपका अभी भी टाइटिल है - सर्वशक्तिमान, शक्तिवान नहीं है, सर्वशक्ति-मान। भविष्य में भी है सर्वगुण सम्पन्न, सिर्फ गुण सम्पन्न नहीं है। यह सब

खजाने जमा करना अर्थात् गुण और शक्तियां जमा हो रही हैं। एक एक खजाने का गुण और शक्ति से सम्बन्ध है। जैसे साधारण बोल नहीं तो मधुर भाषी, यह गुण है। ऐसे हर एक खजाने का कनेक्शन है।

बापदादा का बच्चों से प्यार है इसलिए फिर भी बार-बार इशारा दे रहे हैं क्योंकि आज की सभा में सब वैरायटी हैं। छोटे बच्चे भी हैं, टीचर्स भी हैं क्योंकि टीचर्स ही तो समर्पण हुई हैं। कुमारियां भी हैं, प्रवृत्ति वाले भी हैं। सब वैरायटी हैं। अच्छा है। सभी को चांस दिया है, यह बहुत अच्छा है। बच्चों की तो काफी समय से अर्जी थी। थी ना बच्चे? हमको मिलने का चांस कब मिलेगा? तो अच्छा हुआ - सर्व वैरायटी का गुलदस्ता बाप के सामने है। तो बच्चे हाथ उठाओ।

बच्चों से तो बड़ों का प्यार होता ही है। तो बाप से भी बच्चों का प्यार है और सभी बच्चे आज के ब्राह्मण हैं कल के क्या बनेंगे? बोलो बच्चे, कल क्या बनेंगे? (देवता बनेंगे) अच्छा, कौन सा देवता बनेंगे, पता है? बच्चों में से कोई देवी नहीं बनेगा, सब देवता बनेंगे? अच्छा है, बच्चों से रौनक होती है। तो आपकी रौनक को देख यह सभी खुश हो रहे हैं, वाह बच्चे वाह! लेकिन एक बात याद रखना - बच्चे, ब्राह्मण आत्मायें बच्चे, तो जो बड़ों का भाग्य है ना वह बच्चों का भी भाग्य है इसलिए बाप के साथ को कभी नहीं भूलना। चाहे कितना भी माया की अट्रैक्शन हो लेकिन बाप को नहीं भूलना। अच्छा सभी बच्चे रोज़ क्लास में जाते हैं या सण्डे-सण्डे जाते हैं? (रोज़ क्लास में जाने वालों ने हाथ उठाया) यह रोज़ जाने वाले हैं। बहुत हैं। अच्छा - टी.वी. देखते हो? सभी हँसते हैं। देखो, अगर अच्छी बातें देखते हो तो ठीक है लेकिन बुरी बातें भी देखते हो तो ठीक नहीं है। आज बुरी बातें न देखने का संकल्प कर लो कि हम कभी अगर टी.वी. देख भी रहे हैं और कोई बुरी बात आ जाती है तो बन्द कर देंगे। कर सकते हो? जो बुरी बातें टी.वी. में नहीं देखते हैं वह हाथ उठाओ। बहुत कम हैं। बच्चों का टीचर कौन है? तो सभी टीचर्स बच्चों का चार्ट देखना। सभी बच्चे मुक्ति वर्ष मनायेंगे? सच्ची दिल से हाथ उठाओ। अच्छा। देखो दादियों ने आपको चांस दिया है तो दादियों को शुक्रिया किया? किया या नहीं? चलो किया तो बहुत अच्छा लेकिन कल दादियों को प्यार से शुक्रिया करना और दादियों ने चांस दिया है ना तो यह प्रतिज्ञा करना कि हम भी मुक्ति वर्ष मनायेंगे।

लड़ना नहीं, जोश नहीं करना, क्रोध नहीं करना। बापदादा जानते हैं - कई छोटे-छोटे बच्चे बड़ों से भी प्रतिज्ञा में आगे जाते हैं। तो सभी आगे जाकर दिखाना। अच्छा है बच्चों की महफिल भी अच्छी है। अच्छा।

दूसरा ग्रुप है कुमारियों का - कुमारियां बहुत हैं। (करीब 2000 कुमारियां आई हैं) अच्छा है कुमारियों ने हिम्मत रखी है। कुमारियों के लिए तो बापदादा सदा ही लक्की कुमारी जीवन कहते हैं। देखो कुमार कहते हैं कि कुमारी अगर टीचर बनती हैं, सेन्टर पर जाती हैं तो कुमारी जाते ही दीदी-दीदी कहलाती हैं और कुमार कितने भी पुराने हैं तो दादा-दादा कोई नहीं कहता। कुमारियों के लिए तो ट्रेनिंग होती है निकालें, और कुमार सेन्टर सम्भालने के लिए आफर करते हैं तो दादियाँ सोचती हैं। तो कुमारियों का भाग्य बहुत सहज बना हुआ है। कुमारी ने ट्रेनिंग की, योग्य बनी तो दहेज में सेन्टर मिल जाता है। तो कुमारी जीवन कितनी श्रेष्ठ है, कितने गोल्डन चांस हैं, वह सोचो। अगर अभी से सेवाधारी नहीं बनेंगे तो भविष्य में भी क्या बनेंगे? सेवाधारी किसे मिलेंगे? जो सेवा करेंगे उन्हें मिलेंगे। इसलिए कुमारियों को अपना फैसला जल्दी से जल्दी करना चाहिए। लेकिन बापदादा कुमारियों के लिए एक बात सदा कहते हैं - सच्ची सेवाधारी कुमारी वह है जो शक्ति रूप कुमारी है। अगर निमित्त सेवाधारी शक्तिशाली नहीं है तो औरों को शक्तिशाली नहीं बना सकती। अगर कुमारी शक्तिशाली नहीं है, कोमल है, एक होती है कोमल और दूसरी होती है किसी के प्रभाव में आने वाली। ज्ञान का प्रभाव डालने वाली नहीं लेकिन कोई के प्रभाव में प्रभावित होने वाली। कुमारियों में दादियों को सदा इसी एक बात का डर लगता है। निमित्त बनी बाप के ऊपर प्रभावित करने के लिए लेकिन स्वयं प्रभावित हो जाए तो क्या रिजल्ट निकलेगी? तो बापदादा कहते हैं कुमारियां हाँ तो करती हैं, हाँ जायेंगे, निकलेंगे लेकिन अभी समय के हिसाब से ऐसी कुमारियां चाहिए जो जिस सेन्टर पर जाएं उस सेवाकेन्द्र को निर्विघ्न बनाकर रखें। निर्विघ्न का सर्टीफिकेट स्वयं को भी देवें और साथियों से भी लेवें। तो ऐसी कुमारियां हो या थोड़ी सी वस्तु पर, कोई व्यक्ति पर प्रभावित होने वाली हो? क्या हो? क्या सोचती हो? बापदादा को ऐसी कुमारियां चाहिए जो निर्विघ्न कुमारी, विघ्न-विनाशक कुमारी, कमजोर को शक्तिशाली बनाने वाली कुमारी हो, ऐसे नहीं बापदादा वा दादियां हैण्डस करके भेजें और हैण्डस के बजाए

हेडक बन जाएं। तो ऐसी कुमारियां नहीं चाहिए। तो क्या समझती हो? ऐसी कुमारियां तैयार हैं, हिम्मत है कि हम विघ्न-विनाशक बनकर रहेंगे? जो ऐसा बनेंगी वह हाथ उठाओ। दिल से उठा रही हो; संगठन में शर्म के मारे तो नहीं उठा रही हो? जो सेन्टर्स पर जाने के लिए तैयार हैं और ऐसा विघ्न-विनाशक बनेंगी, वही उठो बाकी बैठ जाओ। जो 18 वर्ष की आयु से ऊपर हैं और विघ्न-विनाशक होके सेन्टर पर जाने के लिए तैयार हैं, वह खड़े हो जाओ। यह सब विघ्न-विनाशक निमित्त सेवाधारी हैं? (हाँ जी) फोटो निकालो। अभी दादियों को यह कैसेट देना, फिर आप नोट करना - कौन-कौन हैं? मुबारक हो, मुबारक हो। कुमारियों को बापदादा भी मुबारक देते हैं लेकिन राइट हैण्ड बनना, लेफ्ट हैण्ड नहीं बनना। अच्छा।

तीसरा ग्रुप है - गीता पाठशाला वालों का– वह हाथ उठाओ। खड़े होकर हाथ हिलाओ। (करीब 4000 भाई-बहिन हैं) बहुत हैं। अच्छा - गीता पाठ-शाला के निमित्त बच्चों को भी बापदादा निमित्त सेवाधारी कहते हैं। अपनी प्रवृत्ति भी सम्भाल रहे हैं और अलौकिक सेवा के निमित्त भी बने हैं तो डबल काम कर रहे हैं। लेकिन गीता पाठशाला के निमित्त आत्माओं की विशेषता है सदा अपने को हर कार्य में ट्रस्टी समझकर चलना। क्योंकि बापदादा ने देखा कि गीता पाठशाला खोलने वाले भिन्न-भिन्न संकल्प से गीता पाठशाला खोलते हैं, कोई तो सच्चे दिल से सेवा प्रति गीता पाठशाला खोलते हैं वा चलाते हैं लेकिन कोई-कोई जब वृद्धि होती है तो कहाँ-कहाँ भावनाओं में भी मिक्स हो जाता है। तो बापदादा देखते हैं कि कोई-कोई गीता पाठशाला अपने परिवार की पालना अर्थ भी खोलते हैं, परिवार की पालना भी हो और निमित्त सेवा भी हो। तो गीता पाठशाला का अर्थ है ट्रस्टी बनके सेवा करना क्योंकि जो भी आत्मायें आती हैं वह बाप के स्नेह में आती हैं, इसलिए ट्रस्टी बनकर कारोबार चलाना बहुत आवश्यक है। एकदम नि:स्वार्थ सेवा की भावना वालों को कहेंगे सच्ची गीता पाठशाला। बाकी बापदादा मैजॉरिटी शुभ भावना से सेवा निमित्त चलाने वाली आत्माओं पर बहुत खुश हैं कि अपना समय सफल कर रहे हैं। डबल कार्य उसी शुद्ध भावना से सम्भाल रहे हैं। और कोई भावना मिक्स नहीं है, न नाम की, न लौकिक परिवार के पालना की। तो ऐसी शुद्ध भावना, सेवा की भावना वाली ट्रस्टी आत्माओं को बापदादा बहुत-बहुत-बहुत मुबारक देते हैं। अच्छे हैं और

अच्छे ही रहेंगे। लेकिन चेक करना कोई भी और भावना मिक्स नहीं हो। सेवा की भावना के सिवाए और कोई भावना आने नहीं देना। बाकी सेवा करते हो अर्थात् अनेक आत्माओं का कल्याण करते हो। और देखा गया है, गीता पाठशाला वालों की विशेषता है कि प्रवृत्ति वालों को देख प्रवृत्ति वाले हिम्मत रखते हैं। सेन्टर पर फिर भी सोचते हैं कि पता नहीं हमको भी छोड़ना पड़ेगा लेकिन प्रवृत्ति में रहते सेवा के निमित्त बनने वाले बच्चों को देख और भी प्रवृत्ति वालों को हिम्मत, उमंग-उत्साह आता है। इसलिए बापदादा गीता पाठशाला वालों को भी बहुत-बहुत सेवा की मुबारक, यादप्यार दे रहे हैं। एक हाथ की ताली बजाओ। अच्छा।

चौथा ग्रुप - समर्पण वाली टीचर्स का है। अच्छा किया, हिम्मत रख अपने सेवा के निमित्त बनने को प्रत्यक्ष स्टेज पर लाया। और बाप के बनने की, हाथ में हाथ देने की सेरीमनी 5-6 साल पहले हो गई थी लेकिन अभी और हाथ में हाथ पक्का किया, जो छूट नहीं सके। इसलिए बापदादा समर्पण वाली टीचर्स को बधाई देते हैं कि सदा हाथ में हाथ, साथ में साथ पक्का करके विजय माला अपने गले में डालेंगी। अब जिस स्थान पर रहती हो उस स्थान को और स्वयं को निर्विघ्न बनाना। कोई विघ्न की रिपोर्ट नहीं आवे। स्व के पुरुषार्थ में भी विघ्न रूप नहीं बनना। कई बार बाहर से भले विघ्न नहीं भी हो लेकिन मन में तो आता है ना। तो न मन का विघ्न हो, न साथियों का विघ्न हो, न स्टूडेन्टस द्वारा कोई विघ्न हो। स्व निर्विघ्न, सेन्टर निर्विघ्न, साथी निर्विघ्न – यह तीन सर्टीफिकेट इस मुक्ति वर्ष में लेना है। मंजूर है? और विघ्न डालें तो क्या करेंगी? आप तो निर्विघ्न होंगी और कोई विघ्न डालने वाला हो, तो क्या करेंगी? विघ्न विनाशक बनेंगी? तो समर्पण समारोह माना सम्पूर्णता का समारोह। सिर्फ समर्पणता का समारोह याद नहीं करना, वह भी याद करना लेकिन समय प्रमाण अभी सम्पूर्णता का दिवस मनाना ही है, इतना दृढ़ निश्चय का कंगन बांधकर जाना। बापदादा सभी टीचर्स को कह रहे हैं, जो भी सभी टीचर्स हैं चाहे देश की, चाहे विदेश की वह हाथ उठाओ। अच्छा। आज विदेश भी बहुत है, वेलकम हो आने की विदेश के सेन्टर्स को।

अच्छा - बापदादा की टीचर्स के प्रति एक शुभ भावना है, सुनायें? सिर्फ सुनेंगी या करेंगी भी? सिर्फ सोचेंगी या स्वरूप बनेंगी? सुनेंगी, करेंगी.. अच्छा

- बहुत छोटी सी शुभ भावना है। बड़ी बात भी नहीं है, बहुत छोटी है। दादी ने सन्देश भेजा कि अभी सभी सेन्टर्स निर्विघ्न हो जाएं उसकी रेसपान्सिबुल टीचर्स हैं। अभी तक टीचर्स की कम्पलेन्स आती हैं। दादियों के पास वह फाइल है ना। आफिस वाली ईशू कहती है सेन्टर्स से इतने फालतू लेटर्स आते हैं जो किचड़े का डिब्बा भर जाता है। ऐसे है ना? यह पढ़ने में भी टाइम लगता, फिर फाड़ने में भी टाइम लगता, फिर बाक्स में डालने में भी टाइम लगता, तो यह मेहनत फालतू हो गई ना। इसलिए बापदादा की शुभ भावना है कि सभी टीचर्स बाप के राइट हैण्डस हैं, लेफ्ट हैण्ड नहीं हैं, राइट हैण्ड हैं। राइट हैण्डस के स्थान से, सेन्टर्स से ऐसे समाचार आवें जो वेस्ट बाक्स ही भर जावे - तो ऐसा अच्छा है? बोलो हाँ या ना? जो समझते हैं इस वर्ष हम हर एक तीन सर्टीफिकेट लेंगे - स्व विघ्न-विनाशक, सेन्टर विघ्न-विनाशक और साथी विघ्न-विनाशक। यह तीन सर्टीफिकेट लेने के लिए जो तैयार हैं वह टीचर्स हाथ उठाओ। जो सेन्टर पर पाण्डव रहते हैं, वह भी हाथ उठाओ। (सभी ने हाथ उठाया) थैंक्यू।

अभी वेस्ट पेपर बाक्स खाली रहेंगे। पढ़ना नहीं पड़ेगा। यह (ईशू) कहती है लेटर्स खोल-खोलकर हाथ थक जाता है। तो इसीलिए चाहे यहाँ बैठे हैं, चाहे विदेश में सुन रहे हैं, चाहे देश में सुन रहे हैं, चाहे मुरली सुनेंगे। लेकिन बापदादा की सारे विश्व की निमित्त टीचर्स के प्रति यह शुभ भावना है कि यह वर्ष कोई कम्पलेन्ट नहीं आनी चाहिए। कम्पलेन्ट के फाइल खत्म हो जाएं। बापदादा के पास भी बहुत फाइल हैं। तो इस वर्ष कम्पलेन्ट के फाइल खत्म। सब फाइन बन जाएं। फाइन से भी रिफाइन। पसन्द है ना? कोई कैसा भी हो उनके साथ चलने की विधि सीखो। कोई क्या भी करता हो, बार-बार विघ्न रूप बन सामने आता हो लेकिन यह विघ्नों में समय लगाना, आखिर यह भी कब तक? इसका भी समाप्ति समारोह तो होना है ना? तो दूसरे को नहीं देखना। यह ऐसे करता है, मुझे क्या करना है? अगर वह पहाड़ है तो मुझे किनारा करना है, पहाड़ नहीं हटना है। यह बदले तो हम बदलें - यह है पहाड़ हटे तो मैं आगे बढ़ूं। न पहाड़ हटेगा न आप मंजिल पर पहुंच सकेंगे। इसलिए अगर उस आत्मा के प्रति शुभ भावना है, तो इशारा दिया और मन-बुद्धि से खाली। खुद अपने को उस विघ्न स्वरूप बनने वाले के सोच-विचार में नहीं डालो। जब नम्बरवार

हैं तो नम्बरवार में स्टेज भी नम्बरवार होनी ही है लेकिन हमको नम्बरवन बनना है। ऐसे विघ्न वा व्यर्थ संकल्प चलाने वाली आत्माओं के प्रति स्वयं परिवर्तन होकर उनके प्रति शुभ भावना रखते चलो। टाइम थोड़ा लगता है, मेहनत थोड़ी लगती है लेकिन आखिर जो स्व-परिवर्तन करता है, विजय की माला उसी के गले में पड़ती है। शुभ भावना से अगर उसको परिवर्तन कर सकते हो तो करो, नहीं तो इशारा दो, अपनी रेसपान्सिबिल्टी खत्म कर दो और स्व परिवर्तन कर आगे उड़ते चलो। यह विघ्न रूप भी सोने का लगाव का धागा है। यह भी उड़ने नहीं देगा। यह बहुत महीन और बहुत सत्यता के पर्दे का धागा है। यही सोचते हैं यह तो सच्ची बात है ना। यह तो होता है ना। यह तो होना नहीं चाहिए ना। लेकिन कब तक देखते, कब तक रुकते रहेंगे? अब तो स्वयं को महीन धागों से भी मुक्त करो। मुक्ति वर्ष मनाओ। इसलिए बच्चों की जो आशायें हैं, उमंग है, उत्साह है, इसके सभी फंक्शन मनाकर बापदादा पूरे कर रहे हैं। लेकिन इस वर्ष का अन्तिम फंक्शन मुक्ति वर्ष का फंक्शन हो। फंक्शन में दादियों को सौगात भी देते हो। तो बापदादा को इस मुक्त वर्ष के फंक्शन में स्वयं के सम्पूर्णता की गिफ्ट देना। अच्छा।

महाराष्ट्र के सेवाधारियों से - यह रसम अच्छी बनाई है। अच्छा है, सेवा से सभी को ब्राह्मण परिवार के समीप आने का चांस मिलता है। निर्विघ्न सेवा हुई तो हाथ उठाओ। महाराष्ट्र के सेवाधारियों ने बेहद की सेवा की तो बेहद की दुआयें ली। आपके खाते में बेहद की दुआयें जमा हो गई। सबने सेवा का लाभ उठाया ना। सभी को अच्छा लगा ना। बहुत अच्छा। महाराष्ट्र के मुख्य सेवाधारी उठो। बापदादा सभी महाराष्ट्र के निमित्त सेवाधारियों को निर्विघ्न सेवाधारी की मुबारक देते हैं। अच्छा। सिक्युरिटी वालों को रोज़ दादियों से गुडमार्निंग या गुडनाइट करनी चाहिए। उन्हों की सेवा ज्यादा है। अच्छा। सिक्युरिटी वालों ने निर्विघ्न अपना टर्न पूरा किया है, यह बहुत हिम्मत का काम है।

(डबल विदेशी कहते हैं एक मेला हम भी सम्भाल सकते हैं) कम से कम सभी विदेश का खाना तो खायेंगे। अच्छा है जो सेवा की आफर करते हैं उसको पहले ही इनएडवांस आफरीन है।

डबल विदेशी विशेष आत्मायें पहुंच गई हैं और पहुंचते जायेंगे। बापदादा विदेश की चारों ओर की सेवा देख, उमंग-उत्साह देख हर्षित होते हैं क्योंकि

जब विदेश सेवा आरम्भ हुई तो जो भी मुश्किल बातें लगती थी वह अभी इतनी सहज हो गई हैं जो सभी सेवा में उड़ते रहते हैं। पहले सोचते थे विदेश में बड़ा प्रोग्राम करें तो सुनने वालों से हाल भरना बहुत मुश्किल है। वी.आई.पी. की सेवा बहुत मुश्किल है। लेकिन अभी क्या कहते हैं? अभी तो यू.एन. तक भी पहुंच गये हैं। तो बहुत सहज हो गया है ना। बापदादा सदा कहते हैं कितने भी बड़े हों, उन्हों के पास पावर है, आपके पास परमात्म विल पावर है। परमात्मा ने पावर्स की विल की है, तो विल पावर है। तो परमात्म विल पावर के आगे पावर्स परिवर्तित होना कोई बड़ी बात नहीं है सिर्फ स्वयं में एक संकल्प हो - होना ही है। यह तो नहीं होगा, वह तो नहीं होगा, पता नहीं क्या होगा... यह परमात्म टचिंग उन्हों की बुद्धि में जाने से रुकावट बन जाती है। चाहे देश में, चाहे विदेश में – क्यों, कैसा, ऐसा तो नहीं, इस संकल्प से कभी भी कोई कार्य अर्थ सामने नहीं जाओ। क्यों, क्या, ऐसा, वैसा - यह पहले आपस में सोच के फाइनल करो, वह बात अलग है लेकिन जब सामने जाते हो तो सदा दृढ़ संकल्प से जाओ - होना ही है। आखिर तो सभी को झुकना ही है। तो विदेश भी सेवा में उड़ रहा है, भारत की सेवा और विदेश की सेवा दोनों उड़ती कला में हैं। अभी सेवा में सकाश दे, बुद्धियों को परिवर्तन करने की सेवा एड करो। फिर देखो सफलता आपके सामने स्वयं झुकेगी। ठीक है ना? विदेश में अनुभव है ना? अच्छा है। सेवाओं का समाचार बापदादा के पास पहुंचता है। विघ्न भी आते हैं, लेकिन आगे का पर्दा विघ्न का होता है, पर्दे के अन्दर कल्याण समाया हुआ दृश्य छिपा हुआ होता है। मन्सा-वाचा की शक्ति से विघ्न का पर्दा हटा दो तो अन्दर कल्याण का दृश्य दिखाई दे।

बाकी सभी विदेश के सेन्टर्स के बच्चे बहुत अच्छे-अच्छे कार्ड भी भेजते हैं, पत्र भी भेजते हैं, कोई आता है तो बहुत-बहुत यादप्यार भी भेजते हैं। बापदादा भी कार्ड को रिगार्ड देते हैं। दिल से भेजते हैं, दिखावे से नहीं भेजें। दिखावे से भेजना वह एकानामी होनी चाहिए और दिल से भेजते हैं तो उसका कोई मूल्य नहीं है। तो हर एक के साइन किये हुए बहुत कार्ड बापदादा के पास हर उत्सव के पहुंचते हैं। भारतवासियों के भी पहुंचते हैं। बापदादा सभी कार्डस और पत्रों का एक ही जवाब देते हैं - मुबारक हो, बधाईयां हो, सदा सफल रहो और औरों को भी सफलता स्वरूप बनाते उड़ो। चलो नहीं, उड़ो। अच्छा - जो

दूर बैठे सुन रहे हैं उन्हों को भी बापदादा एक-एक देश को नाम सहित, हर एक सेवाकेन्द्र की विशेषता सहित सम्मुख वालों से भी पहले यादप्यार दे रहे हैं। साधन अच्छा निकाला है और भी निकलते रहेंगे। आगे चलकर देखेंगे भी। यह तो सेन्टर्स सुन रहे हैं, वह भी दिन आयेगा जो चारों ओर बाप का सन्देश सभी तरफ पहुंचेगा। साइन्स भी सब आपके लिए ही इन्वेन्शन कर रही है। इसीलिए बापदादा साइन्स के साधन निकालने वाले बच्चों को भी स्नेह से मुबारक देते हैं। दिमाग तो चलाते हैं। साइन्स वाले भी आयेंगे, आपकी अंचली लेंगे। फिर आपकी सेवा में भविष्य में आयेंगे। अच्छा।

बापदादा सभी सेवाकेन्द्रों में सेवा के लिए डायरेक्शन दे रहे हैं कि सितम्बर और अक्टूबर यह दो मास बड़े-बड़े प्रोग्राम करो। जितना भी आवाज फैला सकते हो, सभी कोनों में आवाज फैलाओ। कोई भी कोना रह नहीं जाये। बड़े-बड़े प्रोग्रामस में भी लक्ष्य रखो, ऐसी कोई विधि बनाओ जो सिर्फ सुनके नहीं जायें लेकिन बनने की शुभ इच्छा लेकर जायें। कुछ अनुभव करके जायें। वर्तमान समय वायुमण्डल भी चारों ओर सहयोगी है इसलिए सफलता सहज प्राप्त होने का समय है। खूब आवाज फैलाओ और साथ-साथ जो छोटे-छोटे स्थान हैं, जिसमें बड़े फंक्शन करने की हिम्मत नहीं है, वहाँ छोटे-छोटे ग्रुप्स का चाहे 10-12 हो लेकिन योग शिविर के प्रोग्राम रखो। अगर स्थान नहीं है तो कोई साथ में स्थान ले सकते हो तो लो, अगर वह भी नहीं है तो एक दिन का भी शिविर रखो। अगर छुट्टी का एक दिन भी रखते हो और उन्हों को अनुभव अच्छा होता है तो वह आपेही दूसरे सण्डे को भी आफर करेंगे। देखा जाता है योग शिविर स्टूडेन्ट बनाता है। कान्फ्रेन्स और स्नेह मिलन, छोटे-छोटे स्नेह मिलन भी समीप लाते हैं लेकिन बड़े प्रोग्राम प्रभावित करते हैं। नाम बाला होता है। एडवरटाइज अच्छी हो जाती है। तो दोनों ही जरूरी हैं लेकिन छोटे स्थान और छोटे सेन्टर्स या तो छोटे-छोटे स्नेह मिलन करो वा योग शिविर का छोटा सा प्रोग्राम रखो।

उसके साथ बापदादा हर ब्राह्मण की स्व-उन्नति के प्रति जहाँ-जहाँ जब सहज मास निकल सकता है, मौसम के अनुसार, प्रबन्ध के अनुसार एक मास स्व-उन्नति, सर्व खजानों को जमा करने के अभ्यास की भट्ठी हो। एक मास स्व-उन्नति के लिए भी निकालना जरूरी है। उसमें कुछ नवीनता निकालो। जैसे अभी

भट्ठियां होती रही हैं, वह भी अच्छी हैं लेकिन कुछ उसमें नवीनता एड करो। कुछ समय अन्तर्मुखता का मौन, मन का मौन भी हो। मुख का मौन तो दुनिया भी रखती है लेकिन यहाँ व्यर्थ संकल्प से मन का मौन होना चाहिए। जैसे ट्रैफिक कन्ट्रोल करते हो तो व्यर्थ की ट्रैफिक को कन्ट्रोल करते हो वैसे बीच-बीच में एक दिन मन के व्यर्थ का ट्रैफिक कन्ट्रोल करो। ज्ञान के मनन के साथ शुभ भावना, शुभ कामना के संकल्प, सकाश देने का अभ्यास, यह मन के मौन का या ट्रैफिक कन्ट्रोल का बीच-बीच में दिन मुकरर करो। अगर किसको छुट्टी नहीं भी मिलती हो, एक दिन सप्ताह में तो छुट्टी मिलती है, उसी प्रमाण अपने-अपने स्थान के प्रोग्राम फिक्स करो। लेकिन एक मास विशेष एकान्तवासी और खजानों के एकानामी का प्रोग्राम अवश्य रखो। एकनामी और एकानामी। बाकी बापदादा अपने नियम प्रमाण नवम्बर से आरम्भ करेंगे। देखा गया कि रथ के दृढ़ संकल्प, हिम्मत और सम्भाल से यह वर्ष निर्विघ्न समाप्त हुआ है और हो जायेगा। तो अभी भी बच्ची का उमंग है, जब रथ तैयार है तो रथवान को आने में क्या है। हाँ बीच-बीच में रेस्ट का देखना। रथ को रेस्ट भी देना, ऐसा नहीं कि काम में ज्यादा लगा दो। अच्छा है रेस्ट के टाइम रेस्ट, सेवा के समय सेवा।

अमृतवेले जो मुख्य प्लैनिंग बुद्धि हैं उन्हों को बापदादा कार्य के निमित्त बनाता है, उन्हों को नई विधियां सेवा की टच होंगी, सिर्फ अपनी बुद्धि को बाप के हवाले करके बैठो। बुद्धिवानों की बुद्धि आपकी बुद्धि को टच करेंगे। यह प्लैनिंग बुद्धि वालों को वरदान मिलना ही है। निमित्त बनो। ठीक है ना पाण्डव। देखो सब प्लैनिंग बुद्धि वाले बैठे हैं, टीचर्स भी, विदेशी भी, भारत वाले भी तो क्या हो जायेगा? बहुत-बहुत अच्छा होगा। बाकी गर्मी और बरसात में छोटे-छोटे स्नेह मिलन कर सकते हो। शान्तिवन में भी, बापदादा ने पहले भी कहा था कि कईयों के मित्र सम्बन्धी, समीप वाले योग शिविर करने चाहते हैं तो उन्हों को थोड़ा सा हालों में कम संख्या करके और जो हर हाल में कमरे छोटे-छोटे बनाये हैं, जहाँ अभी टीचर्स रहती हैं वहाँ अगर कोई ऐसे वी.आई.पी. हैं तो उन कमरों में भी अलग में रख सकते हैं और बहुत बड़ा हाल है तो डबल कनात की पार्टीशन भी कर सकते हैं क्योंकि अभी सीजन तक तो बना नहीं सकते हैं लेकिन पीछे कुछ प्रबन्ध कर भी सकते हैं। और जो यहाँ अलग में एक बहनों का, एक भाईयों का भवन बनाया है, वहाँ भी अगर ब्राह्मण आत्मायें

अपने को सेट कर सकें, तो विशेष वी.आई.पी. को इस वर्ष में सेट कर सकते हो। ऐसा कोई वी.आई.पी. स्पेशल है तो। बाकी ब्राह्मण तो अपने को एडजेस्ट भी कर सकते हैं और योग शिविर के ग्रुप तो साथी टीचर्स ही ले आती हैं। बाकी दूसरी सीजन में तो वी.आई.पी. के तैयार हो ही जायेंगे। जो ज़ोन अपने ज़ोन का रिफ्रेशर कोर्स शान्तिवन में करना चाहते हैं, उसको शान्तिवन का चांस मिल सकता है। यहाँ-वहाँ स्थान ढूंढने के बजाए चाहे संख्या कम भी हो फिर भी जो सुख-साधन यहाँ है वह बाहर नहीं मिल सकता। तो ज़ोन वालों को आफर है। अपना ग्रुप ले आवे और रिफ्रेश कर जाये क्योंकि यहाँ फिर भी दादियां तो मिलेंगी। वहाँ तो दादियाँ जावें नहीं जावें, यहाँ यह चांस मिल सकता है। और जो ग्रुप आफर करे, जैसे यूथ हैं या प्रवृत्ति वाले हैं, अगर 4-6 ज़ोन मिलके ग्रुप बना सकें तो बना सकते हैं क्योंकि ऊपर तो वर्ग की सेवा होगी लेकिन नीचे छोटे-छोटे ग्रुप के भी ऐसे प्रोग्राम कर सकते हो। शान्तिवन को बिजी रखो। जो चांस लेना चाहे वह ले सकते हैं। मित्र-सम्बन्धियों की सेवा दिल से कर सकते हैं। अच्छा।

चारों ओर के परमात्म पालना, पढ़ाई और श्रीमत के भाग्य के अधिकारी विशेष आत्माओं को, सदा सोचना और स्वरूप बनना दोनों समान करने वाले बाप समान आत्माओं को, सदा परमात्म विल पावर द्वारा स्वयं में और सेवा में सहज सफलता प्राप्त करने वाले निमित्त सेवाधारी बच्चों को, सदा बाप को कम्बाइन्ड रूप में अनुभव करने वाले, सदा साथ निभाने वाले साथी बच्चों को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

अच्छा - सभी ठीक रहे हुए हैं, कोई तकलीफ हुई है? तकलीफ नहीं हुई ना? खुश हैं? बच्चे खुश हैं? बहुत खुश हैं, नाच रहे हैं बच्चे। कुमारियां खुश हैं? कुमारियां भी मौज में हैं। टीचर्स सबसे खुश हैं और पाण्डव खुशी में उड़ रहे हैं, बहुत अच्छा।

दादियों से:- बच्चे कहते हैं जी बाबा, तो बाप भी कहते हैं जी बच्चे। बाप और बच्चों का यही तो स्नेह का धागा है।

जगदीश भाई से - तबियत अच्छी है। अभी बहुत काम करना है। अभी पाण्डवों को मिलकर कोई नये प्लैन बनाने हैं। नवीनता के निमित्त बनना है। आदि से कोई न कोई कार्य के लिए निमित्त बनते आये हैं, सभी की विशेषता

है इसलिए अभी भी और टचिंग होती रहेगी। अच्छा है दिल्ली में भी धूम मचानी है। दिल्ली का सेवाधारी पाण्डव पहला निमित्त बने हुए हो। दिल्ली से नाम बाला होगा ना। सभी के सकाश से दिल्ली से नाम बाला तो करना ही है। कोई ऐसे प्लैन बनाओ, बाम्बे, दिल्ली नई इन्वेन्शन्स निकालो। मधुबन में तो सेवायें ड्रामानुसार बढ़ती ही जाती हैं और बढ़ती जानी हैं। यह विंग्स का सेवा का प्लैन भी अच्छा चल रहा है और चलता रहेगा। जो निमित्त बनता है उसको सेवा की सफलता का शेयर मिल जाता है। इसलिए निमित्त बनते जाओ और शेयर्स जमा करते जाओ। अच्छा है जो भी चारों ओर निमित्त बनते हैं उन्हों को एक्स्ट्रा लिफ्ट मिल जाती है। स्व का पुरुषार्थ तो है लेकिन यह गिफ्ट में लिफ्ट मिलती है। विदेश वालों को भी सेवा की गिफ्ट मिलती रहती है। भारत वाले विदेश को भी सकाश दे रहे हैं। तो अच्छा है, अच्छे-अच्छे पाण्डव भी हैं, अच्छी-अच्छी शक्तियां भी हैं। सेना बहुत अच्छी सुन्दर है। बापदादा तो हर एक की विशेषता की दिल में महिमा करते रहते हैं। ऐसे है ना?

“बाप से, सेवा से और परिवार से मुहब्बत रखो तो मेहनत से छूट जायेंगे”

आज चारों ओर के बच्चे अपने बाप की जयन्ती मनाने के लिए आये हैं। चाहे सम्मुख बैठे हैं, चाहे आकारी रूप में बाप के सामने हैं। बाप सभी बच्चों को देख रहे हैं - एक तरफ मिलन मनाने की खुशी है दूसरे तरफ सेवा का उमंग-उत्साह है कि जल्दी से जल्दी बापदादा को प्रत्यक्ष करें। बापदादा चारों ओर के बच्चों को देखते हुए अरब-खरब गुणा मुबारक दे रहे हैं। जैसे बच्चे बाप की जयन्ती मनाने के लिए कोने-कोने से, दूर-दूर से आये हैं, बापदादा भी बच्चों का जन्म दिन मनाने आये हैं। सबसे दूर देश वाले कौन? बाप या आप? आप कहेंगे - हम बहुत दूर से आये हैं लेकिन बाप कहते हैं मैं आपसे भी दूरदेश से आया हूँ। लेकिन आपको समय लगता है, बाप को समय नहीं लगता है। आप सबको प्लैन या ट्रेन लेनी पड़ती है, बाप को सिर्फ रथ लेना पड़ता है। तो ऐसे नहीं कि सिर्फ आप बाप का मनाने आये हैं लेकिन बाप भी आदि साथी ब्राह्मण आत्मायें, जन्म के साथी बच्चों का बर्थ डे मनाने आये हैं क्योंकि बाप अकेला अवतरित नहीं होते लेकिन ब्रह्मा ब्राह्मण बच्चों के साथ दिव्य जन्म लेते अर्थात् अवतरित होते हैं। सिवाए ब्राह्मणों के यज्ञ की रचना अकेला बाप नहीं कर सकता। तो यज्ञ रचा, ब्रह्मा द्वारा ब्राह्मण रचे तब आप सब पैदा हुए हैं। तो चाहे दो वर्ष वाले हो, दो मास वाले हो लेकिन आप सभी को भी दिव्य ब्राह्मण जन्म की मुबारक है। कितना यह दिव्य जन्म श्रेष्ठ है। बाप भी हर एक दिव्य जन्मधारी ब्राह्मण आत्माओं के भाग्य का सितारा चमकता हुआ देख हर्षित होते हैं। और सदा यही गीत गाते रहते -“वाह हीरे तुल्य जीवन वाले ब्राह्मण बच्चे वाह”। वाह-वाह हो ना? बाप ने वाह-वाह बच्चे बना दिया। यह अलौकिक जन्म बाप का भी न्यारा है तो आप बच्चों का भी न्यारा और प्यारा है। यह एक ही बाप है जिसका ऐसा जन्म वा जयन्ती है जो और किसी का भी ऐसे जन्म दिन न हुआ है, न होना है। निराकार और फिर दिव्य जन्म; और सभी आत्माओं का जन्म अपने-अपने साकार शरीर में होता है लेकिन निराकार बाप का जन्म

परकाया प्रवेश से होता है। सारे कल्प में ऐसा इस विधि से किसका जन्म हुआ है? एक ही बाप का ऐसा न्यारा जन्म दिन होता है जिसको शिव जयन्ती के रूप में भगत भी मनाते आते हैं। इसलिए इस दिव्य जन्म के महत्व को आप जानते हो, भगत भी जानते नहीं हैं लेकिन जो सुना है उसी प्रमाण ऊंचे ते ऊंचा समझते हुए मनाते आते हैं। आप बच्चे सिर्फ मनाते नहीं हो लेकिन मनाने के साथ स्वयं को बाप समान बनाते भी हो। अलौकिक दिव्य जन्म के महत्व को जानते हो। और किसी भी बाप के साथ बच्चे का, साथ-साथ जन्म नहीं होता लेकिन शिव जयन्ती अर्थात् बाप के दिव्य जन्म के साथ बच्चों का भी जन्म है, इसलिए डायमण्ड जुबली मनाई ना। तो बाप के साथ बच्चों का भी दिव्य जन्म है। सिर्फ इसी जयन्ती को हीरे तुल्य जयन्ती कहते हो लेकिन हीरे तुल्य जयन्ती मनाते स्वयं भी हीरे तुल्य जीवन में आ जाते हो। इस रहस्य को सभी बच्चे अच्छी तरह से जानते भी हो और औरों को भी सुनाते रहते हो। बापदादा समाचार सुनते रहते हैं, देखते भी हैं कि बच्चे बाप के दिव्य जन्म का महत्व कितना उमंग-उत्साह से मनाते रहते हैं। बापदादा चारों ओर के सेवाधारी बच्चों को हिम्मत के रिटर्न में मदद देते रहते हैं। बच्चों की हिम्मत और बाप की मदद है।

आजकल बापदादा के पास सभी बच्चों का एक ही स्नेह का संकल्प बार-बार आता है कि अब बाप समान जल्दी से जल्दी बनना ही है। बाप भी कहते हैं हे मीठे बच्चे बनना ही है। हर एक को यह दृढ़ निश्चय है और भी अन्डरलाइन कर दो कि हम नहीं बनेंगे तो और कौन बनेगा। हम ही थे, हम ही हैं और हम ही हर कल्प में बनते रहेंगे। यह पक्का निश्चय है ना?

डबल विदेशी भी शिव जयन्ती मनाने आये हैं? अच्छा है, हाथ उठाओ डबल विदेशी। बापदादा देख रहे हैं कि डबल विदेशियों को सबसे ज्यादा यही उमंग-उत्साह है कि कोई भी विश्व का कोना रह नहीं जाये। भारत को तो काफी समय सेवा के लिए मिला है और भारत ने भी गांव-गांव में सन्देश दिया है। लेकिन डबल विदेशियों को भारत से सेवा का समय कम मिला है। फिर भी उमंग-उत्साह के कारण बापदादा के सामने सेवा का सबूत अच्छा लाया है और लाते रहेंगे। भारत में जो वर्तमान समय वर्गीकरण की सेवायें आरम्भ हुई हैं, उसके कारण भी सभी वर्गों को सन्देश मिलना सहज हो गया है क्योंकि हर एक

वर्ग अपने वर्ग में आगे बढ़ना चाहते हैं तो यह वर्गीकरण की इन्वेन्शन अच्छी है। इससे भारत की सेवा में भी विशेष आत्माओं का आना अच्छी रौनक लग जाती है। अच्छा लगता है ना! वर्गीकरण की सेवा अच्छी लगती है? विदेश वाले भी अपने अच्छे-अच्छे ग्रुप ले आते हैं, रिट्रीट कराते हैं, तरीका अच्छा रखा है। जैसे भारत में वर्गीकरण से सेवा में चांस मिला है, वैसे इन्हों की भी यह विधि बहुत अच्छी है। बापदादा को दोनों तरफ की सेवा पसन्द है, अच्छा है। जगदीश बच्चे ने इन्वेन्शन अच्छी निकाली है और विदेश में यह रिट्रीट, डॉयलाग किसने शुरु किया? (सभी ने मिलजुलकर किया) भारत में भी मिलजुलकर तो किया है फिर भी निमित्त बने हैं। अच्छा है हर एक को अपने हमजिन्स के संगठन में अच्छा लगता है। तो दोनों तरफ की सेवा में अनेक आत्माओं को समीप लाने का चांस मिलता है। रिजल्ट अच्छी लगती है ना? रिट्रीट की रिजल्ट अच्छी रही? और वर्गीकरण की भी रिजल्ट अच्छी है, देश-विदेश कोई न कोई नई इन्वेन्शन करते रहते हैं और करते रहेंगे। चाहे भारत में, चाहे विदेश में सेवा का उमंग अच्छा है। बापदादा देखते हैं जो सच्ची दिल से नि:स्वार्थ सेवा में आगे बढ़ते जाते हैं, उन्हों के खाते में पुण्य का खाता बहुत अच्छा जमा होता जाता है। कई बच्चों का एक है अपने पुरुषार्थ के प्रालब्ध का खाता, दूसरा है सन्तुष्ट रह सन्तुष्ट करने से दुआओं का खाता और तीसरा है यथार्थ योगयुक्त, युक्तियुक्त सेवा के रिटर्न में पुण्य का खाता जमा होता है। यह तीनों खाते बापदादा हर एक का देखते रहते हैं। अगर कोई का तीनों खाते में जमा होता है तो उसकी निशानी है - वह सदा सहज पुरुषार्थी अपने को भी अनुभव करते हैं और दूसरों को भी उस आत्मा से सहज पुरुषार्थ की स्वत: ही प्रेरणा मिलती है। वह सहज पुरुषार्थ का सिम्बल है। मेहनत नहीं करनी पड़ती, बाप से, सेवा से और सर्व परिवार से मुहब्बत है तो यह तीनों प्रकार की मुहब्बत मेहनत से छुड़ा देती है।

बापदादा सभी बच्चों से यही श्रेष्ठ आशा रखते हैं कि सभी बच्चे सहज पुरुषार्थी सदा रहो। 63 जन्म भक्ति में, उलझनों में भटकने की मेहनत की है, अब यह एक ही जन्म है मेहनत से छूटने का। अगर बहुतकाल से मेहनत करते रहेंगे तो यह संगमयुग का वरदान मुहब्बत से सहज पुरुषार्थी का कब लेंगे? युग समाप्त, वरदान भी समाप्त। तो सदा इस वरदान को जल्दी से जल्दी ले लो।

कोई भी बड़े ते बड़ा कार्य हो, कोई भी बड़े ते बड़ी समस्या हो लेकिन हर कार्य, हर समस्या ऐसे पार हो जैसे आप लोग कहते हो माखन से बाल निकल गया। कई बच्चों का थोड़ा-थोड़ा बापदादा खेल देखते हैं, हर्षित भी होते हैं और बच्चों को देखकर रहम भी आता है। जब कोई समस्या या कोई बड़ा कार्य भी सामने आता है तो कभी-कभी बच्चों के चेहरे पर थोड़ा सा समस्या वा कार्य की लहर दिखाई देती है। थोड़ा सा चेहरा बदल जाता है। फिर अगर कोई कहता है क्या हुआ? तो कहते हैं काम ही बहुत है ना! विघ्न-विनाशक के आगे विघ्न न आवे तो विघ्न-विनाशक टाइटल कैसे गाया जायेगा? थोड़ा सा चेहरे पर थकावट या थोड़ा सा मूड बदलने के चिन्ह नहीं आने चाहिए। क्यों? आपके जड़ चित्र जो आधाकल्प पूजे जायेंगे उसमें कभी थोड़ा सा भी थकावट या मूड बदलने के चिन्ह दिखाई देते हैं क्या? जब आपके जड़ चित्र सदा मुस्कराते रहते हैं तो वह किसके चित्र हैं? आपके ही हैं ना? तो चैतन्य का ही यादगार चित्र है इसलिए थोड़ा सा भी थकावट वा जिसको कहते हो चिड़चिड़ापन, वह नहीं आना चाहिए। सदा मुस्कराता चेहरा बापदादा को और सभी को भी पसन्द आता है। अगर कोई चिड़चिड़ेपन में है तो उसके आगे जायेंगे? सोचेंगे अभी कहें या नहीं कहें। तो आपके जड़ चित्रों के पास तो भगत बहुत उमंग से आते हैं और चैतन्य में कोई भारी हो जाए तो अच्छा लगता है? अभी बापदादा सभी बच्चों के चेहरे पर सदा फरिश्ता रूप, वरदानी रूप, दाता रूप, रहमदिल, अथक, सहज योगी वा सहज पुरुषार्थी का रूप देखने चाहते हैं। यह नहीं कहो बात ही ऐसी थी ना। कैसी भी बात हो लेकिन रूप मुस्कराता हुआ, शीतल, गम्भीर और रमणीकता दोनों के बैलेन्स का हो। कोई भी अचानक आ जाए और आप समस्या के कारण वा कार्य के कारण सहज पुरुषार्थी रूप में नहीं हो तो वह क्या देखेगा? आपका चित्र तो वही ले जायेगा। कोई भी समय, कोई भी किसी को भी चाहे एक मास का हो, दो मास का हो, अचानक भी आपके फेस का चित्र निकाले तो ऐसा ही चित्र हो जो सुनाया। दाता बनो। लेवता नहीं, दाता। कोई कुछ भी दे, अच्छा दे वा बुरा भी दे लेकिन आप बड़े ते बड़े बाप के बच्चे बड़ी दिल वाले हो अगर बुरा भी दे दिया तो बड़ी दिल से बुरे को अपने में स्वीकार न कर दाता बन आप उसको सहयोग दो, स्नेह दो, शक्ति दो। कोई न कोई गुण अपने स्थिति द्वारा गिफ्ट में दे दो। इतनी बड़ी दिल वाले बड़े ते बड़े बाप के

बच्चे हो। रहम करो। दिल में उस आत्मा के प्रति और एकस्ट्रा स्नेह इमर्ज करो। जिस स्नेह की शक्ति से वह स्वयं परिवर्तित हो जाए। ऐसे बड़ी दिल वाले हो या छोटी दिल है? समाने की शक्ति है? समा लो। सागर में कितना किचड़ा डालते हैं, डालने वाले को, वह किचड़े के बदले किचड़ा नहीं देता। आप तो ज्ञान के सागर, शक्तियों के सागर के बच्चे हो, मास्टर हो।

तो सुना बापदादा क्या देखने चाहते हैं? मैजारिटी बच्चों ने लक्ष्य रखा है कि इस वर्ष में परिवर्तन करना ही है। करेंगे, सोचेंगे नहीं, करना ही है। करना ही है या वहाँ जाकर सोचेंगे? जो समझते हैं करना ही है वह एक हाथ की ताली बजाओ। (सभी ने हाथ हिलाया) बहुत अच्छा। सिर्फ यह हाथ नहीं उठाना, मन से दृढ़ संकल्प का हाथ उठाना। यह हाथ तो सहज है। मन से दृढ़ संकल्प का हाथ सदा सफलता स्वरूप बनाता है। जो सोचा वह होना ही है। सोचेंगे तो पॉजिटिव ना! निगेटिव तो सोचना नहीं है। निगेटिव सोचने का सदा के लिए रास्ता बन्द। बन्द करना आता है या खुल जाता है? जैसे अभी तूफान लगा ना तो दरवाजे आपेही खुल गये, ऐसे तो नहीं होता? आप समझते हो बन्द करके आ गये, लेकिन तूफान खोल दे, ऐसा ढीला नहीं करना। अच्छा।

डबल विदेशियों का उत्सव अच्छा हुआ ना! (10 वर्षों से अधिक समय से ज्ञान में चलने वाले करीब 400 डबल विदेशी भाई-बहिनों का सम्मान-समारोह मनाया गया) अच्छा लगा? जिसने मनाया और अच्छा लगा वह हाथ उठाओ। पाण्डव भी हैं। इसका महत्व क्या है? मनाने का महत्व क्या है? मनाना अर्थात् बनना। सदा ऐसे ताजधारी, स्व पुरुषार्थ और सेवा की जिम्मेवारी क्या कहें, मौज ही कहें, सेवा के मौज मनाने का ताज सदा ही पड़ा रहे। और गोल्डन चुन्नी भी सभी ने पहनी ना! तो गोल्डन चुन्नी किसलिए पहनाई? सदा गोल्डन एजेड स्थिति, सिल्वर नहीं, गोल्डन। और फिर दो-दो हार भी पहने थे। तो दो हार कौन से पहनेंगे? एक तो सदा बाप के गले का हार। सदा, कभी गले से निकालना नहीं, गले में ही पिरोये रहें और दूसरा सदा सेवा द्वारा औरों को भी बाप के गले का हार बनाना, यह डबल हार है। तो बहुत अच्छा मनाने वाले को भी लगा और देखने वाले को भी लगा। तो इस उत्सव मनाने का, सदा के उत्सव का रहस्य बताया। और साथ-साथ यह भी मनाना अर्थात् और उमंग-उत्साह बढ़ाना। सभी के अनुभव बापदादा ने तो देख लिए। अच्छे अनुभव रहे। खुशी

और नशा सभी के चेहरों में दिखाई दे रहा था। बस ऐसा ही अपना शक्ति-शाली, मुस्कराता हुआ रमणीक और गम्भीर स्वरूप सदा इमर्ज रखते चलो क्योंकि आजकल के समय के हालतों के प्रमाण ज्यादा सुनने वाले, समझने वाले कम हैं, देखकर अनुभव करने वाले ज्यादा हैं। आपकी सूरत में बाप का परिचय, सुनाने के बजाए दिखाई दे। तो अच्छा किया। बापदादा भी देख-देख हर्षित हो रहे हैं। इस वर्ष को वा इस सीजन को विशेष उत्सव की सीजन मनाई है। हर समय एक जैसा नहीं होता है।

(ड्रिल) सभी में रूलिंग पावर है? कर्मेन्द्रियों के ऊपर जब चाहो तब रूल कर सकते हो? स्व-राज्य अधिकारी बने हो? जो स्व-राज्य अधिकारी हैं वही विश्व के राज्य अधिकारी बनेंगे। जब चाहो, कैसा भी वातावरण हो लेकिन अगर मन-बुद्धि को ऑर्डर दो स्टाप, तो हो सकता है या टाइम लगेगा? यह अभ्यास हर एक को सारे दिन में बीच-बीच में करना आवश्यक है। और कोशिश करो जिस समय मन-बुद्धि बहुत व्यस्त है, ऐसे समय पर भी अगर एक सेकण्ड के लिए स्टाप करने चाहो तो हो सकता है? तो सोचो स्टाप और स्टाप होने में 3 मिनट, 5 मिनट लग जाएं, यह अभ्यास अन्त में बहुत काम में आयेगा। इसी आधार पर पास विद आनर बन सकेंगे। अच्छा।

सदा दिल के उमंग-उत्साह का उत्सव मनाने वाले स्नेही आत्मायें, सदा हीरे तुल्य जीवन का अनुभव करने वाले, अनुभव के अथॉरिटी वाले विशेष आत्मायें, सदा अपने सूरत से बाप का परिचय देने वाले बाप को प्रत्यक्ष करने वाले सेवाधारी आत्मायें, सदा गम्भीर और रमणीक दोनों का साथ में बैलेन्स रखने वाले सबके ब्लैसिंग के अधिकारी आत्मायें, ऐसे चारों ओर के देश-विदेश के बच्चों को शिव रात्रि की मुबारक, मुबारक हो। साथ-साथ बापदादा का दिलाराम का दिल व जान सिक व प्रेम से यादप्यार और नमस्ते।

दादियों से

सदा एक जैसा खेल अच्छा भी नहीं लगता है। चेंज होना चाहिए। तो ड्रामा के खेल में भिन्न-भिन्न खेल दिखाई देते रहते हैं। अच्छा है। सभी संकल्प पूरे होते जाते हैं ना। जितना न्यारे और प्यारे बन संकल्प करते हैं तो वह सभी संकल्प पूरे हो जाते हैं। ब्राह्मणों का हर एक संकल्प सफलता के बीज से सम्पन्न

होता है। जब बीज ही सफलता का है तो फल सफलता का ही निकलता है।

कनार्टक की टीचर्स से:- बहुत अच्छा सेवा का पार्ट मिला। सेवा करना अर्थात् अपने एकाउन्ट में दुआयें इक्ट्ठी करना। तो दुआयें बहुत इक्ट्ठी की ना। अच्छा किया। जो पार्ट अच्छा बजाते हैं उनकी ड्रामा में नूंध हो जाती है। दीदी दादियों के पास भी नाम नोट हो जाता है और बार-बार निमन्त्रण मिलता है। तो आपने सेवा की अर्थात् बार-बार अपना नाम नोट करा दिया। कितनी आत्माओं से सम्बन्ध-सम्पर्क हुआ, अपनी फैमिली को देखा, मनाया। और आगे भी सेवा में सदा एवररेडी रहने का पार्ट मिला। पार्ट अच्छालगा? बहुत अच्छा। कनार्टक में संख्या तो बहुत है और एक हजार को चांस मिला, यह भी भाग्य है। सेवा मिलना भाग्य की निशानी है। तो आप सभी ने अपने भाग्य की लकीर, बार-बार आने की खींच ली। जब आर्डर मिलेगा आ सकते हो। अच्छा है।

(बापदादा ने डायमण्ड हाल की विशाल स्टेज पर खड़े होकर अपने हस्तों से झण्डा फहराया तथा सभी बच्चों को शिव जयन्ती की बधाई दी)

सभी को स्नेह से बाप का झण्डा लहराने की बहुत-बहुत मुबारक हो, बापदादा देख रहे हैं कि सभी के दिल में बाप का झण्डा लहरा रहा है। हर एक के दिल में बाप है और बाप की दिल में हर एक बच्चा है। आप से पूछे कोई आप कहाँ रहते हो? तो क्या कहेंगे? भगवान की दिल में रहने वाले। सभी बाप की दिल में रहने वाले हो, उन्हों के दिल में क्या है? बाप के नाम का झण्डा। यह तो यादगार झण्डा है लेकिन बाप के नाम का झण्डा जल्दी से जल्दी विश्व में लहरायेगा। वह भी दिन दूर नहीं है। अवश्य चाहे अंजान बच्चे हैं, चाहे जानने वाले बच्चे हैं, सभी को बाप का परिचय मिलना ही है। और सबके मुख से आ गया, बाप आ गया, यह आवाज निकलना ही है। उसके लिए सभी तैयारी कर रहे हैं। और निश्चित है, होना ही है। होना ही है। होना ही है। ओम् शान्ति।

13-3-98

होली शब्द के अर्थ स्वरूप में स्थित होना अर्थात् बाप समान बनना

आज बापदादा अपने होलीएस्ट, हाइएस्ट और रिचेस्ट इन दी वर्ल्ड बच्चों को चारों तरफ देख रहे हैं। चाहे साकार में सम्मुख हैं, चाहे दूर बैठे दिल से समीप हैं - चारों ओर के बच्चों को देख हर्षित होते रहते हैं। हर एक बच्चा ऐसा होलीएस्ट बनता है जो सारे कल्प में और कोई भी ऐसा महान पवित्र आत्मा न बना है, न बन सकते हैं। समय प्रति समय धर्म आत्मायें, महान आत्मायें, पवित्र रहे हैं लेकिन उन्हों की पवित्रता और आपकी पवित्रता में अन्तर है। इस समय आप पवित्र बनते हो, इसी पवित्रता की प्राप्ति वा प्रालब्ध भविष्य अनेक जन्म तक तन-मन-धन, सम्बन्ध, सम्पर्क और साथ में आत्मा भी पवित्र है। शरीर भी पवित्र हो और आत्मा भी पवित्र हो – ऐसी पवित्रता आप आत्मायें प्राप्त करती हो। मन-वचन-कर्म तीनों ही पवित्र बनने से ऐसी प्रालब्ध प्राप्त होती है। तो ऐसे होलीएस्ट आत्मायें हो। अपने को ऐसे श्रेष्ठ होलीएस्ट आत्मायें समझते हो? अभी बने हैं वा बन रहे हैं? बनना सहज है या थोड़ा-थोड़ा मुश्किल है? लेकिन कल्प पहले भी बने हैं और अब भी बनना ही है। पक्का या थोड़ा-थोड़ा चलता है? नहीं। स्वप्न मात्र भी अपवित्रता समाप्त होनी ही है, इतना निश्चय है ना कि आज बन रहे हैं और कल बन ही जायेंगे। तो होलीएस्ट भी हैं और हाइएस्ट भी हैं।

ऊंचे ते ऊंचे बाप के बच्चे ऊंचे ते ऊंचे हैं। हाइएस्ट बनते हो तब पूजे जाते हो। चाहे आजकल की हाइएस्ट आत्मायें, सकामी राजे थे, अब तो नहीं हैं। चाहे प्रेजीडेंट हो, चाहे प्राइममिनिस्टर हो लेकिन वह पूज्य नहीं बनते हैं। आप पूज्य बनने वाली आत्माओं के आगे पुजारी बन नमन और पूजन करते हैं। अभी भी स्व-राज्य अधिकारी बनते हो और भविष्य में भी राजाओं के राजे बनते हो। तो ऐसा हाइएस्ट पद प्राप्त करते हो। साथ में रिचेस्ट इन दी वर्ल्ड हो। आपका टाइटल ही है पदमा-पदम-पति। और ऐसा खजाना है जो अरबपति, खरबपति, अरब-खरब से भी ऐसा खजाना प्राप्त नहीं कर सकते। आप श्रेष्ठ आत्माओं का

बाप द्वारा ऐसा भाग्य बना रहे हैं जो अनुभव करते हो और वर्णन भी करते हो कि हमारे कदम में पदम हैं। कदम में पदम हैं या सौ हैं, हजार हैं? ऐसा कोई बड़े से बड़ा मिल्यूनर भी इतनी कमाई नहीं कर सकता। कदम में कितना टाइम लगेगा? कदम उठाओ.कितना समय लगता है? सेकण्ड। चलो दो सेकण्ड कह दो। अगर दो सेकण्ड भी कहो तो दो सेकण्ड में पदम, तो सारे दिन में कितने पदम हुए? हिसाब करो। ऐसा कोई मिल्यूनर है जो एक दिन में इतनी कमाई करे? ऐसा कोई होगा? तो रिचेस्ट इन दी वर्ल्ड हो ना! और आपका ऐसा खजाना है जो आग भी नहीं जला सकती, पानी डुबो नहीं सकता, चोर लूट नहीं सकता, राजा भी खा नहीं सकते। ऐसा खजाना इस पुरुषोत्तम संगमयुग में ही प्राप्त करते हो। तो अपना ऐसा स्वमान स्मृति में रहता है? हाँ या ना? पीछे वाले हाथ हिला रहे हैं। पीछे वाले आराम से बैठे हो ना? रिचेस्ट इन दी वर्ल्ड हो तो आराम ही आराम है। बड़े से बड़ी युनिवर्सिटी में भी ऐसे कोचों पर पढ़ाई पढ़ने के लिए नहीं बैठते हैं, लेकिन आप बेगर टू प्रिन्स हो। बेगर भी हो और प्रिन्स भी हो। सर्व त्याग माना बेगर। सर्व प्राप्तियां अर्थात् प्रिन्स। बिना त्याग के इतना बड़ा भाग्य नहीं मिलता है। त्याग का ही भाग्य मिला है। तन-मन-धन, सम्बन्ध सभी त्याग किया अर्थात् परिवर्तन किया। तन मेरा के बजाए तेरा किया। मन, धन, सम्बन्ध एक शब्द परिवर्तन होने से मेरे के बजाए तेरा किया, है एक शब्द का परिवर्तन लेकिन इसी त्याग से भाग्य के अधिकारी बन गये। तो भाग्य के आगे यह त्याग क्या है? छोटी बात है या थोड़ी बड़ी भी है? कभी-कभी बड़ी हो जाती है। तेरा कहना माना बड़ी बात को छोटा करना और मेरा कहना माना छोटी बात को बड़ी करना। क्या भी हो जाए, 100 हिमालय से भी बड़ी समस्या आ जाए लेकिन तेरा कहना और पहाड़ को रूई बनाना, राई भी नहीं, रुई। जो रूई सेकण्ड में उड़ जाए। सिर्फ तेरा कहना नहीं मानना, सिर्फ मानना भी नहीं चलना। एक शब्द का परिवर्तन सहज ही है ना! और फ़ायदा ही है, नुकसान तो है नहीं। तेरा कहने से सारा बोझ बाप को दे दिया। तेरा तुम ही जानों। आप सिर्फ निमित्त-मात्र हो। इसमें फ़ायदा है ना? न्यारे औरपरमात्मा के प्यारे बन गये। जो परमात्मा के प्यारे बनते हैं वह विश्व के प्यारे बनते हैं। सिर्फ भविष्य

प्राप्ति नहीं है, वर्तमान भी है। एक सेकण्ड में अनुभव किया भी है और करके देखो। कोई भी बात आ जाए तेरा कह दो, मान जाओ और तेरा समझकर करो तो देखो बोझ हल्का होता है या नहीं होता है। अनुभव है ना? सभी अनुभवी बैठे हो ना! सिर्फ क्या होता है, मेरा मेरा कहने की बहुत आदत है ना, 63 जन्मों की आदत है तो तेरा तेरा कहकर फिर मेरा कह देते हो और मेरा माना गये, फिर वह बात तो एक घण्टे में, दो घण्टे में, एक दिन में खत्म हो जाती है लेकिन जो तेरे से मेरा किया उसका फल लम्बा चलता है। बात आधे घण्टे की होगी लेकिन चाहे पश्चाताप के रूप में, चाहे परिवर्तन करने के लक्ष्य से, वह बात बार-बार स्मृति में आती रहती है। इसलिए बाप सभी बच्चों को कहते हैं अगर ''मेरा शब्द'' से प्यार है, आदत है, संस्कार है, कहना ही है तो मेरा बाबा कहो। आदत से मजबूर होते हैं ना। तो जब भी मेरा-मेरा आवे तो मेरा बाबा कहकर खत्म कर दो। अनेक मेरे को एक मेरा बाबा में समा दो।

रशिया वाले एक डॉल लाते हैं ना, तो डॉल में डॉल..... एक डॉल हो जाती है। ऐसे आप भी एक मेरा बाबा में अनेक मेरा समा दो, खत्म। यह कर सकते हो? करते हो लेकिन कभी-कभी मेरे के विस्तार में चले जाते हो। अभी कभी-कभी है, सदा मेरा, तेरा हो जाए उसमें नम्बरवार हैं। नम्बरवन भी हैं, ए वन भी हैं लेकिन फिर भी पीछे के नम्बर भी हैं। तो होली मनाने आये हो ना? तो यही मन्त्र याद करो मैं बाप की हो ली, बन गये। परमात्म परिवार की हो ली अर्थात् हो गई। तो ऐसी होली मनाई? अभी क्या करना है? अभी जलाना है या जला दिया? इसमें हाँ नहीं कहते, सोच रहे हैं?

देखो, भक्ति मार्ग में जो भी उत्सव मनाते हैं, यादगार हैं लेकिन कुछ-कुछ अर्थ से बने हुए हैं। पहले जलाना है फिर मनाना है। पहले मनाना फिर जलाना नहीं। पहले भस्म करो, अशुद्धि को, कमजोरी को, बुराई को जलाओ फिर मनाओ। तो आपने तो बहुत पहले जला दिया ना या अभी भी थोड़ा सा दुपट्टे का कोना रह गया है? पाण्डवों के बुशर्ट या जो चोला पहनते हैं उसका कुछ कोना रह गया हो? साड़ी का कोना तो नहीं रह गया? वास्तव में देखो आत्मिक मनाना और उस मनाने से शक्ति, अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करना, वह तभी

कर सकते हैं जब पहले जलाया है। मनोरंजन के रूप से मनाना वह अलग चीज़ है। वह तो संगमयुग है मौजों का युग, इसलिए मनोरंजन की रीति से भी मनाते हो और मनाओ, खूब मनाओ। लेकिन परमात्म रंग में रंग जाना अर्थात् बाप समान बन जाना। यह है रंग में रंग जाना। जैसे बाप अशरीरी है, अव्यक्त है वैसे अशरीरी पन का अनुभव करना वा अव्यक्त फरिश्ते पन का अनुभव करना - यह है रंग में रंग जाना। कर्म करो लेकिन अव्यक्त फरिश्ता बनके काम करो। अशरीरीपन की स्थिति का जब चाहो तब अनुभव करो। ऐसे मन और बुद्धि आपके कन्ट्रोल में हो। आर्डर करो - अशरीरी बन जाओ। आर्डर किया और हुआ। फरिश्ते बन जायें। जैसे मन को जहाँ जिस स्थिति में स्थित करने चाहो वहाँ सेकण्ड में स्थित हो जाओ। ऐसे नहीं ज्यादा टाइम नहीं लगा, 5 सेकण्ड लग गये, 2 सेकण्ड लग गये। आर्डर में तो नहीं हुआ, कन्ट्रोल में तो नहीं रहा। कैसी भी परिस्थिति हो, हलचल हो लेकिन हलचल में अचल हो जाओ। ऐसे कन्ट्रोलिंग पावर है? या सोचते - सोचते अशरीरी हो जाऊं, अशरीरी हो जाऊं, उसमें ही टाइम चला जायेगा? कई बच्चे बहुत भिन्न-भिन्न पोज़ बदलते रहते, बाप देखते रहते। सोचते हैं अशरीरी बनें फिर सोचते हैं अशरीरी माना आत्मा रूप में स्थित होना, हाँ मैं हूँ तो आत्मा, शरीर तो हूँ ही नहीं, आत्मा ही हूँ। मैं आई ही आत्मा थी, बनना भी आत्मा है ... अभी इस सोच में अशरीरी हुए या अशरीरी बनने की युद्ध की? आपने मन को आर्डर किया सेकण्ड में अशरीरी हो जाओ, यह तो नहीं कहा सोचो - अशरीरी क्या है? कब बनेंगे, कैसे बनेंगे? आर्डर तो नहीं माना ना! कन्ट्रोलिंग पावर तो नहीं हुई ना! अभी समय प्रमाण इसी प्रैक्टिस की आवश्यकता है। अगर कन्ट्रोलिंग पावर नहीं है तो कई परिस्थितियां हलचल में ले आ सकती हैं। इसलिए एक होली शब्द ही याद करो तो भी ठीक है। होली - बीती सो बीती और हो ली बाप की बन गई। और क्या बन गई? होली अर्थात् पवित्र आत्मा बन गई। एक शब्द होली याद करो तो एक होली शब्द के तीन अर्थ यूज़ करो, वर्णन नहीं करो, हाँ होली माना बीती सो बीती। हाँ बीती सो बीती है - ऐसे नहीं सोचते रहो, वर्णन करते रहो, नहीं। अर्थ स्वरूप में स्थित हो जाओ। सोचा और हुआ। ऐसे नहीं सोचा तो सोच

में ही पड़े रहो। नहीं। जो सोचा वह हो गया, बन गये, स्थित हो गये।

(कल १० वर्षों से पुराने डबल विदेशी भाई-बहिनों की सेरीमनी मनाई गई)

जिन्होंने सेरीमनी मनाई, तो ऐसी सेरीमनी मनाई ना? होली मनाई ना? बापदादा भी हर न्यारे और प्यारे दृश्य देख हर्षित होते हैं। सारा परिवार भी खुश होते हैं। अपना फोटो अच्छी तरह से देखा? अच्छा लगा ना? सिर्फ फेस देखा वा मन की स्थिति भी देखी? इस आइने में तो शक्ल देखी, बहुत अच्छा। अच्छा किया। लेकिन नॉलेज के आइने में अपनी स्थिति भी देखी? अच्छा है बापदादा भी 10-15 वर्ष नहीं देखते, लेकिन इतना समय चलते रहे हैं, अविनाशी रहे हैं, अमर रहे हैं, इसको देख करके खुश होते हैं। कमाल तो की है। कल्चर बदला, देश बदला, रसम-रिवाज बदले, संस्कार डबल फारेनर्स के बदले, भारतवासी हो गये। अभी क्या कहेंगे? मधुबन निवासी हो या अमेरिका, लण्डन ... कहाँ के हो? मधुबन के हो? (मधुबन निवासी) अमेरिका, रशिया याद नहीं है? मधुबन आपकी परमानेंट एड्रेस है। और अमेरिका, रशिया, अफ्रीका, आस्ट्रेलिया, जपान... कितने नाम हैं, यह आपके सर्विस स्थान हैं। रहने का परमानेंट एड्रेस मधुबन है, बाकी सेवा के लिए भिन्न नाम, भिन्न रूप, भिन्न भाषा, भिन्न कल्चर में गये हो। नहीं तो देखो अगर आप वहाँ जन्म नहीं लेते तो भारत की बहनों को कितनी भाषायें सीखनी पड़ती। कितनी भाषायें सीखती? तो आप सभी सेवा के लिए गये हो। और बापदादा ने देखा है कि डबल फारेनर्स को सेवास्थान खोलने का शौक भी अच्छा है। फ्लैट मिला, सेन्टर खोला। अच्छा है। तब तो देखो इतने देशों में सेवाकेन्द्र खुले हैं।

तो बापदादा डबल विदेशियों के इस उमंग-उत्साह के लिए बहुत-बहुत-बहुत मुबारक देते हैं। थोड़े समय में सेवा अच्छी फैलाई है। तो फास्ट हुए ना! विदेश को टोटल कितने वर्ष हुए? लण्डन में स्थापना हुए कितने वर्ष हुए? (27 वर्ष)। भारत में 62 वर्ष और फारेन के 27 वर्ष। तो बापदादा सेवा के वृद्धि को देख खुश हैं। अभी सिर्फ एक सेवा रही हुई है। ऐसे बापदादा छोड़ते नहीं हैं, हो गई। नहीं। और रही हुई हैं।

बापदादा सभी डबल विदेशियों को यही भविष्य के लिए इशारा देते हैं कि

अभी अखबारों की सेवा ज्यादा करो। फारेन की अखबारें, भारत की सेवा करेंगी। अभी थोड़ी-थोड़ी कारणे अकारणें शुरू तो हुई हैं लेकिन जैसे शुरू आदि में स्थापना हुई तो फारेन की अखबारों में समाचार पढ़ा। अभी फिर फारेन की अखबारों में ऐसी बातें आवें जो भारतवासियों की आंख खुले। भारत की अखबारों में तो पड़ना शुरू हो गया है लेकिन फारेन की अखबारें भी भारत को जगायेंगी और दूसरा ऐसा वर्ल्ड के रेडियों में आये, जैसे आप लोगों ने ब्रह्माकुमारीज़ का कम्प्युटर में डाला है ना। तो कोई भी जो चाहे वह देख सकता है। डाला तो बहुत अच्छा है लेकिन उसकी सूचना किसको पता नहीं है, भारत में फ़ायदा ले सकते हैं लेकिन एडवरटाइज नहीं हुई है। इन्वेन्शन अच्छी की है, अच्छा है डबल फारेन में प्रकृति के साधनों का लाभ अच्छा लेते हैं। भारत में यह बी.बी.सी. का सब सुनते हैं, उसमें आवे, फिर देखो कितना आवाज आता है। करो कमाल। पहचान निकालो, लोकल टी.वी. और रेडियों में तो आपका आता ही है, लेकिन ऐसा आवाज फैले जो न सुनने वाले भी सुन लें। अभी हर वर्ष कुछ नया तो करते हो ना, प्लैन तो बनाते हो ना? मीटिंग भी बहुत करते हो। करो, खूब करो। हिम्मत बच्चों की मदद बाप की तो है ही। सिर्फ कोई निमित्त बनें। हर कार्य के लिए कोई न कोई निमित्त बन जाता है और हो भी जाता है क्योंकि ड्रामा में होना नूंधा हुआ है। सिर्फ समय पर कोई निमित्त बन जाता है। तो इस कार्य के लिए भी कोई निमित्त बनना ही है।

(बापदादा ने ड्रिल कराई)

अभी समय के प्रमाण आप हर निमित्त बनी हुई, सदा याद और सेवा में रहने वाली आत्माओं को स्व परिवर्तन द्वारा विश्व परिवर्तन का वायब्रेशन पावरफुल और तीव्रगति का बढ़ाना है। चारों ओर मन का दु:ख और अशान्ति, मन की परेशानियां बहुत तीव्रगति से बढ़ रही हैं। बापदादा को विश्व की आत्माओं के ऊपर रहम आता है। तो जितना तीव्रगति से दु:ख ही लहर बढ़ रही है उतना ही आप सुख दाता के बच्चे अपने मन्सा शक्ति से, मन्सा सेवा व सकाश की सेवा से, वृत्ति से चारों ओर सुख की अंचली का अनुभव कराओ। बाप को तो पुकारते ही हैं लेकिन आप पूज्य देव आत्माओं को भी किसी न

किसी रूप से पुकारते रहते हैं। तो हे देव आत्मायें, पूज्य आत्मायें अपने भक्त आत्माओं को सकाश दो। साइन्स वाले भी सोचते हैं ऐसी इन्वेन्शन निकालें जो दु:ख समाप्त हो जाए, साधन सुख के साथ दु:ख भी देता है लेकिन दु:ख न हो, सिर्फ सुख की प्राप्ति हो उसका सोचते जरूर हैं। लेकिन स्वयं की आत्मा में अविनाशी सुख का अनुभव नहीं है तो दूसरों को कैसे दे सकते हैं। लेकिन आप सबके पास सुख का, शान्ति का, नि:स्वार्थ सच्चे प्यार का स्टॉक जमा है। जमा है या जितना इक्ट्ठा करते हो उतना खर्च हो जाता है? यह भी चेक करो जमा तो होता है लेकिन जमा के साथ-साथ खर्च भी तो नहीं हो जाता? ज्ञान के खजाने तो खर्च करने से बढ़ते हैं, कम नहीं होते। अगर बार-बार अपने ही स्वभाव-संस्कार वा माया की तरफ से आई हुई समस्याओं में अपनी शक्तियां यूज़ करते हो तो जमा का खाता कम होता है। तो चेक करो - जमा किया लेकिन खर्च भी किया बाकी एकाउन्ट कितना रहा? कमाया और खाया, ऐसा तो नहीं है? दो दिन कमाया और एक दिन इतना ही गँवाया जो जमा किया हुआ भी खर्च करना पड़ा। ऐसा एकाउन्ट तो नहीं है? ऐसे ही कमाया और खाया वा अपने प्रति ही लगाकर खत्म किया तो 21 जन्म के लिए जमा क्या किया? जमा की तो खुशी होती है लेकिन खर्च का हिसाब नहीं निकाला तो समय पर धोखा मिल जायेगा। जमा का खाता भी देखो लेकिन साथ-साथ अपने प्रति खर्च कितना किया। दूसरे को कोई गुण दिया, शक्ति दी, ज्ञान का खजाना दिया वह खर्च नहीं है, वह जमा के खाते में जमा होता है लेकिन अपने प्रति समय प्रति समय खर्च किया तो खाता खाली हो जाता है। इसीलिए अच्छे विशाल बुद्धि से चेकिंग करो। जमा का खाता बहुत लम्बा चौड़ा चाहिए। है सहज अगर हर कदम में पदम जमा करते जाओ तो जमा का एकाउण्ट बहुत बड़ा हो जायेगा। तो चेक करो कि हर कर्म व कदम ब्रह्मा बाप समान रहा? अनुभवी हो, जब कोई अच्छा कर्म करते हो तो कर्म का फल उसी समय प्रत्यक्ष रूप में खुशी, शक्ति और सफलता के कारण डबल लाइट रहते हो क्योंकि याद रहता है बाप के साथ से कर्म किया। और अगर अभी कोई विकर्म होता है तो उसका पश्चाताप बहुत लम्बा है। वैसेअभी विकर्म तो कोई होना नहीं चाहिए, वह तो टाइम अभी बीत

गया, लेकिनअभी कोई व्यर्थ संकल्प वा व्यर्थ कर्म, व्यर्थ बोल, व्यर्थ संबंध-सम्पर्क भी न हो। क्योंकि व्यर्थ संबंध-सम्पर्क भी बहुत धोखा देता है। जैसा संग वैसा रंग लग जाता है। कई बच्चे बड़े चतुर हैं कहते हैं हम तो संग नहीं करते, लेकिन वह मेरे को नहीं छोड़ते, मैं नहीं करती, वह नहीं छोड़ते। तो क्या किनारा करना नहीं आता? अगर कोई बुरी चीज़ दे तो आप लेते क्यों हो! लेने वाला नहीं लेगा तो देने वाला क्या करेगा? इसीलिए व्यर्थ सम्बन्ध और सम्पर्क भी एकाउण्ट खाली कर देता है। और उसी समय अन्दर दिल में आता भी है, दिल खाता है - यह करना नहीं चाहिए। करना नहीं चाहिए फिर भी कर लेते हैं। सुनना नहीं चाहिए लेकिन सुना दिया तो क्या करूं! लेकिन अगर पुरुषार्थी हो तो व्यर्थ कर्म भी न हो। अलबेले हो तो बात ही छोड़ो, फिर तो आराम से सो जाओ, त्रेता में आ जाना। लेकिन अगर पुरुषार्थ है तो उसी समय दिल में आता है, दिल खाता है कि यह नहीं करना चाहिए फिर भी करते हैं तो बापदादा तो कहेंगे कि ऐसे बच्चों की भी कमाल है। न चाहते भी करते रहते हैं, दिल खाता रहता है और सुनते भी रहते, करते भी रहते, तो बहुत पावरफुल आत्मायें हैं! इसलिए व्यर्थ के ऊपर भी चेकिंग अटेन्शन से करो। अलबेले रीति से चेकिंग नहीं, हाँ कोई बात नहीं, यह तो होता ही है, यह तो चलता ही है, अभी सम्पूर्ण कहाँ हुए हैं, हो जायेंगे ..... यह अलबेलापन नहीं। करना है और तीव्रगति से करना है, इसको कहते हैं होली मनाना।

बापदादा को बच्चों के भिन्न-भिन्न खेल देख हँसी भी आती है, रहम भी आता है और बापदादा उस समय टच करता है, यह भी अनुभव करते हैं। नहीं करना चाहिए, श्रीमत नहीं है, यह बाबा समान बनना नहीं है, टच भी होता है लेकिन अलबेलापन सुला देता है। इसलिए अभी स्व के प्रति ज्यादा खजाने खर्च नहीं करो। जमा भले करो लेकिन खर्च नहीं करो। सेवा भले करो, व्यर्थ खर्च नहीं करो। बहुत जमा करना है ना! डबल फारेनर्स वैसे जमा करने के आदती नहीं हैं, संस्कार नहीं हैं। मिला और खर्च किया, खाओ पिओ मौज करो लेकिन इस कमाई में ऐसे नहीं करना, इसमें जमा सबसे ज्यादा करो।

अव्यक्त रूप से ब्रह्मा बाप भी विशेष डबल विदेशियों को दिल से बहुत प्यार करते हैं। देख-देख खुश होते हैं। तो ब्रह्मा बाप के विशेष स्नेह का रिटर्न करते रहो। रिटर्न करने का साधन है अपने को टर्न करना। डबल विदेशियों को चांस मिला है ना! खास टर्न मिला है। भारतवासियों को ऐसा टर्न नहीं मिला, डबल विदेशियों को टर्न मिला है तो विशेष हो ना! तो रिटर्न भी विशेष करना पड़े। भारतवासी खुश होते हैं। ईर्ष्या नहीं करते हैं, आप लोगों को देखकर खुश होते हैं। देखो मधुबन वालों ने कितना त्याग किया है, मधुबन में बाप मिल रहे हैं और मधुबन वासी नीचे (मेडीटेशन हाल में) बैठे हैं। तो आपको चांस दिया है ना। प्यार है ना! मधुबन वालों का भी बापदादा के पास जमा है। अभी देखो ऊपर-नीचे का हो गया तो जो ऊपर रहते हैं वह भी मिस करते हैं और ऊपर होता है तो नीचे वाले मिस करते हैं और आप दोनों जगह अटेन्ड करते हो। (डबल विदेशी हैं इसलिए डबल मिलता है) यह विदेशी हैं ही नहीं, हैं ही मधुबन निवासी। वह तो सेवास्थान है। जैसे भारत वाले सेवास्थान पर गये हैं लेकिन कहते क्या हैं? हम मधुबन निवासी हैं। तो विदेश सेवा स्थान है बाकी हैं मधुबन निवासी। पसन्द है ना? ठीक है, ऐसे ही रहना। वहाँ विदेश में जाकर विदेशी नहीं हो जाना। भारतवासी रहना, मधुबन वासी। अभी काफी बदल गये हैं। पहले बहुत क्वेश्चन करते थे - विदेश का कल्चर अलग है, भारत का कल्चर और है। अभी यह क्वेश्चन नहीं करते। काफी परिवर्तन भी आया है। पहले जल्दी कन्फ्यूज़ हो जाते थे, अभी अचल हुए हैं। बापदादा भी बच्चों की प्रोग्रेस देख खुश होते हैं। पहले न्यारे-न्यारे लगते थे, अभी बहुत प्यारे बन गये हैं। सभी देश वाले भी सुन रहे हैं, वह भी हँस रहे हैं कि हमारे में परिवर्तन आया है। जो भी सुन रहे हैं, बापदादा सभी देश वालों को हर एक बच्चे को नाम सहित विशेष होली की मुबारक, साथ में मिलन की मुबारक दे रहे हैं। अभी नाम बोलेंगे तो रात बीत जायेगी इसलिए नाम नहीं बोलते हैं। अच्छा है, जर्मनी वालों को मुबारक है जो इन्वेन्शन अच्छी निकाली है। जर्मन ने बापदादा की एक आशा तो पूरी की है। अभी सब आशायें पूरी नहीं की है लेकिन एक आशा पूरी की है। जर्मनी वाले हाथ उठाओ। मुबारक हो। अभी जर्मनी पुरुषार्थ में भी नम्बरवन

इनाम लो। जर्मन वाले इनाम लेंगे? बोलो हाँ या ना? कमाल करके दिखाओ। जर्मनी में बापदादा की बहुत उम्मीदें हैं। हलचल में अचल होके दिखाओ। हलचल भी जर्मनी में ज्यादा है और अचल भी जर्मनी वाले बनो। होना ही है। अच्छा।

चारों ओर की होलीएस्ट आत्मायें, सदा हाइएस्ट स्थिति में स्थित रहने वाली हाइएस्ट आत्मायें, सदा सर्व खजानों से सम्पन्न रिचेस्ट आत्मायें, सदा हर कदम में पदम जमा करने वाली, बाप समान बनने वाली श्रेष्ठ आत्मायें, सदा रहमदिल, क्षमा के सागर बच्चे मास्टर क्षमा करने वाली आत्मायें, विश्व के दु:खी आत्माओं को सकाश द्वारा सुख-शान्ति की अंचली देने वाली आत्मायें, हर समय अपने जमा के खाते में भरपूर रहने वाले अति तीव्र पुरुषार्थी आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

दादी जी से:- (दादी जी की माइनर सर्जरी (एक छोटा आपरेशन) ग्लोबल हॉस्पिटल में १५ तारीख को होना है)

अशरीरी बनने का अभ्यास तो पक्का है ही, इसलिए शरीर का हिसाब सहज चुक्तू हो जाता है। शक्तियां बहुत जमा हैं। बापदादा मस्तक में चमकते हुए शब्दों में देख रहे हैं - बेफिक्र बादशाह। फिक्र बाप को है, आप बेफिक्र बादशाह हैं। आदि से साथी रहे हैं तो साथी का जो भी कुछ होता है वह बाप ले लेता है। सभी की दुआयें आपके साथ हैं। दुआओं का खाता कितना है? बहुत जमा है ना? जितनों को दुआयें सारे दिन में देते हैं तो बहुत गुणा होकर मिलती हैं। इसलिए देने वाले को देना नहीं है, जमा होना है। आपका स्टॉक तो सब जमा है ही। एक्जैम्पुल हो इसलिए एक्जाम में भी एक्स्ट्रा मार्क्स मिलने के अधिकारी हो। यह है बाप और परिवार का स्नेह। आपके हर कदम में दुआयें बिखरी हुई हैं।

सभी एक्जैम्पुल देखकर खुश होते हो ना? खुश होते हो या सोचते हो दादियां ही मिलती हैं, हम तो मिलते नहीं। दादियों को देखकर खुश होते हो? खुश होते हैं, लेकिन खुद भी मिलने चाहते हैं। दो लड्डू खाने चाहते हैं एक लड्डू नहीं। बहुत अच्छा। डबल फारेनर्स ने अपना चांस अच्छा ले लिया है, होशियार

हैं। आपकी दादी (जानकी दादी) बहुत होशियार है।

फिर भी बहुत लक्की हो, पीछे आने वालों को तो इतना भी नहीं मिलेगा। अभी देखेंगे डबल फारेनर्स क्या कमाल करते हैं। इस वर्ष में ही करना है ना? कि 99 में करना है। (6 मास में) इसलिए नवम्बर में पहला चांस फारेनर्स को है। अच्छा - सभी ठीक हैं। अच्छी सेवा कर रहे हैं। ओमशान्ति।

30-3-98

''सर्व प्राप्तियों की स्मृति इमर्ज कर अचल स्थिति का अनुभव करो और जीवन मुक्त बनो''

आज भाग्य विधाता बाप अपने विश्व में सर्व श्रेष्ठ भाग्यवान बच्चों को देख रहे हैं। हर बच्चे के भाग्य की महिमा स्वयं भगवान गा रहे हैं। बाप की महिमा तो आत्मायें गाती हैं लेकिन आप बच्चों की महिमा स्वयं बाप करते हैं। ऐसे कभी स्वप्न में भी सोचा कि हमारा इतना श्रेष्ठ भाग्य बना हुआ है लेकिन बना हुआ था, बन गया। दुनिया के लोग कहते हैं भगवान ने हमको रचा लेकिन न भगवान का पता है, न रचना का पता है। आप हर एक भाग्यवान बच्चा अनुभव और फ़खुर से कहते हो कि हम शिव वंशी ब्रह्माकुमार ब्रह्माकुमारियां हैं। हमको मालूम है कि हमें बापदादा ने कैसे रचा! चाहे छोटा बच्चा है, चाहे बुजुर्ग पाण्डव है, शक्तियां हैं किसी से भी पूछेंगे आपका बाप कौन है, तो क्या कहेंगे ? फ़लक से कहेंगे ना कि हमको शिव बाप ने ब्रह्मा बाप द्वारा रचा इसलिए हम भगवान के बच्चे हैं। भगवान से डायरेक्ट मिलते हैं, न सिर्फ परम आत्मा वा भगवान हमारा बाप है लेकिन वह बाप भी है, शिक्षक भी है और सतगुरू भी है। सबको यह नशा है ? (ताली बजाई) एक हाथ की ताली बजाना - अभी यह भी एक्सरसाइज़ बुजुर्गो को सिखानी पड़ेगी। बच्चों को खुश देख बापदादा भी खुशी में झूलते हैं और सदा कहते - वाह मेरे हर एक श्रेष्ठ भाग्यवान विशेष आत्मायें.....। बाप के रूप में परमात्म पालना का अनुभव कर रहे हो। यह परमात्म पालना सारे कल्प में सिर्फ इस ब्राह्मण जन्म में आप बच्चों को प्राप्त होती है, जिस परमात्म पालना में आत्मा को सर्व प्राप्ति स्वरूप का अनुभव होता है। परमात्म प्यार सर्व संबंधों का अनुभव कराता है। परमात्म प्यार अपने देह भान को भी भुला देता, साथ-साथ अनेक स्वार्थ के प्यार को भी भुला देता है। ऐसे परमात्म प्यार, परमात्म पालना के अन्दर पलने वाली भाग्यवान आत्मायें हो। कितना आप आत्माओं का भाग्य है जो स्वयं बाप अपने वतन को छोड़ आप गॉडली स्टूडेन्टस को पढ़ाने आते

हैं। ऐसा कोई टीचर देखा जो रोज़ सवेरे-सवेरे दूरदेश से पढ़ाने के लिए आवे? ऐसा टीचर कभी देखा? लेकिन आप बच्चों के लिए रोज़ बाप शिक्षक बन आपके पास पढ़ाने आते हैं और कितना सहज पढ़ाते हैं। दो शब्दों की पढ़ाई है - आप और बाप, इन्हीं दो शब्दों में चक्कर कहो, ड्रामा कहो, कल्प वृक्ष कहो सारी नॉलेज समाई हुई है। और पढ़ाई में तो कितना दिमाग पर बोझ पड़ता है और बाप की पढ़ाई से दिमाग हल्का बन जाता है। हल्के की निशानी है ऊंचा उड़ना। हल्की चीज़ स्वत: ही ऊंची होती है। तो इस पढ़ाई से मन-बुद्धि उड़ती कला का अनुभव करती है। तो दिमाग हल्का हुआ ना! तीनों लोकों की नॉलेज मिल जाती है। तो ऐसी पढ़ाई सारे कल्प में कोई ने पढ़ी है। कोई पढ़ाने वाला ऐसा मिला। तो भाग्य है ना! फिर सतगुरू द्वारा श्रीमत ऐसी मिलती है जो सदा के लिए क्या करूं, कैसे चलूं, ऐसे करूं या नहीं करूं, क्या होगा..... यह सब क्वेश्चन्स समाप्त हो जाते हैं। क्या करूं, कैसे करूं, ऐसे करूं या वैसे करूं... इन सब क्वेश्चन्स का एक शब्द में जवाब है - फालो फादर। साकार कर्म में ब्रह्मा बाप को फालो करो, निराकारी स्थिति में अशरीरी बनने में शिव बाप को फालो करो। दोनों बाप और दादा को फालो करना अर्थात् क्वेश्चन मार्क समाप्त होना वा श्रीमत पर चलना। यह मुश्किल है? पूछने की आवश्यकता पड़ती है क्या? कापी करना है, अपना दिमाग नहीं चलाना है। बाप समान बनना अर्थात् फालो फादर करना। मुश्किल है या सहज है? सहज है ना? ३० साल वाले हाथ उठाओ, अच्छा ३० साल में मुश्किल लगा या सहज है? अभी देखो ३० साल वालों को भी सहज लगा तो आप जो पीछे-पीछे आये उन्हों के लिए मुश्किल है या सहज है? सहज है ना? (गर्मी के कारण सभी के हाथों में रंग-बिरंगी पंखे हैं जो हिला रहे हैं) अच्छा है, पंखों की रिमझिम भी अच्छी लग रही है। सीन अच्छी है। नवीनता होनी चाहिए ना। तो इस ग्रुप की यह भी नवीनता है, यह भी टी.वी. में आ गया। अच्छा है सभी भाग-भाग कर पहुंच गये हैं, बापदादा भी स्नेह की मुबारक देते हैं। देखो, और जो भी हद के गुरू होते हैं कितने वरदान देते हैं, एक या दस, ज्यादा नहीं देते हैं। लेकिन आपको सतगुरु द्वारा रोज़ वरदान मिलता है। ऐसा गुरू कब देखा? नहीं देखा ना! आप लोगों ने ही देखा

लेकिन कल्प-कल्प देखा। तो सदा अपने भाग्य की प्राप्तियों को सामने रखो। सिर्फ बुद्धि में मर्ज नहीं रखो, इमर्ज करो। मर्ज रखने के संस्कार को बदलकर इमर्ज करो। अपनी प्राप्तियों की लिस्ट सदा बुद्धि में इमर्ज रखो। जब प्राप्तियों की लिस्ट इमर्ज होगी तो किसी भी प्रकार का विघ्न वार नहीं करेगा। वह मर्ज हो जायेगा और प्राप्तियां इमर्ज रूप में रहेंगी।

बापदादा जब सुनते हैं कि आज किसी भी कारण से कोई-कोई बच्चे मेहनत करते हैं, युद्ध करते हैं, योग लगाने चाहते लेकिन लगता नहीं है, सोल कान्सेस के बदले बॉडी कान्सेस में आ जाते हैं तो बापदादा को अच्छा नहीं लगता है। कारण क्या? अपने भाग्य की प्राप्तियां इमर्ज नहीं रहती, मर्ज रहती हैं। फिर जब कोई याद दिलाता है तो सोचने लगते हैं होना तो ऐसा चाहिए.....! इसलिए बहुत सहज पुरुषार्थ है - प्राप्तियों को इमर्ज रखो। जब से ब्राह्मण बनें तब से अपने भाग्य को स्मृति में रखो। हलचल में नहीं आओ, अचल बनो क्योंकि यहाँ आबू में यादगार क्या है? अचलघर है या हलचल घर है? अचलघर है ना? यह किसका यादगार है? आपका यादगार है ना? तो जब भी कोई सूक्ष्म पुरुषार्थ का मार्ग मुश्किल लगे, बुद्धि ज्यादा हलचल में हो, तो अपने यादगार को स्मृति में लाओ। कई बार बच्चे ज्ञान की प्वाइंट बोलते भी हैं कि मैं आत्मा हूँ, ड्रामा है, यह तो विघ्न है, यह तो साइडसीन है, बोलते भी रहते लेकिन हिलते भी रहते। हिलते-हिलते बोलते रहते। जब ऐसी बुद्धि बन जाए जो अचल नहीं हो सके तो मधुबन का अचलघर याद रखो। यह तो स्थूल चीज़ है ना! सूक्ष्म तो नहीं है। आंखों से देखने की चीज़ है, मेरा यादगार अचलघर है, हलचल घर नहीं है क्योंकि बापदादा इस वर्ष को सर्व बच्चों के प्रति मुक्ति वर्ष मनाना चाहते हैं। ऐसा नहीं हो हाथ उठवायें तो कोई का उठे, कोई का नहीं उठे, नहीं। सभी खुशी-खुशी से हाथ की ताली बजावे, (सभी बजाने लगे) चलो अभी बजा दी तो ठीक है, लेकिन ऐसे ही बापदादा इस वर्ष के समाप्ति में इतनी ज़ोर से ताली बजाते देखे। अभी तो बजाई अच्छा है लेकिन तब भी बजाना। बजायेंगे? देखो हाथ की ताली बजाके तो खुश कर दिया लेकिन बापदादा नये वर्ष में जो अपना १८ जनवरी विशेष ब्रह्मा बाप के शरीर से मुक्त होने का दिन है, तो १८ जनवरी

में बापदादा फिर हाथ उठवायेगा कि मुक्ति वर्ष मनाया या सिर्फ सोचा ? मनाना है, मनाना है - सोचते तो नहीं रह गये, स्वरूप में लाया वा सोचते-सोचते लास्ट में भी सोचते रहेंगे ! यह रिजल्ट बापदादा देखने चाहते हैं। दिखायेंगे ? अच्छा। याद रहेगा ना ! प्राप्तियों को सामने रखो। बाप की याद के साथ, बाप ने जो दिया वह भी इमर्ज करो - क्या बनाया और क्या मिला !

बापदादा इस वर्ष के बाद हर बच्चे को जीवन-मुक्त स्थिति में देखेंगे। भविष्य में जीवनमुक्त होंगे लेकिन संस्कार जीवनमुक्त के अभी से ही इमर्ज करने हैं। और निरन्तर कर्मयोगी, निरन्तर सहज योगी, निरन्तर मुक्त आत्मा के संस्कार अभी से अनुभव में लाओ, क्यों ? बापदादा ने पहले भी इशारा दिया है कि समय का परिवर्तन आप विश्व परिवर्तक आत्माओं के लिए इन्तजार कर रहा है। प्रकृति आप प्रकृतिपति आत्माओं का विजय का हार लेके आवाह्न कर रही है। समय विजय का घण्टा बजाने के लिए आप भविष्य राज्य अधिकारी आत्माओं को देख रहे हैं कि कब घण्टा बजायें, भक्त आत्मायें वह दिन सदा याद कर रही हैं कि कब हमारे पूज्य देव आत्मायें हमारे ऊपर प्रसन्न हो हमें मुक्ति का वरदान देंगी ! दु:खी आत्मायें पुकार रही हैं कि कब दु:ख हर्ता सुख कर्ता आत्मायें प्रत्यक्ष होंगी ! इसलिए यह सब आपके लिए इन्तजार वा आवाह्न कर रहे हैं। इसलिए हे रहमदिल, विश्व कल्याणकारी आत्मायें अभी इन्हों के इन्तजार को समाप्त करो। आपके लिए सब रुके हैं। आप सब मुक्त हो जाओ तो सर्व आत्मायें, प्रकृति, भगत मुक्त हो जाएं। तो मुक्त बनो, मुक्ति का दान देने वाले मास्टर दाता बनो। अभी विश्व परिवर्तन की जिम्मेवारी के ताजधारी आत्मायें बनो। जिम्मेवार हो ना ! बाप के साथ मददगार हो। क्या आपको रहम नहीं आता, दिल में दु:ख के विलाप महसूस नहीं होते। हे विश्व परिवर्तक आत्मायें अभी अपने जिम्मेवारी की ताजपोशी मनाओ। अभी फंक्शन तो बहुत किये, लेकिन फंक्शन की रिजल्ट क्या ? बस सिर्फ गोल्डन चुन्नी और ताज पहन लिया, मनाया .... इसमें बापदादा भी खुश है लेकिन चुन्नी पहनना, माला पहनना, चिंदी लगाना, पाण्डवों ने पगड़ी भी ताज मुआफ़िक पहनी, तो यह मनाना अर्थात् जिम्मेवारी सम्भालना। बच्चे खुश हुए, बाप उससे भी ज्यादा खुश हुए लेकिन भविष्य क्या ! दुपट्टा अलमारी

में, चिंदी अलमारी में सम्भल गई, बस यही मनाना है। नहीं। यह दुपट्टा गोल्डन स्थिति की याद निशानी है। अलमारी में सिर्फ नहीं रख देना लेकिन मन में स्मृति में रखना। मनाना अर्थात् बाप के कार्य में जिम्मेवार बनना। पसन्द है ना! या चुन्नी पहन ली बहुत अच्छा हुआ? अच्छा हुआ भी। बापदादा भी समझते हैं बहुत अच्छा हुआ। लेकिन अविनाशी सहयोगी बनना।

इस वर्ष के लिए जो बापदादा ने इशारा दिया इसके लास्ट में १८ जनवरी में, मुक्ति वर्ष का उत्सव मनायेंगे। ताली बजाने वाले समझते हैं हम बनेंगे? फिर यह नहीं कहना कि बाबा बनने तो चाहते थे लेकिन क्या करें, यह हो गया, वह हो गया। ऐसी बातों से भी मुक्ति। बनना ही है। क्या करें, नहीं। इस भाषा से भी मुक्ति। होना ही है, बनना ही है, कुछ भी हो जाए। बापदादा ने पहले भी कहा १०० हिमालय जितने बड़े ते बड़े विघ्न भी आ जाएं तो भी हटेंगे नहीं, हार नहीं खायेंगे, ताजपोशी मुक्ति वर्ष अवश्य मनायेंगे। बापदादा रोज़ चार्ट देखेगा। ऐसे नहीं यहाँ से जाओ तो ट्रेन में ही कहो पता नहीं क्या हो गया, घर में गये तो बगुले और हंस की लड़ाई लग गई, ऐसे नहीं कहना यह हो गया, यह हो गया ....। यह नहीं सुनेंगे। आपके पत्र वेस्ट पेपर बॉक्स में डालेंगे, सुनेंगे नहीं। दृढ़ संकल्प करो - होना ही है। जहाँ दृढ़ता है वहाँ सफलता नहीं हो, असम्भव है। तो सभी दृढ़ संकल्प वाले हैं ना। टीचर्स हाथ उठाओ, टीचर्स बहुत हैं। सारे सेन्टर्स खाली करके आये हैं क्या?

देखो एक खुशखबरी सुनाते हैं - बापदादा ने देखा, अभी देखा है, सुना है कि सर्व मधुबन वालों ने अपने परिवर्तन का लक्ष्य बहुत अच्छा रखा है, लक्षण तो देखेंगे लेकिन लक्ष्य बहुत अच्छा रखा है, अपने में अन्तर जो आया है वह भी लिखा है लेकिन बापदादा को खुशी है अन्तर आना शुरू हुआ, आगे होता रहेगा। लेकिन सभी ने अपने दृढ़ संकल्प का उमंग-उत्साह अच्छा दिखाया है। अभी कागज में है लेकिन कागज में भी पहला कदम तो है। तो बापदादा को खुशी हुई क्यों? सारे वर्ल्ड के लिए हे अर्जुन मधुबन निवासी हैं। निमित्त मधुबन निवासी हैं, सेकण्ड नम्बर देश-विदेश की निमित्त सेवाधारी टीचर्स हैं और सर्व सहयोगी साथी सारा परिवार ब्राह्मण आत्माये हैं। तो मधुबन का नक्शा बापदादा

देखेंगे कि बिल्कुल बदला हुआ दिखाई दे। मधुबन वाले तो कम आये होंगे। कईयों ने तो लिखा ही नहीं है। आगे बैठने वालों ने कम लिखा है, बहुत बिजी रहे हैं। लेकिन जब काम मिलता है तो लिखने में भी मार्क्स जमा होती हैं। अगर नहीं लिखा तो मार्क्स एकस्ट्रा कम हो गई, नुकसान कर दिया। जो भी डायरेक्शन मिलते हैं, डायरेक्ट बाप द्वारा मिलते हैं, चाहे निमित्त आत्मायें दादियों द्वारा मिलते हैं, उसको रिगार्ड देना अति आवश्यक है। इसमें न बहाना देना, न अलबेलापन करना। आगे के लिए बापदादा बता देता है कि मार्क्स जमा नहीं हुई। इसलिए इसको महत्व देना अर्थात् महान बनना। हल्की बात नहीं करो। बच्चे बड़े चतुर हैं, कहेंगे बापदादा तो जानते ही हैं ना। जानते तो हैं लेकिन कहा क्यों? जानते हुए कहा ना! तो ऐसे छुड़ाना नहीं चाहिए, बहुत ऐसे कार्य हैं, छोटे-छोटे जिसको हाँ जी करने में एक्स्ट्रा मार्क्स जमा होती हैं। कई ऐसे स्टूडेन्टस हैं जो किसी भी पास्ट के संस्कार के वश बहुत अच्छे उमंग-उत्साह में बढ़ते हैं लेकिन कोई न कोई सुनहरी धागा, बहुत महीन धागा उनको आगे बढ़ने नहीं देता। वह समझते भी हैं कि यह महीन धागा रहा हुआ है, लेकिन.... लेकिन ही कहेंगे। लेकिन ऐसे भी पुरुषार्थी हैं जो छोटी-छोटी कामन बातों में हाँ जी करने से मार्क्स ले लेते हैं। और हो सकता है कि वह थोड़ी-थोड़ी मार्क्स इक्ट्ठी होते हुए वह आगे भी निकल सकते हैं, ऐसे भी बापदादा के पास एक्जैम्पुल के रूप में हैं इसलिए सहज तरीका है छोटी-छोटी हाँ जी करने में मार्क्स जमा करते जाओ। कट नहीं करो, जमा करो। बाकी बापदादा ने देखा मैजारिटी ने अपना उमंग-उत्साह अच्छा दिखाया है इसलिए दृढ़ संकल्प के लिए विशेष उन मधुबन निवासी बच्चों को बापदादा हाँ जी करने की मुबारक देते हैं। यादप्यार भी दे रहे हैं। लाख-लाख गुणा यादप्यार दे रहे हैं। क्यों? मधुबन है बापदादा के स्वरूप को प्रत्यक्ष करने का शीशमहल। तो एक बात की तो खुशी है, अभी कागज में आया हुआ, कर्म में लाना ही है। ठीक है ना! अच्छा। मुबारक हो।

३० वर्ष वाले तो बहुत मौज में हैं ना! (१००० आये हैं) देखो बापदादा कहेंगे उठ जाओ, तो मातायें इसके बजाए आगे आ जायेंगी, इसलिए उठाते नहीं हैं। सेरीमनी वाले हाथ खड़ा करो। बापदादा को इस ग्रुप के लिए बहुत-बहुत-

बहुत दिल से सम्मान है क्यों ? यही पाण्डव हैं, यही मातायें हैं जिन्होंने सेवा की स्थापना में, सेन्टर्स स्थापन करने में जब बेगरी लाइफ थी, बेगरी लाइफ में सेन्टर खुले हैं, ऐसे आईवेल के समय इस सेना ने अपने तन-मन-धन से निमित्त बन के सेवास्थान स्थापन किये हैं। आईवेल के समय जो सहयोगी बनता है उनका आठ आना, आठ करोड़ बन जाते हैं। बापदादा को याद है - खुद बांधेली होते हुए भी एक कटोरी में आटा, एक कटोरी में चीनी, एक कटोरी में घी, ऐसे कटोरी-कटोरी करके लाती थी। तो सोचो कितने सच्ची दिल वाले रहे। अपने घर खर्चे से बापदादा के सेन्टर चलाये हैं, अपने पर्सनल जमा खाते से, अपने खर्चे से बचत करके सेन्टर स्थापन किये हैं, तो कितना भाग्य है इन्हों का! ऐसे समय पर सहयोगी आत्माओं को बापदादा भी नमस्ते कहते हैं। इन्हों के अनुभव बहुत अच्छे हैं, सारा भागवत इन्हों का है। इसलिए बापदादा खुश हैं और सभी बहुत उमंग-उत्साह से प्रयत्न कर पहुंच गये हैं, उसके लिए भी बापदादा खुश हैं। लकड़ियां लेके चली तो आई हैं। आपको दो टांगे हैं, इन्हों को तीन टांगे हैं। जब चलती हैं तो सीन तो अच्छी लगती है ना। इन्हों को चलाके देखो। कल इन्हों की थोड़ी यात्रा निकालना, क्लास से भण्डारे तक बस। देखना कैसे चलती हैं, बहुत अच्छी सीन लगेगी। कोई भी गिरना नहीं। अगर गिरने वाले हो तो बैठ जाना, गिरना नहीं। देखो बापदादा तो चाहते हैं इन्हों को डांस करायें लेकिन आप सब डिस्टर्व हो जायेंगे, इसलिए बैठे ही बैठे खुशी में नाचो, हाथ पांव से नहीं। अच्छा है। आप लोगों को भी अच्छा लगा ना। बुजुर्गों की दुआयें बहुत अच्छी होती हैं। पाण्डव भी अच्छे हैं, पाण्डवों ने भी सहयोग कम नहीं दिया है। भाग-दौड़ करने वाले तो पाण्डव ही रहे हैं। इसीलिए पाण्डवों को भी दिल से बापदादा और सर्व परिवार की तरफ से बहुत-बहुत दुआयें हैं। अच्छा।

(बाल ब्रह्मचारी युगल भी बैठे हैं) जो बाल ब्रह्मचारी हैं वह अपनी जगह पर ही उठकर खड़े हो जाओ, अच्छा यह इकट्ठे बैठे हैं। हाथ हिलाओ। देखो अब तक जो विजय का व्रत लिया है उसमें रहने का इनाम तो मिलना ही है, मिला भी है। आगे के लिए सदा स्वप्न मात्र भी, संकल्प मात्र भी पवित्रता का खण्डन नहीं हो। अखण्ड पवित्रता- यह है बाल ब्रह्मचारियों का लक्ष्य और लक्षण। अभी

तक की मुबारक है लेकिन आगे भी बापदादा यही कहेंगे कि सदा अमर भव के वरदानी रहना ही है। अमर हैं ना! खण्डित तो नहीं ना! देखो खण्डित मूर्ति का कभी पूजन नहीं होता है, तो कोई भी व्रत अगर खण्डित होता है तो वह अमर वरदानी आत्मा नहीं बन सकता है और ऐसा पूज्य जो द्वापर से कलियुग अन्त तक पूज्य बने, ऐसे इष्ट नहीं बन सकते, इसलिए सदा अमरभव। अच्छी हिम्मत रखी है, हिम्मत की मदद सदा मिलती रहेगी, अधिकारी हो लेकिन अखण्ड बाल ब्रह्मचारी। ५ वर्ष, १० वर्ष - यह नहीं, अखण्ड। जहाँ तक ब्राह्मण जीवन है, यह अमर भव के वरदानी रहें। ठीक है ना! मंजूर है ? हिम्मत है ? एक हाथ की ताली बजाओ।

(१० साल वाले २०० डबल विदेशी भाई बहिनों की भी सेरीमनी है) यह तो बहुत लकी हैं। डबल फारेनर्स ने भी नम्बर जीत लिया है। बापदादा को खुशी है कि डबल फारेनर्स पीछे नहीं रहे हैं, नम्बर सबमें अच्छा ले रहे हैं। यह दिखाता है कि जैसे अभी थोड़े समय में मेकप कर रहे हैं, ऐसे ही लास्ट में भी तीव्र पुरुषार्थ द्वारा नम्बर अच्छे ते अच्छे ले लेंगे। ऐसे निश्चय है ना! निश्चय है ? १०८ की माला में आना है ना ? अच्छा - १०८ की माला डबल फारेनर्स की होगी और इन्डिया वालों की ? आपकी तो होगी ना। बापदादा ने छुट्टी दी है जितने भी १०८ में आने चाहें, चाहे भारत वाले, चाहे विदेश वाले दोनों को छुट्टी है, बापदादा माला बढ़ा लेंगे, लेकिन आपको अवश्य डालेंगे, रहने नहीं देंगे। समझा। ट्रांसलेशन हो रही है। अच्छा है। ट्रांसलेशन करने वाले को भी मुबारक।

बापदादा तो इन्हों को **(सामने बैठे हुए मधुबन वालों को)** भी मुबारक देते हैं, जो आगे आगे काम के लिए बैठे हैं, कैबिन में भी बैठे हैं, तपस्या अच्छी करते हैं। एक बात में तो मार्क्स ले लेंगे, दिल से सेवा में तो मार्क्स ले लेंगे। यह भी अच्छा है, इस खाते में आपको एक्स्ट्रा मार्क्स मिलेंगी। दिल से करना। तंग होके नहीं करना, अरे क्या करें - यह तो तंग करके रखा है, ऐसे नहीं। कितना भी तंग करें लेकिन आप हर्षित रहना। प्यार से कहो आओ बहिनें, आओ भाई, क्या चाहिए.... ठीक है ना! या नहीं-नहीं, अभी नहीं। भले चीज़ नहीं दो, चीज़ देने की नहीं है, नहीं दे सकते हैं कोई हर्जा नहीं, लेकिन मीठे बोल तो दे सकते हो

ना। मीठे बोल भी आधी चीज़ मिलने का अनुभव करा देते हैं। अभी नहीं, अभी नहीं जाओ, जाओ .... ऐसे नहीं। हाँ जी। करेंगे, देखेंगे, देंगे। दिल तो ले लो, चीज़ तो भले नहीं दो और सन्तुष्ट करने का लक्ष्य होगा तो चीज़ भी आ जाती है। बापदादा ने देखा है अगर कोई भी स्टॉक वाले की दिल है कि मुझे यह करना ही है, पता नहीं कहाँ से चीजें ले आते हैं, कहाँ से स्टॉक भर जाता है। सिर्फ दिल हो। मधुबन वाले हैं बहुत होशियार। चीज़ लाने में भी होशियार हैं। होशियार तो हैं, तभी तो ड्युटी मिली है ना। अगर ड्रामा ने निमित्त बनाया है तो कोई न कोई विशेषता तो है जिस विशेषता ने मधुबन में निमित्त बनाया है। सिर्फ उस विशेषता को समय प्रति समय थोड़ा सा शान्त भाव, प्रेम भाव से निमित्त बनो। बाकी अथक तो हैं। मधुबन जैसे अथक और कहाँ भी नहीं हैं। अथक भव का वरदान तो मधुबन को है। अभी इस वर्ष मधुबन क्या करेगा?

अभी मुक्त वर्ष में नम्बरवन मधुबन निवासी। ठीक है? हो सकता है या मुश्किल है? (हाँ जी) फिर तो बापदादा मधुबन वालों को भी गोल्डन बैज देगा। मधुबन वालों को बैज देना है और सभी को दिया है मधुबन वालों को मुक्त वर्ष की प्राइज़ देंगे। अच्छा बैज देंगे आपको। अच्छा।

(राजस्थान ने सेवा सम्भाली है)– राजस्थान ने इतनी भीड़ को सम्भाल लिया ना। देखो बापदादा को कहना नहीं चाहिए, लेकिन इशारा दे रहे हैं सभी इतने आये, बहुत-बहुत मुबारक हो, भले आये। सिर्फ एक बात बापदादा कहे, सुनने के लिए तैयार हो? खास टीचर्स सुनने के लिए तैयार हैं? अच्छा। भले आये, पदमगुणा वेलकम, परन्तु... इतला देना यह टीचर्स का फ़र्ज है। अचानक आ गये, बापदादा को तो खुशी है, बापदादा तो वतन में रहते हैं, लेकिन आप लोग तो साकार में रहते हो ना, तो देखो आप लोगों को ही धूप में टेन्ट में सोना पड़ा, चाहे बच्चों को खुशी है, कोई बुरा नहीं मानते हैं लेकिन टीचर्स का फ़र्ज है संख्या पहले से सुनाना। इतनी तकलीफ जो थोड़ी बहुत हुई है, वह नहीं होती। जो हुआ वह बहुत अच्छा हुआ, यह शान्तिवन का हाल तो भर गया ना। यह तो अच्छा हुआ। सिर्फ इतला करने से आप लोगों का बहुत-बहुत अच्छा प्रबन्ध होता। आगे के लिए आप आयेंगे, आपका स्वागत है, बापदादा ने यह भी सीन

देखी कि कितने लोग धूप में स्थान मिलने के पहले बैठे हैं, बापदादा को अच्छा नहीं लगता। पहले से पता होने से आपकी रिजर्वेशन बुक हो जाती, फिर आपको ऐसे बैठना नहीं पड़ता। इसलिए जो थोड़ी बहुत तकलीफ हुई, उसका कारण इतला नहीं हुआ। इसलिए आगे आराम से आना, आओ भले आओ, लेकिन आराम से आना। सुना टीचर्स ने। आगे से ऐसे नहीं करना। पंखे तो ठीक मिले हैं ना। पीछे वाले पंखे हिलाओ। (१५ हजार पंखे सबके हाथों में हैं) बाहर बैठने वालों को पहले से ही बापदादा नम्बरवन यादप्यार दे रहे हैं और मधुबन वाले जो त्याग कर खास सिक्युरिटी पर सेवा प्रति बैठे हैं, उन्हों को विशेष लाख गुणा मुबारक हो। सम्भाल रहे हैं ना! और आज जो देश विदेश में दूर बैठे समीप का अनुभव कर रहे हैं, उन सभी देश वालों को बापदादा खास-खास-खास यादप्यार दे रहे हैं। अच्छा साधन है। अच्छा।

राजस्थान, कानपुर किदवई नगर वाले, इन्दौर वाले जिन्होंने भी मदद की है उठो। अच्छा है देखो डबल पुण्य मिल गया। वर्तमान सेवा की दुआयें मिली और भविष्य सेवा की प्रालब्ध जमा हुई। तो राजस्थान या जो भी मददगार बने, उन सभी को बापदादा दिल से सदा सेवा में तख्त पर रह दुआयें लेते रहो, दुआयें देते रहो ऐसे अमर रहो, अच्छा पार्ट बजाया, उसके लिए सभी खुशी से आपको धन्यवाद दे रहे हैं।

डबल विदेशियों की सीजन अच्छी रही ? सभी डबल विदेशी इस सीजन में विशेष जमा का खाता बढ़ा के जा रहे हैं! ऐसे है ? जमा किया है ? बहुत अच्छा। अच्छा।

अभी अगर आप सभी को अचानक डायरेक्शन मिले कि अभी-अभी अशरीरी बन जाओ तो बन सकते हो कि हलचल होगी ? क्यों ? लास्ट समय का यही अभ्यास पास विद आनर बनायेगा। तो अभी बापदादा भी कहते हैं एक सेकण्ड में सब बातों को किनारे कर अशरीरी भव। (ड्रिल) अच्छा।

चारों ओर के अति श्रेष्ठ भाग्यवान, परमात्म पालना के अधिकारी आत्मायें, परमात्म पढ़ाई के अधिकारी, परमात्मा सतगुरू के वरदानों के अधिकारी, सदा दृढ़ता द्वारा सफलता के अधिकारी, सदा अखण्ड योगी, अचल योगी, सदा विश्व

परिवर्तन की जिम्मेवारी के ताजधारी, सदा सर्व प्राप्तियों को इमर्ज रूप में अनुभव करने वाले ऐसे विशेष आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

(आज बापदादा को दादी जी ने पूरे डायमण्ड हाल में चक्र लगवाया, बापदादा ने सभी भाई बहिनों को दृष्टि दी - सभा में करीब २०-२१ हजार भाई बहिनें हाल के अन्दर-बाहर उपस्थित थे)

दादियों से:- सीजन की समाप्ति निर्विघ्न हुई? बापदादा यही वर्तमान समय देखने चाहते हैं कि जो विशेष निमित्त आत्मायें हैं, जैसे मुख का आवाज साइन्स के साधनों से दूर बैठे पहुंचता है, ऐसे मन का आवाज संकल्प यह भी ऐसे ही पहुंचे, जैसे यह साइन्स द्वारा मुख का आवाज पहुंचता है। जैसे शुरू में साक्षात्कार होते थे, इशारे मिलते थे, और उसी इशारे से कईयों को जागृति भी आई, ऐसे अभी जो आदि में हुआ वह अन्त में, पहले तो स्थापना थी तो एक ब्रह्मा बाप द्वारा साक्षात्कार हुआ, लेकिन अभी प्रैक्टिकल में शक्तियों का पार्ट है, ब्रह्मा बाप शिव बाप गुप्त है, बैकबोन है लेकिन स्टेज पर शक्तियों का पार्ट है, तो शक्तियां अनन्य भी बहुत हैं। वह एक ब्रह्मा बाप ने किया, अभी ऐसी मनोबल की शक्ति प्रत्यक्ष हो जैसे मुख का आवाज क्लीयर पहुंचता है ना। ऐसे मन का आवाज धीरे-धीरे पहुंचता जाए, बाप आ गया। सिर्फ यह आवाज भी पहुंच गया तो ढूढ़ने तो लगेंगे। फिर आपेही पहुंचेंगे। लेकिन यह मनोबल की सेवा अभी होनी चाहिए। यह सारे विश्व तक आवाज कुछ साइन्स और कुछ साइलेन्स की शक्ति द्वारा ही पहुंचेगा, जिसको मन का आवाज पहुंचेगा वह समझो ज्यादा समीप आयेंगे और जिसको मुख का आवाज पहुंचेगा, उनमें से नम्बरवार होंगे। इसलिए अभी यह साइलेन्स की विशेषता क्या है और साइलेन्स के बल से क्या-क्या कर सकते हैं, हो सकता है इस विषय पर ज्यादा अटेन्शन क्योंकि समय कम है और सेवा विश्व की हर आत्मा को सन्देश पहुंचाना है। इसलिए बापदादा ने कहा कि कुछ सुनायेंगे क्योंकि निमित्त तो आप हो वायुमण्डल में लहर फैलाने के निमित्त तो आप ही हैं। हैं ना? तो ऐसी लहर फैलाओ। सभी सहयोगी बन जाओ। अभी मन का आवाज मुख के आवाज से भी ज्यादा काम कर सकता है। तो ऐसे ग्रुप बनाओ जो इस कार्य के रुचि वाले हों

और इसकी रिहर्सल करते रहें। जैसे पहले शुरू में याद का अभ्यास किया, सेवा के नये-नये प्लैन्स बनाये तो उससे इतनी वृद्धि हुई है ना। अभी जैसे पहली रचना हुई, मुख द्वारा डायरेक्ट, फिर हुई मन्सा संकल्प द्वारा ब्रह्मा द्वारा, अभी है शक्तियों द्वारा, जो कहते हैं कि शक्तियों ने वाण चलाये। तो यह वाण जो संकल्प द्वारा स्पष्ट आवाज पहुंच जाए, कोई बुला रहा है, कोई कुछ कह रहा है। जैसे कोई-कोई को स्वप्न पीछे पड़ जाता है, जब तक वह काम पूरा नहीं करता तो बार-बार स्वप्न उसको जागृत करता रहता। कई रिधि सिधि वाले भी कुछ विधि से करते हैं। लेकिन योग की विधि द्वारा यह आवाज फैले। ऐसे सेवा के प्लैन बनाओ। जैसे अभी यह उत्सवों का वर्ष मनाया ना। अभी वह तो हो गया, अभी फिर ऐसी कोई लहर फैलाओ जो विहंग मार्ग की सेवा हो। मुख की विहंग मार्ग की सेवायें तो बहुत की। उसकी रिजल्ट तो है ही। अभी फिर कोई नवीनता। समझा। देखेंगे कौन-कौन इसमें नम्बर लेता है।

अच्छा। सभी ठीक हैं? सभी मिलकर सेवा कर रहे हैं। तो सेवा का पहाड़ भी पार हो जाता है। अच्छा। ओम् शान्ति।

सुवाक्य (३ १ दिसम्बर १ ९ ९ ६ से १ ९ ९ ८ तक की मुरलियों से)

१- अच्छे बनने के वायब्रेशन निगेटिव सीन को भी पॉजिटिव में बदल देते हैं।

२- जो भी शक्तियां हैं उन्हें समय पर यूज़ करो तो बहुत अच्छे-अच्छे अनुभव होंगे।

३- हर गुण, हर शक्ति का अनुभव करना अर्थात् अनुभवी मूर्त बनना।

४- ज्ञान का अर्थ है अनुभव करना और दूसरों को अनुभवी बनाना।

५- प्रत्यक्षता का आधार अनुभव है।

६- अनुभवी आत्मायें कभी वायुमण्डल वा संग के रंग में नहीं आ सकती।

७- सूर्यवंश में जाना है तो योगी बनो, योद्धे नहीं।

८- हर समय अन्तिम घड़ी है, इस स्मृति से एवररेडी बनो।

९- हिम्मत का पहला कदम आगे बढ़ाओ तो बाप की सम्पूर्ण मदद मिलेगी।

१ ०- सोलकानसेस बनो, डेट कानसेस नहीं।

१ १- वारिस क्वालिटी तैयार करो तब प्रत्यक्षता का नगाड़ा बजेगा।

१ २- वाणी द्वारा सबको सुख और शान्ति दो तो गायन योग्य बनेंगे।

१ ३- मुस्कराना, सन्तुष्टता की निशानी है।

१ ४- उदासी को अपनी दासी बना दो, उसे चेहरे पर आने न दो।

१ ५- नई दुनिया की स्मृति से सर्व गुणों का आह्वान करो और तीव्रगति से आगे बढ़ो।

१ ६- जब बच्चों की सूरत से बाप की सीरत दिखाई देगी तब समाप्ति होगी।

१ ७- स्व पुरुषार्थ में तीव्र बनो तो आपके वायब्रेशन से दूसरों की माया सहज भाग जायेगी।

१ ८- क्वेश्चन मार्क उठाना अर्थात् व्यर्थ का खाता प्रारम्भ होना।

१ ९- नॉलेजफुल वह है जो माया को दूर से ही पहचान कर स्वयं को समर्थ बना ले।

२ ०- शिक्षा दाता के साथ रहमदिल बन सहयोगी बनो। २ १- आत्मिक भान धारण करो तो माया का भान समाप्त हो जायेगा।

२ २- देह-भान से मुक्त बनो तो दूसरे सब बन्धन स्वत: खत्म हो जायेंगे।

२ ३- बिन्दु रूप में स्थित रहो तो समस्याओं को सेकण्ड में बिन्दू लगा सकेंगे।

२ ४- फर्स्ट डिवीजन में आना है तो ब्रह्मा बाप के कदम पर कदम रखो।

२ ५- अपनी नज़रों में बाप को समा लो तो माया की नज़र से बच जायेंगे।

२ ६- जिनकी नज़रों में बाप है उन्हें माया की नज़र लग नहीं सकती।

२ ७- ऐसे खुशनुम: बनो जो मन की खुशी सूरत से स्पष्ट दिखाई दे।

२ ८- सच्ची साधना द्वारा हाय-हाय को वाह-वाह में परिवर्तन करो।

२ ९- अपनी खुशनसीबी का अनुभव चेहरे और चलन से कराओ।

३ ०- बहुरूपी बन माया के बहु रूपों को परख लो तो मास्टर मायापति बन जायेंगे।

३ १- खुशी के खजाने से सम्पन्न और खुशी की खुराक से तन्दरूस्त बनो।

३ २- सदा खुशी में रहने के लिए साक्षीपन की सीट पर स्थित रहो।
३ ३- बापदादा साथ हो तो माया का प्रभाव पड़ नहीं सकता।
३ ४- साक्षीपन के तख्त नशीन रहो तो समस्या तख्त के नीचे रह जायेगी।
३ ५- अचानक के पेपर में पास होना है तो अलबेलेपन को छोड़ अलर्ट बनो।
३ ६- सेवा को खेल समझो तो थकेंगे नहीं, सदा लाइट रहेंगे।
३ ७- लौकिक कार्य करते अलौकिकता का अनुभव करना ही सरेन्डर होना है।
३ ८- दृढ़ता ही सफलता की चाबी है।
३ ९- विघ्नों का काम है आना और आपका काम है विघ्न-विनाशक बनना।
४ ०- समय प्रमाण शक्तियों को यूज़ करना माना ज्ञान और योगी तू आत्मा बनना।
४ १- जो संकल्प करते हो उसे बीच-बीच में दृढ़ता का ठप्पा लगाओ तो विजयी बन जायेंगे।
४ २- व्यर्थ से बचना है तो मुख पर दृढ़ संकल्प का बटन लगा दो।
४ ३- मुहब्बत के झूले में बैठ जाओ तो मेहनत आपेही छूट जायेगी।
४४- माया के झूले को छोड़ अतीन्द्रिय सुख के झूले में सदा झूलते रहो।
४ ५- सेकण्ड में संकल्पों को स्टॉप करने का अभ्यास ही कर्मातीत अवस्था के समीप लायेगा।
४ ६- अचल स्थिति के आसन पर बैठने से ही राज्य का सिंहासन मिलेगा।
४७- अचल बनना है तो व्यर्थ और अशुभ को समाप्त करो।
४ ८- अज्ञान की शक्ति क्रोध है और ज्ञान की शक्ति शान्ति है।
४ ९- हर गुण वा ज्ञान की बात को अपना निजी संस्कार बनाओ।
५ ०- क्रोध ज्ञानी तू आत्मा के लिए महाशत्रु है।
५ १- क्रोध अग्नि रूप है जो खुद को भी जलाता और दूसरों को भी जला देता है।
५ २- अपने हाथ में लॉ उठाना भी क्रोध का अंश है।
५ ३- ज्ञानी तू आत्मा बच्चों में क्रोध है तो इससे बाप के नाम की ग्लानी होती है।
५ ४- बुराई की रीस को छोड़ अच्छाई की रेस करो।
५ ५- किसी की कमजोरी देखने की आंखें बन्द कर मन को अन्तर्मुखी बनाओ।
५ ६- ज्ञान रत्नों से, गुणों और शक्तियों से खेलो, मिट्टी से नहीं।
५ ७- अब सब किनारे छोड़ घर चलने की तैयारी करो।
५ ८- बड़े बाप के बच्चे हो इसलिए न तो छोटी दिल करो और न छोटी बातों में घबराओ।
५ ९- निर्माण बनो, कोमल नहीं।
६ ०- ज्ञान और योग से कमाल करो, बातों की परवाह नहीं।
६ १- श्रेष्ठ भाग्य की रेखा खींचने का कलम है श्रेष्ठ कर्म।
६ २- श्रेष्ठ भाग्य की रेखाओं को इमर्ज करो तो पुराने संस्कारों की रेखायें मर्ज हो जायेंगी।
६ ३- सर्व शक्ति व ज्ञान सम्पन्न बनना ही संगमयुग की प्रालब्ध है।
६ ४- रहमदिल बन सर्व गुणों और शक्तियों का दान देने वाले ही मास्टर दाता हैं।
६ ५- मनोबल से सेवा करो तो उसकी प्रालब्ध कई गुणा ज्यादा मिलेगी।

६६- बेहद में रहो तो हद की बातें स्वत: समाप्त हो जायेंगी।
६७- स्वप्न वा संकल्प की पवित्रता ही सबसे बड़े से बड़ी पर्सनैलिटी है।
६८- प्रसन्नचित बनो, प्रश्न-चित नहीं।
६९- चलन और चेहरे की प्रसन्नता ही रूहानी पर्सनाल्टी की निशानी है।
७०- बेहद की सेवा में बिजी रहो तो बेहद का वैराग्य स्वत: आयेगा।
७१- सकाश देने की सेवा करो तो समस्यायें सहज ही भाग जायेगी।
७२- प्रसन्न रहना और प्रसन्न करना -यह है दुआयें देना और दुआयें लेना।
७३- असमर्थ आत्माओं को समर्थी दो तो उनकी दुआयें मिलेंगी।
७४- विश्व राजन बनना है तो विश्व को सकाश देने वाले बनो।
७५- नज़र से निहाल करने की सेवा करनी है तो बापदादा को अपनी नज़रों में समा लो।
७६- ग्लानी वा डिस्ट्रबेन्श को सहन करना और समाना अर्थात् अपनी राजधानी निश्चित करना।
७७- दूसरों को सहयोग देना ही स्वयं के खाते जमा करना है।
७८- साइलेन्स की शक्ति इमर्ज करो तो सेवा की गति फास्ट हो जायेगी।
७९- सैलवेशन देने में ही लेना समाया हुआ है।
८०- दिल से सेवा करो तो दुआओं का दरवाजा खुल जायेगा।
८१- परमात्म प्यार में लवलीन रहो तो माया की आकर्षण समाप्त हो जायेगी।
८२- परमात्म प्यार के सुखदाई झूले में झूलो तो दु:ख की लहर आ नहीं सकती।
८३- कोई भी उत्सव मनाना अर्थात् याद और सेवा के उत्साह में रहना।
८४- तीसरा, ज्वालामुखी नेत्र खुला रहे तो माया शक्तिहीन बन जायेगी।
८५- परमात्म अवार्ड लेने के लिए व्यर्थ और निगेटिव को अवाइड करो।
८६- सदा उत्साह में रहना और दूसरों को उत्साह दिलाना-यही आपका आक्यूपेशन है।
८७- संकल्प रूपी पांव मजबूत हों तो काले बादलों जैसी बातें भी परिवर्तन हो जायेगी।
८८- कारण रूपी निगेटिव को समाधान रूपी पॉजिटिव बनाओ।
८९- माया से निर्भय बनो और आपसी संबंध में निर्माण बनो।
९०- असम्भव को सम्भव बनाना ही परमात्म प्यार की निशानी है।
९१- बाप की पालना का रिटर्न है - स्व को और सर्व को परिवर्तन करने में सहयोगी बनना।
९२- परेशान को अपनी शान में स्थित कर देना ही सबसे अच्छी सेवा है।
९३- बाप समान बनना है तो बिगड़ी को बनाने वाले बनो।
९४- दिल साफ है तो मुराद हांसिल हो जाती है।
९५- स्व कल्याण का श्रेष्ठ प्लैन बनाओ तब विश्व सेवा में सकाश मिलेगी।
९६- मैं - मैं करना माना माया रूपी बिल्ली का आह्वान करना।
९७- सफल करो और पदमगुणा सफलता लो।
९८- दिल सच्ची है तो भोलानाथ बाप राज़ी है।
९९- मैं और मेरापन आना अर्थात् व्यर्थ का खाता जमा होना।

१ ० ०- अब मुक्तिधाम चलना है इसलिए मुक्त बनो और बनाओ।
१ ० १- सच्ची दिल से सफल करना अर्थात् जमा का खाता बढ़ाना।
१ ० २- जो संकल्प करते हो उसे अविनाशी गवर्मेन्ट की स्टैम्प लगा दो तो अटल रहेंगे।
१ ० ३- वायदों को फाइल में नहीं रखो, फाइनल बनकर दिखाओ।
१ ० ४- समान और सम्पूर्ण बनना है तो स्नेह के सागर में समा जाओ।
१ ० ५- जहाँ मोहब्बत है वहाँ मेहनत नहीं होती।
१ ० ६- स्नेह की शक्ति समस्या रूपी पहाड़ को पानी जैसा हल्का बना देती है।
१ ० ७- परमात्म स्नेह में समाये रहो तो मेहनत से मुक्त हो जायेंगे।
१ ० ८- स्नेह की छत्रछाया के अन्दर माया आ नहीं सकती।
१ ० ९- कोई भी कार्य डबल लाइट बनकर करो तो मनोरंजन का अनुभव करेंगे।
१ १ ०- बापदादा से स्नेह है तो स्नेह में पुराने जहान को कुर्बान कर दो।
१ १ १- मास्टर विश्व शिक्षक बनो, समय को शिक्षक नहीं बनाओ।
१ १ २- सकाश देने की सेवा करने के लिए बेहद की वैराग्य वृत्ति को इमर्ज करो
१ १ ३- सर्व प्राप्ति के साधन होते भी वृत्ति उपराम रहे तब कहेंगे वैराग्य वृत्ति।
१ १ ४- समय की रफ्तार के प्रमाण पुरुषार्थ की रफ्तार तीव्र करो।
१ १ ५- सम्पूर्णता के दर्पण में सूक्ष्म लगावों को चेक करो और मुक्त बनो।
१ १ ६- नम्बरवन राजा बनना है तो चक्रवर्ती बनकर सेवा करो।
१ १ ७- ड्रामा में सब अच्छा ही होना है इस स्मृति से बेफिक्र बादशाह बनो।
१ १ ८- सेवा का चांस मिलना अर्थात् दुआओं से झोली भरना।
१ १ ९- सुख स्वरूप बनकर सुख दो तो पुरुषार्थ में दुआयें एड हो जायेंगी।
१ २ ०- दुआयें लो, दुआयें दो तो बहुत जल्दी मायाजीत बन जायेंगे।
१ २ १- सुख के खाते को जमा करने के लिए मर्यादापूर्वक दिल से सबको सुख दो।
१ २ २- मर्यादा तोड़कर किसी को सुख दिया तो वह भी दुख के खाते में जमा हो जायेगा।
१ २ ३- परमात्म प्यार ही समय की घण्टी है जो अमृतवेले उठा देती है।
१ २ ४- प्रेम के आंसू दिल की डिब्बी में मोती बन जाते हैं।
१ २ ५- सोचना स्वरूप नहीं, स्मृति स्वरूप बनो।
१ २ ६- ब्राह्मण जीवन की नेचुरल नेचर है गुण स्वरूप, शक्ति स्वरूप बनना।
१ २ ७- ब्रह्मा बाप का कदम ही ब्राह्मणों का कदम है।
१ २ ८- कुछ भी चला जाए लेकिन मुक्ति वर्ष की प्रतिज्ञा न जाये।
१ २ ९- शुभ भावना के बोल हीरे मोती समान हैं।
१ ३ ०- युक्तियुक्त बोल वह है जो मधुर और शुभ भावना सम्पन्न है।
१ ३ १- पास विद आनर बनना है तो हर खजाने का जमा खाता भरपूर हो।
१ ३ २- किसी के प्रभाव में प्रभावित होने वाले नहीं, ज्ञान का प्रभाव डालने वाले बनो।
१ ३ ३- बापदादा के राइट हैण्ड बनो, लेफ्ट हैण्ड नहीं।

१ ३ ४- ट्रस्टी वह है जिसमें सेवा की शुद्ध भावना है।
१ ३ ५- विघ्न रूप नहीं, विघ्न-विनाशक बनो।
१ ३ ६- कम्पलेन्ट के फाइल खत्म कर फाइन और रिफाइन बनो।
१ ३ ७- जो स्व परिवर्तन करता है - विजय माला उसी के गले में पड़ती है।
१ ३ ८- विघ्न रूपी सोने के महीन धागों से मुक्त बनो, मुक्ति वर्ष मनाओ।
१ ३ ९- अब सकाश द्वारा बुद्धियों को परिवर्तन करने की सेवा प्रारम्भ करो।
१ ४ ०- मन्सा-वाचा की शक्ति से विघ्न का पर्दा हटा दो तो अन्दर कल्याण का दृश्य दिखाई दे।
१ ४ १- अन्तर्मुखी वह है जो व्यर्थ संकल्पों से मन का मौन रखता है।
१ ४ २- एकान्तवासी बनने के साथ-साथ एकनामी और एकानामी वाले बनो।
१ ४ ३- अमृतवेले प्लेन बुद्धि होकर बैठो तो सेवा की नई विधियां टच होंगी।
१ ४ ४- निमित्त बनो तो सेवा की सफलता का शेयर मिल जायेगा।
१ ४ ५- सच्ची दिल से नि:स्वार्थ सेवा में आगे बढ़ना अर्थात् पुण्य का खाता जमा होना।
१ ४ ६- बाप से, सेवा से और परिवार से मुहब्बत है तो मेहनत से छूट जाते हैं।
१ ४ ७- दुआओं का खाता जमा करने का साधन है - सन्तुष्ट रहना और सन्तुष्ट करना।
१ ४ ८- आपको कोई अच्छा दे या बुरा आप सबको स्नेह दो, सहयोग दो, रहम करो।
१ ४ ९- किचड़े को समाकर रत्न देना ही मास्टर सागर बनना है।
१ ५ ०- निगेटिव सोचने का रास्ता बंद कर दो तो सफलता स्वरूप बन जायेंगे।
१ ५ १- सूरत द्वारा सेवा करने के लिए अपना मुस्कराता हुआ रमणीक और गम्भीर स्वरूप इमर्ज करो।
१ ५ २- व्यस्त मन-बुद्धि को सेकण्ड में स्टॉप कर लेना ही सर्व श्रेष्ठ अभ्यास है।
१ ५ ३- वायुमण्डल को परिवर्तन करने का साधन है -पॉजिटिव संकल्प और शक्तिशाली वृत्ति।
१ ५ ४- बिना त्याग के भाग्य नहीं मिलता।
१ ५ ५- मेरे को तेरे में परिवर्तन करना अर्थात् भाग्य का अधिकार लेना।
१ ५ ६- मेरा कहना माना छोटी बात को बड़ी बनाना।
१ ५ ७- तेरा कहना अर्थात् पहाड़ जैसी बात को रुई बना देना।
१ ५ ८- एक परमात्मा के प्यारे बनो तो विश्व के प्यारे बन जायेंगे।
१ ५ ९- अगर मेरा शब्द से प्यार है तो अनेक मेरे को एक मेरे बाबा में समा दो।
१ ६ ०- मन और बुद्धि कन्ट्रोल में हो तो अशरीरी बनना सहज हो जायेगा।
१ ६ १- हलचल में अचल रहना - यही कन्ट्रोलिंग पावर है।
१ ६ २- बीती सो बीती करना अर्थात् होली मनाना।
१ ६ ३- स्व परिवर्तन द्वारा विश्व परिवर्तन का वायब्रेशन तीव्रगति से फैलाओ।
१ ६ ४- सकाश देने के लिए अविनाशी सुख, शान्ति वा सच्चे प्यार का स्टाक जमा हो।
१ ६ ५- अपने प्रति खजानों को यूज़ करने से खाता खाली हो जाता है।
१ ६ ६- खजानों को सेवा में लगाना अर्थात् जमा का खाता बढ़ाना।

१६७- बाप के साथ रहकर कर्म करो तो डबल लाइट रहेंगे।

१६८- विकर्म करने का टाइम बीत गया, अभी व्यर्थ संकल्प, बोल भी बहुत धोखा देते हैं।

१६९- व्यर्थ सम्बन्ध-सम्पर्क भी एकाउन्ट को खाली कर देता है।

१७०- व्यर्थ की चेकिंग अटेन्शन से करो, अलबेले रूप में नहीं।

१७१- सेवा भले करो लेकिन व्यर्थ खर्च नहीं करो।